सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 113, नई दिल्ली, बुधवार 02 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 ड्रग तस्कर को भारी मात्रा में गांजे के साथ किया गिरफ्तार
06 व्हाइट कोट के पीछे: अस्पताल के बाहर एक डॉक्टर का जीवन
08 देश और सीए दोनों को चाहिए करोड़ों प्रशिक्षित अकाउंटेंट

दिल्ली के इस इलाके में 11 साल बाद पहुंची डीटीसी की बस, 35 हजार की आबादी को नसीब हुआ 'सुहाना सफर'

महरौली विधानसभा क्षेत्र के रजोकरी इलाके में 11 साल बाद बस सेवा फिर से शुरू हो गई है जिससे लगभग 35 हजार निवासियों को राहत मिली है। 2015 में डीटीसी बसों का संचालन बंद होने के बाद लोगों को काफी परेशानी हो रही थी। रजोकरी यूथ वेलफेयर सोसाइटी ने विधायक गजेंद्र सिंह यादव से इस बारे में शिकायत की जिसके बाद देवी बस सेवा का संचालन शुरू किया गया।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। महरौली विधानसभा क्षेत्र के रजोकरी इलाके की करीब 35 हजार की आबादी को 11 साल बाद सुहाना सफर नसीब हुआ है। अब स्थानीय लोगों और विद्यार्थियों को दिल्ली में अलग अलग जगह जाने के लिए ई-रिक्शा से बस पकड़ने नहीं जाना पड़ेगा। यहां रजोकरी से द्वारका और महरौली तक के देवी बस सेवा का परिचालन शुरू कर दिया गया है। इससे हजारों क्षेत्रवासियों का सफर सुगम होगा।

रजोकरी मार्ग पर वर्ष 2015 में डीटीसी बसों का संचालन बंद कर दिया गया था। उस समय डीटीसी के चालकों ने दावा किया था कि सड़क छोटी व अतिक्रमण होने की वजह से लो फ्लोर बस को मोड़ने में दिक्कत होती है। सार्वजनिक बसों का परिचालक बंद होने से क्षेत्र में रहने वाली हजारों की आबादी प्रभावित हो गई। तब से ही क्षेत्रवासी संबंधित विभाग के अलावा जनप्रतिनिधियों से बस सेवा शुरू कराने की गुहार लगा रहे थे।

दिल्ली के अलग अलग संस्थानों में पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों और नौकरीपेशा को भी आने-जाने में परेशानी झेलनी पड़ रही थी। इसको लेकर कुछ दिन पहले रजोकरी यूथ वेलफेयर सोसाइटी ने स्थानीय विधायक गजेंद्र सिंह यादव से पत्र लिखा था। विधायक ने मामले को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और दिल्ली के परिवहन मंत्री कपिल मिश्रा के समक्ष उठाया। इसके बाद मार्ग पर देवी बस सेवा का संचालन शुरू किया गया है।

गुरुग्राम की बसों के इंतजार में खड़े रहते थे यात्री

रजोकरी तक कोई बस न आने की वजह से यहां के निवासी गुरुग्राम की बस के सहारे रहते थे। उसके लिए भी लोगों को ई रिक्शा में 20 रुपये किराया देकर रजोकरी रेड लाइन तक जाना पड़ता था या फिर पैदल आते थे। इसके अलावा कापसहेड़ा मोड से बस मिलती थी। नौकरी पेशा को तो मजबूरी में आनलाइन कैब या बाइक बुक करनी पड़ती थी।

द्वारका सेक्टर 28 व महरौली तक तीन-तीन बस चली

रजोकरी क्षेत्र की आबादी करीब 35 हजार है। इस मार्ग पर बस सेवा शुरू होने से रजोकरी गांव, राजोकरी पहाड़ी, बीएसएस कैंप, रामदेव डेरा सहित आसपास की बस्तियों में रहने वाले लोगों

को सहूलियत मिली है। फिलहाल रजोकरी से द्वारका सेक्टर 28 और रजोकरी से महरौली मार्ग पर तीन-तीन देवी बस सेवा शुरू की गई हैं। यात्रियों की आवाजाही को देखते हुए भविष्य में बसों की संख्या व उनके चक्कर बढ़ाए जा सकते हैं। रजोकरी से धोला कुआं तक भी बस का संचालन जल्द शुरू किया जाएगा।

स्थानीय निवासियों की जुबानी

हमारे रजोकरी क्षेत्र में 2015 से सार्वजनिक परिवहन सेवा बंद थी। इस वजह से लोग या तो अपने वाहन से आना-जाना करते थे या फिर गुरुग्राम से आने वाली बस के भरोसे रहते थे। अब इस मार्ग पर बस शुरू होने से हमें काफी हद तक राहत मिली है। - कपिल यादव, रजोकरी

इस मार्ग पर बस सेवा करने को लेकर अधिकारियों से लेकर जन प्रतिनिधियों से बार-बार गुहार लगाई गई, लेकिन किसी ने नहीं सुनी। अब स्थनीय विधायक गजेंद्र यादव के प्रयास से बसों का परिचालन 11 साल बाद शुरू हुआ है।

- दीपक यादव, रजोकरी

कुछ दिन पहले स्थानीय लोगों की समस्या सामने आई थी। फिर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और परिवहन मंत्री कपिल मिश्रा के समक्ष रजोकरी में बस सेवा शुरू करने मांग उठाई गई। अब यहां देवी बसों का परिचालन शुरू हो गया है। इससे हजारों लोगों को राहत मिली है।

- गजेंद्र सिंह यादव, विधायक, महरौली

रजोकरी तक कोई बस न आने की वजह से यहां के निवासी गुरुग्राम की बस के सहारे रहते थे। उसके लिए भी लोगों को ई रिक्शा में 20 रुपये किराया देकर रजोकरी रेड लाइन तक जाना पड़ता था या फिर पैदल आते थे। इसके अलावा कापसहेड़ा मोड से बस मिलती थी। नौकरी पेशा को तो मजबूरी में आनलाइन कैब या बाइक बुक करनी पड़ती थी।

दिल्ली मेट्रो का एकमात्र कॉरिडोर, जिस पर चलती है चार कोच की ट्रेनें; अब उठ रही छह कोच लगाने की मांग

संजय बाटला

दिल्ली मेट्रो की ग्रीन लाइन पर यात्रियों की संख्या बढ़ने के कारण कोच बढ़ाने की मांग उठ रही है। वर्तमान में इस लाइन पर चार कोच वाली 20 मेट्रो ट्रेनें चल रही हैं। यात्रियों का कहना है कि भीड़ अधिक होने के कारण परेशानी हो रही है और कोच की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। डीएमआरसी के अनुसार अभी कोच बढ़ाने की कोई योजना नहीं है।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो में कोरोना के बाद यात्रियों की संख्या बढ़ी है। इससे दिल्ली मेट्रो के हर कॉरिडोर की मेट्रो में यात्रियों का दबाव बढ़ा है। इसके मद्देनजर हाल में मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने ग्रीन लाइन (बहादुरगढ़-कीर्ति नगर-इंद्रलोक) की मेट्रो के परिचालन की व्यवस्था में बदलाव भी किया है। ताकि इस कॉरिडोर पर मेट्रो की फ्रिक्वेंसी बढ़ सके।

इस बीच इस कॉरिडोर पर मेट्रो ट्रेनों के कोच बढ़ाने के लिए आवाज उठने लगी है। इंटरनेट मीडिया पर कई यात्रियों ने पोस्ट कर इस कॉरिडोर के चार कोच की मेट्रो ट्रेनों को छह कोच की ट्रेन में तब्दील करने की मांग की है।

रेड, यलो और ब्लू लाइन पर अब आठ कोच की मेट्रो

दिल्ली मेट्रो के पिंक, मजेंटा, वायलेट, ग्रे व एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन का कॉरिडोर स्टैंडर्ड गेज का है। इस वजह से इन कॉरिडोर पर छह कोच की मेट्रो ट्रेनों का परिचालन होता है। इसके अलावा रेड, यलो व ब्लू लाइन पर अब आठ कोच की मेट्रो चलती है। इन कॉरिडोर पर भी पहले चार कोच की मेट्रो चलती थी।

यात्रियों की संख्या बढ़ने के साथ इन कॉरिडोर की

ट्रेनें पहले छह कोच में और बाद में आठ कोच की ट्रेन में तब्दील हुईं। मौजूदा समय में ग्रीन लाइन दिल्ली मेट्रो का एक मात्र कॉरिडोर है जिस पर अभी चार कोच की 20 मेट्रो ट्रेनों का परिचालन होता है।

अभी प्रतिदिन करीब चार लाख यात्री सफर करते हैं

डीएमआरसी ने सोमवार से ही सभी कार्य दिवस के दिन इस कॉरिडोर पर दो लूप (ब्रिगेडियर होशियार सिंह-कीर्ति नगर और मुंडका-इंद्रलोक) में मेट्रो चालने के फैसले की जानकारी इंटरनेट मीडिया पर दी तो कई यात्रियों ने कोच बढ़ाने की मांग कर डाली। इस कॉरिडोर पर अभी प्रतिदिन करीब चार लाख यात्री सफर करते हैं।

अमन कुमार नामक यात्री ने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि ग्रीन लाइन पर मेट्रो के कोच बढ़ाए जाने चाहिए। इस कॉरिडोर की मेट्रो में बहुत भीड़ होती है। चिन्मय वर्मा नामक एक अन्य यात्री ने भी कोच की संख्या चार से बढ़ाकर छह करने की मांग की। रिषभ नामक यात्री ने लिखा कि अधिकारियों ने सोचा था कि चार कोच की मेट्रो इस कॉरिडोर के लिए पर्याप्त होगी लेकिन अब भीड़ अधिक होने से यात्रियों की परेशानी बढ़ गई है। उन्होंने डीएमआरसी से सवाल किया कि ग्रीन लाइन की मेट्रो में कोच बढ़ाकर चार से छह क्यों नहीं किए जा रहे हैं? इस मामले पर डीएमआरसी का कहना है कि अभी इस कॉरिडोर की मेट्रो ट्रेनों के कोच बढ़ाने की योजना नहीं है।

दिल्ली की सड़कों पर गड्ढों का राज, कब मिलेगी राहत? इन इलाकों का सबसे बुरा हाल

दिल्ली सरकार के गड्ढे भरने के दावे के बावजूद पूर्वी और दक्षिणी दिल्ली की सड़कें बदहाल हैं। यमुनापार और दक्षिणी दिल्ली के कई इलाकों में सड़कों पर गड्ढे भरे हुए हैं जिससे मानसून में दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ गया है। सेंट्रल दिल्ली में भरे गए गड्ढे कुछ हद तक ठीक हैं लेकिन बाकी दिल्ली में स्थिति चिंताजनक बनी हुई है।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने हाल ही में सड़कों के 3400 गड्ढे एक दिन में भरने का दावा किया। इसके निमित्त उत्सव जैसा आयोजन कर जोर-शोर से कुछ गड्ढे भरे भी गए, लेकिन दिल्ली की सड़कों के बड़े गड्ढे अपने भरने का इंतजार ही करते रह गए। पूर्वी और दक्षिणी दिल्ली के हालात बाकी स्थानों से ज्यादा खराब हैं। यहां की सड़कों को अपने गड्ढे भरे जाने की अब भी प्रतीक्षा है। दिल्ली में कई स्थानों पर ये गड्ढे मानसून में परेशानी और हादसों का सबब बन सकते हैं। बावजूद इसके कोई इसकी सुध लेने को तैयार नहीं। मानसून में तो इनकी भराई मुश्किल दिख रही है।

पूरी दिल्ली में सड़कों की स्थिति खराब

लुटियंस दिल्ली को छोड़ दें तो आमतौर पर पूरी दिल्ली में सड़कों की स्थिति अच्छी नहीं है। विशेष कर पूर्वी और दक्षिणी दिल्ली में। यहां की सड़कें इस मानसून दिल्लीवासियों को बेहद दर्द देंगी। पूर्वी दिल्ली की बात करें तो यमुनापार की सड़कें पीडब्ल्यूडी के सड़कों के गड्ढा मुक्त करने के दावों की पोल खोल रही हैं। यहां सड़कों पर गड्ढों की भरमार है।

सवाल उठ रहे हैं कि अगर पीडब्ल्यूडी ने गड्ढे भरकर अपनी पीठ थपथपाई तो जो गड्ढे सड़कों पर हैं, उन्हें भरने की किसकी जिम्मेदारी है।

मानसून शुरू हो गया है, ऐसे में मानसून के दौरान सड़कों की मरम्मत न करने का बहाना आम है। जाहिर है कि इस कारण स्थानीय लोगों को मानसून में सड़कों के गड्ढों का दर्द तो झेलना ही पड़ेगा।

यमुनापार के इन इलाकों में गड्ढों की भरमार

यमुनापार में जफराबाद रोड, सीलमपुर रोड, वजीराबाद रोड, जीटी रोड, स्वामी दयानंद मार्ग, सुंदर नगरी रोड, मयूर विहार, कोंडली और करावल नगर रोड समेत कई सड़कों पर गड्ढों की भरमार है।

ऐसा नहीं है कि यह गड्ढे अभी हुए हैं। एक साल से लेकर पांच माह पुराने यह गड्ढे हैं। आरोप है जिस वक्त पीडब्ल्यूडी ने गड्ढे भरने का विशेष अभियान चलाया था, तब मौजूदा सड़कों के गड्ढों पर आंखे मूंद ली गई थी, इन्हें भरने का कोई उपक्रम अब तक नहीं किया गया।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली पुराने वाहन प्रतिबंध : एएनपीआर सिस्टम से हुआ गलत एलान, वैध कार को बताया एक्सपायर

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में पुराने वाहनों पर लगे प्रतिबंध के बीच एएनपीआर सिस्टम द्वारा एक वैध हुंडई आई-10 कार को एक्सपायर घोषित करने का मामला सामने आया। पूसा गेट स्थित एक पेट्रोल पंप पर हुई इस घटना में सिस्टम की गलती उजागर हुई जब आरसी की जांच में गाड़ी 2028 तक वैध पाई गई। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के आदेश पर पुराने वाहनों पर फ्यूल प्रतिबंध लगाया गया है।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पुराने वाहनों को पेट्रोल पंपों पर फ्यूल देने पर प्रतिबंध के बीच एएनपीआर सिस्टम द्वारा गलत घोषणा करने का मामला सामने आया है।

जानकारी के मुताबिक, दिल्ली के पूसा गेट स्थित भसीन सर्विस स्टेशन पर लगभग 12 बजे एक हुंडई आई-10 पेट्रोल कार पहुंची तो स्पीकर से घोषणा हुई कि यह एक्सपायर कार है, लेकिन आरसी की जांच करने पर पता चला कि ये गाड़ी 29/03/2028 तक वैध है। इस संबंध में स्टेशन पर मौजूद पुलिस के अधिकारियों को सूचित किया गया और आरसी की जांच करने के बाद कार को छोड़ दिया गया।

ANPR सिस्टम से रखी जा रही नजर

मालूम हो कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के आदेश पर दिल्ली में आज

यानी एक जुलाई से उम्र पूरी कर चुके वाहनों को लेकर सख्ती बरती जा रही है। राजधानी के सभी पंपों पर 10 वर्ष पुराने डीजल और 15 वर्ष पुराने पेट्रोल वाहनों को फ्यूल देने पर प्रतिबंध लगाया है।

इसे लेकर पेट्रोल पंपों पर ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन (एएनपीआर) कैमरे के जरिए निगरानी रखी जा रही है। इसके साथ ही दिल्ली सरकार के आदेश पर पुराने वाहनों को जब्त करने के लिए पंपों पर नगर निगम और ट्रैफिक पुलिस की टीमें भी तैनात की गई हैं।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली सरकार के ट्रायल के आंकड़ों के अनुसार, अकेले जून महीने में अवधि पूरी कर चुके 1.30 लाख वाहन दिल्ली की सड़कों पर चलते मिले। वाहन बिक्री डीलर्स के संगठन फेडा के अनुसार दिल्ली सरकार का यह अभियान सही तरीके से लागू होता है तो कुछ महीने तक वाहनों की बिक्री में 20 से 30 प्रतिशत की तेजी आ सकती है।

इसे लेकर पेट्रोल पंपों पर ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन (एएनपीआर) कैमरे के जरिए निगरानी रखी जा रही है। इसके साथ ही दिल्ली सरकार के आदेश पर पुराने वाहनों को जब्त करने के लिए पंपों पर नगर निगम और ट्रैफिक पुलिस की टीमें भी तैनात की गई हैं।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली सरकार के ट्रायल के आंकड़ों के अनुसार, अकेले जून महीने में अवधि पूरी कर चुके 1.30 लाख वाहन दिल्ली की सड़कों पर चलते मिले। वाहन बिक्री डीलर्स के संगठन फेडा के अनुसार दिल्ली सरकार का यह अभियान सही तरीके से लागू होता है तो कुछ महीने तक वाहनों की बिक्री में 20 से 30 प्रतिशत की तेजी आ सकती है।

शिवलिंग व जल अर्पण

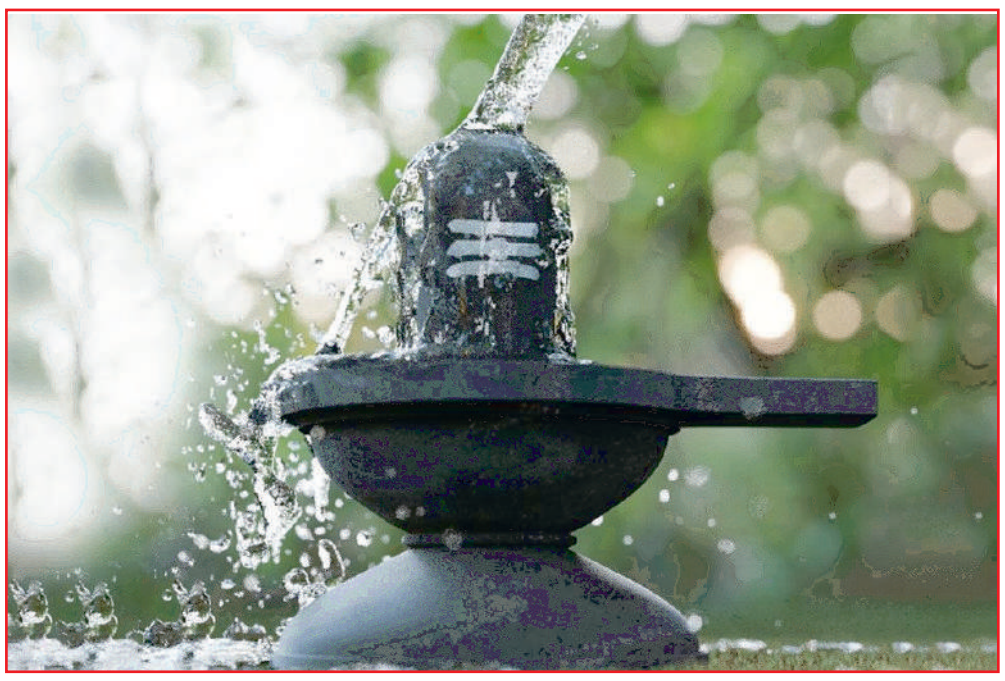

शास्त्रों में कहा गया है कि शिव कृपा पाने के लिए पूरे नियम से शिवलिंग पर जल अर्पित करना चाहिए क्योंकि जल धारा भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है और नियम से इसे शिवलिंग पर चढ़ाने से भक्तों की सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

किस दिशा की ओर चढ़ाएं जल-:

शिवलिंग पर जल उत्तर दिशा की ओर मुंह करके जल चढ़ाएं क्योंकि उत्तर दिशा को शिव जी का बायां अंग माना जाता है जो माता पार्वती को समर्पित है। इस दिशा की ओर मुंह करके जल अर्पित करने से भगवान शिव और माता पार्वती दोनों की कृपा दृष्टि प्राप्त होती है।

कौन से पात्र से अर्पित करें जल-:

शिवलिंग पर जल अर्पित करते समय सबसे ज्यादा ध्यान में रखने वाली बात ये है कि आप किस पात्र से जल अर्पित करें। जल चढ़ाने के लिए सबसे अच्छे पात्र तांबे, चांदी और कांसे के माने जाते हैं। स्टील के पात्र से शिवलिंग पर जल नहीं चढ़ाना चाहिए। जल अर्पण के लिए सर्वोत्तम पात्र तांबे का है। इसलिए इसी पात्र से जल चढ़ाना उत्तम है। लेकिन तांबे के पात्र से शिव जी को दूध न चढ़ाएं क्योंकि तांबे में दूध विष के समान बन जाता है।

कभी भी शिवलिंग पर तेजी से जल नहीं चढ़ाना चाहिए-:

शास्त्रों में भी बताया गया है कि शिव जी को जल धारा अत्यंत प्रिय है। इसलिए जल चढ़ाते समय ध्यान रखें कि जल के पात्र से धार बनाते हुए धीरे से जल अर्पित करें। पतली जल धार शिवलिंग पर चढाने से भगवान शिव की विशेष कृपा दृष्टि प्राप्त होती है।

बैठकर चढ़ाएं जल-:

हमेशा शिवलिंग पर जल अर्पित करते समय ध्यान रखें कि बैठकर ही जल अर्पित करें। यहां तक कि रुद्राभिषेक करते समय भी खड़े नहीं होना चाहिए। खड़े होकर जल चढ़ाने पर शिवजी के ऊपर जल गिरने के बाद हमारे पैरों में उसके छींटें लगते हैं जो सही नहीं है।

शंख से न चढ़ाएं शिवलिंग पर जल-:

कभी भी शिवलिंग पर शंख से जल नहीं चढ़ाना चाहिए। शिवपुराण के अनुसार, शिवजी ने शंखचूड़ नाम के दैत्य का वध किया था। ऐसा माना जाता है कि शंख उसी दैत्य की हड्डियों से बने होते हैं। (विभिन्न मत अनुसार) इसलिए शिवलिंग पर शंख से जल नहीं चढ़ाना चाहिए।

जल के साथ कुछ और न मिलाएं-:

कभी भी शिवलिंग पर जल चढ़ाते हुए जल के पात्र में कोई अन्य सामग्री न मिलाएं। कोई भी सामग्री जैसे पुष्प, अक्षत या रोली जल में मिलाने से उनकी पवित्रता ख़त्म हो जाती है। इसलिए भगवान शिव की कृपा दृष्टि पाने के लिए हमेशा जल को अकेले ही चढ़ाना चाहिए। लेकिन जल में कुछ बूंदे नमर्दा, गंगा आदि पवित्र नदियों की जरूर मिलानी चाहिए।

वस्तु अर्पित करने के बाद जल चढ़ाएं-:

आप यदि भगवान शिव को शहद, दूध, दही या किसी प्रकार का रस अर्पित करते हैं तो वह जल में ना मिलाएं।कोई भी वस्तु भगवान को अलग से चढ़ाएं फिर उसके बाद में जल अर्पित करें।

शुद्ध दूध ही अर्पित करें-:

शिवलिंग पर केवल शुद्ध देसी भारतीय गाय का कच्चा दूध ही चढ़ाना चाहिए, अन्य प्रकार का दूध बिल्कुल भी ना चढ़ाये।

दसमहाविद्या मन्त्रपुरश्चरण काल में गायत्री का महत्व।।

साधक चाहे शैव हो ,शाक्त हो ,वैष्णव हो या अन्य किसी परम्परा का, मूल मन्त्र के पुरश्चरण से पहले उसे जिस देवी या देवता के मन्त्र का जप करना है , उसी देवी-देवता की गायत्री का जप एक हजार से लेकर दश हजार तक , ज्ञात-अज्ञात पापों से निवृत्ति के लिए करना अन्यन्त आवश्यक है। क्योंकि हमारे पाप ही हमें साधनागत सफलता से दूर रखते हैं।

अत्यधिक पापों कि निवृति के लिए ब्रह्म गायत्री का पुरश्चरण आवश्यक हो जाता है । आगे जो स्व-गुरु दिशा निर्देश प्रदान करें , वहीं उचित रहता है।

दशमहाविद्याओं के प्रचलित गायत्री मन्त्र क्रमानुसार दिये जा रहें है-

१) भगवती काली गायत्री

ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो घोरा प्रचोदयात। (मन्त्र महार्णव)

२)भगवती तारा गायत्री

क) उग्र तारा गायत्री

तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि तन्नो देवी धियो यो नः प्रचोदयात। (नीलतन्त्र)

ॐ तारायै विद्महे महोग्रायै धीमहि देवि प्रचोदयात। (तोडलतन्त्र)

ॐ तारायै विद्महे महोग्राय धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात।(श्रीतारा नित्यार्चन)

ख)एकजटा तारा

ॐ भगवत्येकजटे विद्महे घोरदंष्ट्रे धीमहि तन्नस्तारे प्रचोदयात।(श्रीतारा नित्यार्चन)

ग) नीलसरस्वती तारा

ॐ नीलसरस्वत्यै धीमहि शारदायै विद्महे तन्नः शिवे प्रचोदयात।(श्रीतारा नित्यार्चन)

*) भगवती त्रिपुर सुन्दरी (षोडषी) गायत्री

**

ॐ क्लीं त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वरी धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात।(मन्त्र महार्णव)

ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि सौः तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात । (मन्त्र महार्णव)

४) भगवती भवनेश्वरी गायत्री

ह्रीं भुवनेश्वर्यै विद्महे आद्यायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात ।(पुरश्चर्यार्णव)

ॐ नारायण्यै विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात । (मन्त्र महार्णव)

५) भगवती भैरवी गायत्री

ॐ त्रिपुरायै विद्महे महाभैरव्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात। (मन्त्र महोदधि)

६) भगवती छिन्नमस्ता गायत्री

ॐ वैरोचन्यै विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात। (पुरश्चर्यार्णव)

७) भगवती धूमावती गायत्री

ॐ धूमावत्यै विद्महे संहारिण्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात। (मन्त्र महार्णव)

धूं धूमावति विद्महे विवर्णा देवी धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात। (पुरश्चर्यार्णव)

८) भगवती पीताम्बरा बगला गायत्री

ह्लीं बगलामुखी विद्महे दुष्टस्तम्भनी धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात। (पुरश्चर्यार्णव)

ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनबाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात।(सांख्यायन तन्त्र)

ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनं तन्नः बगला प्रचोदयात। (बगलामुखी रहस्य)

ॐ बगलामुख्यै विद्महे स्तम्भिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात। (मन्त्र महार्णव)

९) भगवती मातंगी गायत्री

ऐं शुकप्रियायै विद्महे क्लीं कामेश्वरीं धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात । (मन्त्र महोदधि)

ॐ शुकप्रियायै विद्महे श्रीकामेश्वर्यै धीमहि तन्नः श्यामा प्रचोदयात। (पुरश्चर्यार्णव)

१०) भगवती कमला गायत्री

महालक्ष्मी विद्महे महाश्रियै धीमहि तन्नः श्री प्रचोदयात । (पुरश्चर्यार्णव)

ॐ महालक्ष्मी विद्महे विष्णुपत्नी धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात।(मन्त्र महोदधि)

महालक्ष्म्यै विद्महे महाश्रियै धीमहि तन्नः श्रीः प्रचोदयात। (तन्त्रसार)

महादेव्यै विद्महे विष्णुपत्न्यै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात। (मन्त्र महार्णव)

ॐ महादेवी विद्महे विष्णुपत्नी धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात।(मन्त्र महार्णव)

दशमहाविद्याओं कि गायत्री का जप निज गुरु परम्परानुसार ही करना चाहिये।

बतौर एक नागरिक : राजनैतिक परिक्रमा

(टिप्पणियां : संजय पराते)

1. संघ-भाजपा : दिल की बात फिर जुबां पर!

संघी गिरोह की चड्डी एक बार फिर खिसक गई है। पिछले लोकसभा चुनाव में उसने 400 पार का नारा दिया था, ताकि संविधान को बदल सके। लेकिन मतदान में आम जनता ने उनका नाड़ा ही ढीला कर दिया। इससे भी उसने सबक नहीं सीखा और दो बैसाखियों के सहारे चल रही मोदी सरकार ने संविधान से खिलवाड़ का अपना प्रिय खेल जारी रखा है।

असली बात यह है कि संघी गिरोह कभी भी बाबा साहेब आंबेडकर के के नेतृत्व में बनाए आधुनिक संविधान के पक्ष में कभी नहीं रही, क्योंकि उसे आधुनिकता नहीं, पुरातनता ही भाती है। लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय आदि आधुनिक अवधारणा है। संघी गिरोह को राजतंत्र, पूंजीवाद, धार्मिक वैमनस्यता, वर्ण व्यवस्था सुहाती है, क्योंकि उनकी फासीवादी-वैचारिक परियोजना 'हिंदू राष्ट्र' के ये प्रमुख तत्व है। ये अवधारणाएं पुरातन का, एक पिछड़े समाज का, आर्थिक असमानता की हामी का और जातिवादी शोषण का प्रतिनिधित्व करती है। इन तमाम तत्वों और अवधारणाओं का सार मनुस्मृति है। संघी गिरोह बाबा साहेब के संविधान की जगह मनुस्मृति को लागू करना चाहता था। इसलिए आजादी के बाद उसने संविधान, तिरंगे -- इन सबका विरोध किया था। उनका विरोध नहीं था, तो केवल अंग्रेजों से, जो देश को अपनी औपनिवेशिक लूट का अड्डा बनाए हुए थे। सभी जानते है कि राष्ट्रभक्ति का प्रमाणपत्र बांटने वाली यह कौम अंग्रेजों की छत्रछाया में, उनके आशीर्वाद और पेंशन की कृपा से ही पली-बढ़ी है। यही कारण है कि इस कौम में आजादी का कोई वीर सेनानी नहीं मिलता। जो भी मिलते हैं, आपातकाल में जेलों से माफीनामा लिखकर बाहर आए हुए और देश की 'दूसरी आज़ादी' के नाम पर पेंशन खाते हुए भड़वों की फौज में शुमार शातिर लोग ही मिलते हैं।

यह लंबी और तीखी टिप्पणी इसलिए कि एक बार फिर यह गिरोह केंद्र में मोदी की सत्ता की ताकत के बल पर अपने बिलों से बाहर आकर कुलबुलाने लगे हैं। हाल-फिलहाल उनके शीर्षस्थ नेता दत्तात्रेय होसबोले ने फिर मांग की है कि संविधान की प्रस्तावना से धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद जैसे शब्दों को निकाल दिया जाना चाहिए। हमारे देश के स्वनामधन्य उप-राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने भी कल दिल्ली में एक कार्यक्रम में बोलते हुए होसबोले की इसी बात को दुहराया है। यह इस बात का प्रतीक है कि हमारी राजसत्ता पर फासीवादियों की पकड़ कितनी मजबूत होती जा रही है। अब उनमें अपनी खिसकती चड्डी से झांकते अंगों को ढांपने की शर्म भी नहीं बची है।

संघ-भाजपा के केंद्र सरकार में पिछले 11 सालों के निरंतर राज में और अगले चार सालों तक उनके संभावित राज में भी भारत का हिंदू राष्ट्र बनना उनके लिए आज भी दूर की कौड़ी है। हिंदू राष्ट्र की स्थापना के लिए उनका घोषित लक्ष्य वर्ष 2025 था। यह आरएसएस की स्थापना का शताब्दी वर्ष भी है। लेकिन वे इस दिशा में आगे बढ़ते, उससे पहले ही पिछले चुनाव में उन्हें आम जनता ने लंगड़ी मार दी और बहुमत को उनके पैरों के नीचे से खींच लिया। राम जाने, आगे और कौन-कौन से दिन दिखेंगे ! लेकिन यह स्पष्ट है कि जब तक यह आधुनिक संविधान है, उसको कमजोर करने की कितनी भी कोशिश की जाए, उनका ध्येय सिद्ध होने वाला नहीं, क्योंकि कमजोर से कमजोर संविधान भी उनके हिन्दू राष्ट्र का पक्ष पोषण नहीं कर सकता, उसके लिए तो समूचे संविधान को ही उखाड़कर फेंकना होगा।

असली सवाल यही है कि क्या यह संभव है? क्या यह धरती के उस टुकड़े पर संभव है, जहां पूरी दुनिया की सभ्यता आकर विलीन हो गई और गंगा-जमुनी तहजीब के रूप में बहने लगी, जहां राजाओं के साम्राज्य विस्तार के तमाम युद्ध कभी धार्मिक युद्धों में नहीं बदल पाए, जहां उपनिवेशवाद के दौरान उनका साझा दुश्मन अंग्रेजी राज और साम्राज्यवाद रहा, जिसके खिलाफ लड़ते हुए हम सबके पूर्वजों की हड्डियां इसी धरती में गलकर खाद बन गई। आंबेडकर का संविधान आदिकालीन भारत से एक आधुनिक भारत के निर्माण की चरम अभिव्यक्ति है, जिसे तोड़ा मरोड़ा जा सकता है, कतरा भी जा सकता है, लेकिन इसे उखाड़कर समूल नष्ट नहीं किया जा सकता।

इंदिरा गांधी के घोषित आपातकाल ने संविधान को कमजोर करने, मौलिक अधिकारों को निलंबित करके उसे देश की जनता से छीनने की कोशिश की, लेकिन इसी संविधान ने इंदिरा की तानाशाही सत्ता को उजाड़कर भी फेंक दिया। लेकिन इंदिरा गांधी ने अपनी तमाम करतूतों के बावजूद इस देश को कभी हिन्दू राष्ट्र की ओर धकेलने की कोशिश नहीं की थी। आज संघी गिरोह इंदिरा गांधी के घोषित आपातकाल की आलोचना के बहाने अपने अघोषित आपातकाल के बारे में जनता को गुमराह करना चाहता है, जबकि आज मोदी के फासीवादी राज में संविधान और आम जनता के अधिकारों पर पहले की तुलना में गमले कहीं ज्यादा तेज है और धर्मनिरपेक्षता को उखाड़कर हिंदू राष्ट्र बनाने की मुहिम को खुले आम आगे बढ़ाया है रहा है। इस रास्ते को आसान बनाने के लिए देशी विदेशी कॉरपोरेटों के साथ गठजोड़ किया जा रहा है और देश की तमाम संपदा को उन्हें सौंपने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा रहा है।

हिटलर ने अपने फासीवाद को आगे बढ़ाने के लिए यहूदियों को अपना मुख्य दुश्मन मानकर छद्म राष्ट्रवादी भावनाओं को भड़काया था। संघी गिरोह इसी हिटलर का मानस पुत्र है। उसने अल्पसंख्यकों और कम्युनिस्टों को अपने निशाने पर रखा है। लेकिन इस देश का संविधान, इस देश का सामाजिक ताना-बाना, इस देश की सांझी संस्कृति -- संघियों के इरादे पर रह-रहकर पानी फेर देती है। बहुरंगी भारतीय सभ्यता को कुचलकर उसे एकांगी और एकरंगी हिंदू असभ्यता में बदलने की कोशिश तब तक सफल नहीं होगी, जब तक आंबेडकर का संविधान कायम है। इस संविधान को बचाए-बनाए रखने की लड़ाई वास्तव में अंग्रेजों से हासिल आजादी को बचाए-बनाए रखने की लड़ाई है।

2. हिंदी तो क्या, किसी भी भाषा को थोपना गलत!

हिंदी का विवाद दक्षिण भारत के राज्यों से चलकर अब महाराष्ट्र तक आ पहुंचा है। यदि यह गुजरात, पंजाब, असम, ओडिशा और बंगाल में भी फैल जाएं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। इस देशव्यापी भाषाई विवाद के लिए केंद्र की मोदी सरकार अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती। असल में उसकी नीति ही है -- आम जनता में फूट डालो और हिंदुत्व का रास्ता आसान बनाओ। इस नीति से संघ भाजपा का भला हो सकता है, सत्ता पर उसकी पकड़ मजबूत हो सकती है, लेकिन विविधता में एकता की भावना की जिस डोरी से बंधा है, वह भावना मजबूत नहीं हो सकती, देश की एकता मजबूत नहीं हो सकती।

हमारा देश विविधता और बहुलता का प्रतिनिधित्व करता है। यह विविधता न केवल खान-पान और रहन-सहन में प्रतिबिंबित होती है, बल्कि भाषाओं, उप-भाषाओं और बोलियों में भी झलकती है। आज भी हमारे देश में ऐसी भाषा/बोलियां हैं, जिनके पास न कोई लिपि है और न वैज्ञानिक ढंग से परिष्कृत व्याकरण। तो क्या हमें ऐसी भाषाओं/बोलियों को कुचल देना चाहिए?

हमारा संविधान देश की सभी भाषाओं की बराबरी की कल्पना करता है और भाषाई आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव और नफरत को तिरस्कृत करता है। चूंकि हिंदी इस देश में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है, इसलिए संविधान में इसे राजभाषा बनाने की कल्पना की गई है। लेकिन हमारे देश के सत्ताधारियों की अदूरदर्शिता के कारण हिंदी को यह गौरव अभी तक प्राप्त नहीं हो पाया है और राज काज की भाषा पर अंग्रेजी ही हावी है। आज भी हिंदी हमारे देश की अन्य भाषाओं की तुलना में सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से पिछड़ी भाषा है, ऐसी दुर्गति हिंदी की है। भाषा आजीविका का बहुत बड़ा साधन होता है, लेकिन हिंदी प्रदेशों को छोड़कर अन्य राज्यों में हिंदी इस जगह को पाने से बहुत दूर है।

त्रिभाषा फार्मूला के रूप में केंद्र सरकार ने जिस शिक्षा नीति को आगे बढ़ाया है, वह हमेशा से विवादास्पद रही है और उसने उत्तर बनाम दक्षिण के विवाद को जन्म दिया है और गैर-हिन्दी भाषियों के मन में इस आशंका को जन्म दिया है कि उन पर हिंदी थोपी जा रही है और उनकी मातृभाषा को दबाने की कोशिश हो रही है। इस शंका आशंका कुशंका के कुछ वास्तविक कारण भी हैं, जिन्हें केंद्र सरकार भी जानती है। लेकिन इसका समाधान करने की कोशिश इसलिए नहीं की गई कि आजादी के बाद देश की राजनीति में वर्चस्व अमूमन उत्तर का और हिंदीभाषियों का ही रहा है।

त्रिभाषा फार्मूला मोटे रूप में इस प्रकार है : राज्य की भाषा + अंग्रेजी + दक्षिण में हिंदी/उत्तर में संस्कृत। राज्यों की भाषा के बाद अंग्रेजी चूंकि अंतर्राष्ट्रीय भाषा है, इसलिए उस पर कोई विवाद नहीं है। अंग्रेजी उपनिवेशवाद ने इस भाषा को पढ़े-लिखों और धनाढ्य वर्ग की भाषा बना दिया था, जिसे हमारी आजाद सरकारों ने और ज्यादा सर्वस्वीकृत बनाया और जन मानस में इस धारणा को मजबूत किया कि अंग्रेजी के बिना कोई तरक्की संभव नहीं है। अब सवाल तीसरी भाषा का है। दक्षिण में यदि आप हिंदी को अनिवार्य कर रहे हैं, तो भाषाई समानता की अवधारणा यही कहती है कि उत्तर में भी किसी दक्षिण भारतीय भाषा का पठन-पाठन हो, और इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन उत्तर में संस्कृत पढ़ाना केंद्र सरकार की नेकनीयती पर सवाल खड़े करता है, क्योंकि संस्कृत का आप चाहे जितना भी गौरवगान कर लें, उसे सभी भाषाओं की जननी का छद्म दावा कर लें, वास्तविकता यही है कि आज वह न बोलचाल की भाषा है और न आजीविका की। अतीत में भी संस्कृत आम जनता की नहीं, पुरोहितों की भाषा थी। आज का संस्कृत साहित्य किसी भी भारतीय भाषा, और हिंदी के मुकाबले भी, कहीं नहीं टिकता। इसलिए उत्तर में भी संस्कृत की कोई उपादेयता नहीं है।

इसलिए यह स्वाभाविक है कि यदि उत्तर में दक्षिण की भाषा से दूरी बरती जाएगी, तो दक्षिण भी हिंदी को सहज ढंग से स्वीकार नहीं करेगा और हिंदी की अनिवार्यता को उन पर हिंदी थोपने के रूप में ही लेगा।

राकेश अचल ने अपने नियमित लेखन में इस बात को दर्ज किया है कि तमिलनाडु में हिंदी सीखने की रुचि बढ़ रही है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अनुसार, 2022 में 2.86 लाख लोग हिंदी की परीक्षा में शामिल हुए, जिनमें 80 फीसदी स्कूली छात्र थे। तमिल फिल्मों को हिंदी में डब करने की अनुमति से हिंदी सीखने की बढ़ती मांग का पता चलता है। यह किसी भाषा के सहज विकास का संकेत है और दक्षिण में हिंदी की ग्राह्यता इसी सहज तरीके से संभव है, किसी पर थोपकर नहीं।

लेकिन जो संघी गिरोह एक देश, एक चुनाव, एक टैक्स की तरह एक भाषा की तरफ बढ़ना चाहता है और हिंदी को थोपकर हिंदुस्तान में हिंदुत्व की राजनीति को आगे बढ़ाना चाहता है, वह न हिन्दी का भला कर रहा है और न किसी अन्य भाषा का। फासीवादी तानाशाही के रास्ते पर चल रही यह सरकार हिंदी की अनिवार्यता थोपकर गैर-हिंदीभाषियों पर हिंदी की तानाशाही थोपना चाहती है। जनतांत्रिक प्रणाली पर विश्वास रखने वाला कोई भी व्यक्ति हिंदी तो क्या, किसी भी भाषा को थोपने की तानाशाही को कभी स्वीकार नहीं करेगा।

**(टिप्पणीकार अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष*

जीवन के विभिन्न अनुभव/पायदान अपना अलग-अलग रंग लिए होते हैं। जब हम पालने से स्कूल, फिर विश्वविद्यालय, फिर कर्मशाला/आफिस, फिर विवाह, माता-पिता और दादा-परदादा बनने में विभिन्न अनुभवों में एक समानता भी है

उनमें कुछ बढ़ता/मिलता/उन्नत होता है। तो कुछ संघर्ष/परेशानियां होती भी हैं तो हम उसे इन प्राप्तियों के कारण पचा जाते हैं। इनकी चर्चा तो बहुत बार होती है लेकिन कुछ ऐसे अनुभव हैं जिनसे कुछ उतार/छूटना/अलग होना होता है, तो ऐसे अनुभवों में जो परेशानियां/संघर्ष आते हैं, उनको पचाना/पार करना बहुत भारी लगता है। उनमें से एक है सेवानिवृत्ति, जिसकी बाहरी चर्चा तो सुखद होती है लेकिन व्यक्ति अपनी भीतरी स्थिति से सामंजस्य बना भी नहीं सकता और किसी को बता भी नहीं सकता कि उसके भीतर क्या टूट रहा है? जीवन के 60 वर्ष जब दिन-रात किसी धारा को सींचने में, इसी को पाने, बनाने, बनाये रखने, और रोज नये संघर्ष में गुजारने/गुजरने की इस अनवरत धारा को जैसे ब्रेक लग गया हो। बिल्कुल ऐसे ही जैसे हम मीलों से साइकिल पर पैंडल मारते आ रहें हों, और अचानक ब्रेक मारने से जो झटका/सदमा लगता है, वह किसी दूसरे को बताया भी नहीं जा सकता लेकिन वह भीतर पूरा का पूरा हिला जाता है। यूं तो काम करते हुए कई सोचते/विचारते हैं कि रिटायरमेंट के बाद सुख-ही-सुख/आराम-ही-आराम होगा लेकिन जब वास्तविकता के धरातल पर पैर रखते हैं तो कांपने लगते हैं। हो सकता है कि कुछ सोच रहे हों कि बड़ा भयावह परिदृश्य खींचा गया है। यद्यपि भीतर वास्तविक झंकार और भी विभत्स है क्योंकि काम/नियमित व्यवस्था से हटते ही मानसिक/शारीरिक रोग पकड़ लेते हैं। यह रोग उसी भीतरी झंकार का बाह्य प्रक्षेपण होते है। यदि हमें जीवन में काम के साथ आराम, भीड़ के साथ एकांत, सामाजिक सामंजस्य के साथ आत्मिक/आध्यात्मिक संयोजन का अनुभव है तो यह सेवानिवृत्ति/रिटायरमेंट के बाद का समय हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं होगी। ध्यान रहे कि जीवन भर हम किसी एक दायरे/दरवाजे में रहें हों और 60 वर्ष के बाद सजा-संवार कर किसी दूसरे दरवाजे में भेज दिया जाये, जहां हम कभी गये नहीं हो तो कुछ देर अव्यवस्था पैदा हो जाती है। बस इसी अव्यवस्था को ध्यान से देखने और स्वीकारने से हमें उसी अंधकार में से उजाले की भव्य किरण मिलनी प्रारम्भ हो जाती है और जो/जितना प्रकाश की ओर होश का यह कदम बढ़ा लेते हैं यही साधना, साधनों पर भारी हो जाती है और संसार से मोक्ष की तरफ गति का माध्यम बनती है।

ज़िन्दगी में 8 के पहाड़े की एहमियत है, जाने!

8 x 01 = 08 ...बचपन
8 × 02 = 16 ...जवानी की शुरुआत
8 × 03 = 24 ...शादी की उम्र
8 × 04 = 32 ...बच्चों की ज़िम्मेदारी होना
8 × 05 = 40 ...खुशहाल परिवार
8 × 06 = 48 ...साँसारिक ज़िम्मेदारी और स्वास्थ्य के बिगड़ने की शुरुआत
8 × 07 = 56 ...बुढ़ापे की शुरुआत, रिटायरमेन्ट की तैयारी और वसीयत लिख डालने का समय
8 × 08 = 64 ...रिटायरमेन्ट के बाद कम से कम तनाव में रहने का प्रयास और सेहत का ख्याल रखना
8 × 09 = 72 रोग और स्वास्थ्य सम्बन्धी तकलीफों से सामना, खुद को ज़्यादा से ज़्यादा खुश रखने का प्रयास
8 × 10 = 80 पिछले 80 सालों में जिन मित्रों और सहयोगियों और रिश्तेदारों ने आपका साथ दु:ख में भी नहीं छोड़ा, उनके साथ हँसी खुशी जीवन बिताना कितना महत्वपूर्ण है 8 का पहाड़ा !

इसलिए हँसते रहें, हँसाते रहें, प्यार से रहें, परिवार और दोस्तों के सङ्ग रहें !!!

ज़िन्दगी_ना_मिलेगी_दोबारा

पौधरोपण आने वाली पीढ़ियों का भविष्य है: कलेक्टर अग्रवाल

डॉक्टर दिवस पर पायल एक नया सवेरा वैलफेयर फाउंडेशन का आयोजन

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर,छत्तीसगढ़। पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा डॉक्टर एवं चार्टर्ड अकाउंटेंट दिवस पर गनियारी अस्पताल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि कलेक्टर संजय अग्रवाल रहे। उन्होंने कहा कि प्रकृति और समाज की सेवा के ऐसे प्रयास समाज में जागरूकता की अलख जगाते हैं। पौधरोपण और जल संरक्षण केवल पर्यावरण की नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की रक्षा है। उन्होंने संस्था की अध्यक्ष पायल लाठ और उनकी टीम को इस पुनीत कार्य के लिए शुभकामनाएं दी।

जिला पंचायत सीईओ संदीप अग्रवाल ने कहा कि वृक्षारोपण जैसे अभियान समाज में सकारात्मक संदेश लाते हैं। उन्होंने कहा कि पायल एक नया सवेरा वैलफेयर फाउंडेशन एक प्रेरणादायक मिशन पर कार्य कर रहा है। संस्था की अध्यक्ष पायल लाठ की सोच और उनकी टीम का समर्पण वास्तव में सराहनीय है। पौधरोपण जैसे अभियान समाज में सकारात्मक संदेश लाते हैं।

प्रकृति हमें जीवन देती है- पायल लाठ

एक पेड़ मां के नाम अभियान एक भावना, एक प्रण है। फाउंडेशन की अध्यक्ष

पायल लाठ ने कहा कि जैसे मां हमें अपने आंचल में पालती हैं, ठीक वैसे ही प्रकृति हमें जीवन देती है। इसके अलावा हवा, जल, छांव और शांति देती है। इस प्रेम और सुरक्षा के प्रतीक को समर्पित करते हुए 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान की शुरुआत हुई है। यह सिर्फ एक पेड़ नहीं, एक भावनात्मक रिश्ता है, जो हमें प्रकृति से जोड़ता है।

कार्यक्रम के दौरान समाज के सच्चे नायक डॉक्टरों और सीए को सम्मान चिन्ह भेंट कर उनके योगदान को नमन किया गया। इस आयोजन में वरिष्ठ समाजसेवी डॉक्टर रमन कटारिया, फाउंडेशन के सचिव चंचल सलूजा, उपाध्यक्ष प्रशांत सिंह राजपूत, डॉक्टर शुभा गरेवाल भी उपस्थित थे।

दिल्ली का श्रीनिवासपुरी बस डिपो किया जा रहा अपग्रेड, यहां से ईवी बसों को चलाने के लिए तैयारी शुरू

ओखला के श्रीनिवासपुरी बस डिपो में ईवी चार्जिंग स्टेशन का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। बीएसईएस राजधानी पावर लिमिटेड द्वारा इलेक्ट्रिक बसों को चार्ज करने के लिए पहला चरण पूरा हो चुका है। दीपावली तक चार्जिंग स्टेशन का काम पूरा होने की उम्मीद है जिसके बाद इलेक्ट्रिक बसों का संचालन शुरू हो जाएगा। वर्तमान में सीएनजी बसों को अन्य डिपो में स्थानांतरित कर दिया गया है।

दिल्ली: ओखला स्थित श्रीनिवासपुरी बस डिपो में ईवी चार्जिंग स्टेशन बनाने का काम शुरू हो गया है। इलेक्ट्रिक बसों को चार्ज करने के लिए बीएसईएस राजधानी पावर लिमिटेड की तरफ से काम पूरा कर लिया गया है। इसके अगले चरण में अब डिपो में चार्जिंग स्टेशन बनाने का काम शुरू हो गया है। उम्मीद जताई जा रही है कि दीपावली तक काम पूरा कर लिया जाएगा और उसके बाद श्रीनिवासपुरी डिपो से इलेक्ट्रिक बसों का संचालन शुरू हो जाएगा।

फिलहाल वहां मौजूद सीएनजी बसों को दूसरे डिपो में शिफ्ट कर दिया गया है और वहां से उनका संचालन हो रहा है। जो बसें पुरानी हो गई थीं, उन्हें कंडम घोषित कर दिया गया है। श्रीनिवासीपुरी बस डिपो को अपग्रेड कर वहां से ई-बसों के संचालन की तैयारी की जा रही है।

इसके पहले चरण में इलेक्ट्रिक बसों को चार्ज करने के लिए बीएसईएस राजधानी पावर लिमिटेड की तरफ से डिपो पर इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन बनाया गया।

इसके लिए 220 केवी ओखला स्टेशन से भूमिगत केबल बिछाई जा चुकी है। पावर स्टेशन बनाए जाने का काम पूरा होने के बाद अब दूसरे चरण में ईवी चार्जिंग स्टेशन बनाए जाने हैं, जिसके लिए डिपो के अंदर सामने वाली दीवार के साथ खोदाई का काम शुरू हो गया है।

उम्मीद जताई जा रही है कि दीपावली से पहले सारा काम पूरा कर लिया जाएगा ताकि डिपो से बसों का संचालन हो सके।

श्रीनिवासपुरी से प्रमुख रूप से इंदरपुरी जेजे कालोनी, तेहखंड, मोरी गेट टर्मिनल, अंबेडकर नगर टर्मिनल, निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन, महरौली, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, कालका जी डीडीए फ्लैट्स, बदरपुर सहित अन्य रूटों पर बसों का संचालन होता था।

अपग्रेडेशन कार्य के चलते यहां से चलने वाली बसों को अन्य डिपो में भेज दिया गया है। इन रूटों पर फिलहाल दूसरे डिपो से बसों का संचालन किया जा रहा है।

आस्था व राष्ट्रीय एकात्मता की प्रतीक कावड़ यात्रा के यात्रियों के अधिकारों की भी हो रक्षा: विहिप

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ सुरेन्द्र जैन ने कावड़ यात्रा के संबंध में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता, समरसता और एकात्मता की प्रतीक इस यात्रा का सभी मत-पंथ संप्रदाय व धर्मों के लोगों को ना सिर्फ खुले मन से स्वागत करना चाहिए अपितु, कावड़ यात्रियों के संवैधानिक अधिकारों की भी रक्षा करनी चाहिए। कावड़ यात्रा अनादि काल से चली आ रही है। लगभग 8 करोड़ यात्री प्रतिवर्ष इस पवित्र त्रा में भाग लेते हैं। वे 'बम भोले' के साथ 'भारत माता की जय' का उद्घोष भी करते हैं। अपने कंधे पर कावड़ लेने के साथ, हाथ में तिरंगा लेकर भी चलते हैं। यह यात्रा आस्था के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता, समरसता और एकात्मता का प्रतीक बन चुकी है।

डॉ सुरेन्द्र जैन ने यह कहा कि इस यात्रा का समाज के सभी वर्गों के द्वारा भरपूर स्वागत होना चाहिए। यात्रियों के लिए व्यवस्थाएं जुटानी चाहिए लेकिन दुर्भाग्य से हरिद्वार से लेकर दिल्ली तक के रास्ते में कई बार इन यात्रियों पर हमले होते थे, जान से मार दिया जाता था, मल-मूत्र और मांस के टुकड़े फेंक कर कावड़ को अपवित्र किया जाता था। यात्रा रोक दी जाती थी। सेकुलर सरकारें जिहादी हमलावरों के संरक्षण पर खड़ी होती थी। यात्रियों की आस्थाओं का उनके लिए कोई अर्थ नहीं होता था।

यूपी सरकार के द्वारा उठाए गए कदमों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि योगी सरकार आने के बाद यात्रियों और उनके सम्मान की सुरक्षा के लिए कुछ नियम बनाए गए और उसका परिणाम हमलावर समाज पर भी दिखाई दिया। कुछ मुसलमानो ने स्वागत करना शुरू किया परंतु जेहादियों ने एक नया प्रकार खोज लिया। थूक कर रोटियां बनाना, जूस में पेशाब मिलाना, अपने नाम व पहचान छुपा कर हिंदू नाम से दुकान खोलकर हलाल के समान के साथ यात्रियों को भोजन भी देना। इससे हिंदुओं की आस्थाएं अपमानित होती थीं। यह यात्रियों का अधिकार है कि जिस दुकान से वह सामान ले रहे हैं, वह दुकान किनकी है। किसी जिहादी के द्वारा चलाई जा रही दुकान तो नहीं है, यह जानने का उसका संवैधानिक अधिकार है। इसलिए वर्तमान सरकार ने जो नियम बनाए हैं हम उन नियमों का स्वागत करते हैं। वे नियम यात्रियों के लिए भी है और वहां पर रहने वाले समाज के लिए भी। यात्री तो नियमों का पहले से ही पालन करते हैं। वहां का सम्पूर्ण समाज भी करेगा यह हमारी अपेक्षा है।

उन्होंने कहा कि यह देखा गया है कि जब ऐसा कोई भी विषय आता है तो कुछ लोग तुरंत न्यायपालिका में जाते हैं और कोई एक जज अपने व्यक्तिगत संस्कार और विचारों के आधार पर तुरंत स्टे दे देता है। इससे न्यायपालिका की आलोचना भी शुरू हो जाती है। सोशल मीडिया पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है। न्यायपालिका के सम्मान की सुरक्षा हमारी भी चिंता का विषय है। लेकिन जिम्मेदारी न्यायपालिका की भी बनती है। इसलिए हम मुख्य न्यायाधीश महोदय से निवेदन करते हैं कि वे सभी न्यायाधीशों को संकेत दें कि किसी भी विषय पर निर्णय देने से पहले हिंदुओं के संवैधानिक अधिकारों का भी विचार करें। संविधान के धारा 25 और 26 हिंदुओं के अधिकारों के लिए भी हैं। स्थानीय परिस्थितियों, हिंदुओं की भावनाओं तथा वहां की परिस्थितियों, इन सब का विचार करके ही निर्णय देना चाहिए।

डॉ जैन ने कहा कि दुर्भाग्य से कुछ लोग इस विषय को राजनीति से भी जोड़ने की कोशिश करते हैं। भारत में तो प्रत्येक महीने कहीं ना कहीं चुनाव होते ही रहते हैं। यात्रा हर वर्ष निकलती है, निश्चित तिथि पर निकलती है। इसको राजनीति से जोड़ने वाले वास्तव में, हिंदू आस्थाओं का अपमान करते हैं। इसको बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। वह अपने वोट बैंक के तुष्टीकरण के लिए इतना नीचे ना गिरे कि उनका उठाना मुश्किल हो जाए।

पीस पार्टी दिल्ली की सभी विधानसभा और वार्ड सीटों पर उतारेगी उम्मीदवार: हाफिज़ गुलाम सरवर

राज्य कार्यालय में आयोजित अहम बैठक में सदस्यता अभियान की शुरुआत, जनता से ज़ुल्म और अन्याय के खिलाफ एकजुट होने की अपील

शम्स आगाज

नई दिल्ली। पीस पार्टी दिल्ली राज्य समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक आज दिल्ली स्थित पार्टी के राज्य कार्यालय में आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता राज्य अध्यक्ष हाफिज़ गुलाम सरवर ने की। इस विशेष बैठक में पार्टी के कई ज़िम्मेदार पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुए। बैठक का उद्देश्य पार्टी की वर्तमान स्थिति, आगामी रणनीति और संगठनात्मक विस्तार पर विचार-विमर्श करना था।

इस मौके पर राज्य अध्यक्ष हाफिज़ गुलाम सरवर ने पार्टी के भविष्य के एजेंडे को विस्तार से पेश किया। उन्होंने घोषणा की कि पीस पार्टी दिल्ली की सभी विधानसभा क्षेत्रों और नगर निगम वार्डों में अपने उम्मीदवार खड़े करेगी। उनका कहना था कि पार्टी अब दिल्ली में अपनी मौजूदगी को और मज़बूत करेगी और हर स्तर पर जनता का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार है। राज्य अध्यक्ष ने इस अवसर पर सदस्यता अभियान की शुरुआत की भी घोषणा की, जिसके ज़रिए दिल्ली भर के आम नागरिकों को पार्टी से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। हाफिज़ गुलाम सरवर ने कहा कि पीस पार्टी एक विचारधारात्मक पार्टी है, जो बराबरी के अधिकारों, न्याय और सेकुलर मूल्यों के आधार पर काम कर रही है। उन्होंने जनता से अपील की कि वे ज़ुल्म, भ्रष्टाचार और अन्याय के खिलाफ एकजुट होकर पीस पार्टी के मंच से संघर्ष करें।

उन्होंने अपनी बातचीत में यह भी भविष्यवाणी की कि आने वाले एक हफ्ते के भीतर कई अन्य पार्टियों से जुड़े प्रभावशाली और वरिष्ठ नेता पीस पार्टी में शामिल होंगे और नियमित सदस्यता प्राप्त करेंगे। हाफिज़ गुलाम सरवर का कहना था कि जनता पीस पार्टी की नीतियों से प्रभावित होकर तेज़ी से पार्टी का हिस्सा बन रही है, जो इस बात का संकेत है कि पार्टी दिन-ब-दिन मज़बूत हो रही है।

बैठक में पार्टी के अन्य प्रमुख नेताओं जैसे नदीम अंसारी, सलीम सलमानी और अन्य कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया और संगठनात्मक मामलों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी प्रतिभागियों ने इस बात पर सहमति जताई कि वर्तमान राजनीतिक हालात में एक विचारधारात्मक और जन-आधारित पार्टी की सख्त ज़रूरत है, और पीस पार्टी इस खालीपन को भरने की पूरी क्षमता रखती है।

बैठक में सभी कार्यकर्ताओं ने पार्टी को और मज़बूत बनाने का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर उन्होंने मीडिया से भी संबोधन किया।

भाजपा की दिल्ली पुलिस पंजाब पुलिस को छापेमारी में सहयोग नहीं कर रही है : सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। पार्टी मुख्यालय में हुई एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा, कि हम सभी जानते हैं, कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान की अगुवाई में नशाखोरी और नशा बेचने वालों के खिलाफ एक बड़ी करवाई लगातार की जा रही है। उन्होंने कहा कि वर्षों से पंजाब में नशे के व्यापार के पीछे पंजाब के एक पूर्व मंत्री विक्रमजीत सिंह मजीठिया का नाम हमेशा जोड़ा जाता रहा है और यही कारण है कि नशे से जुड़े एक मामले में कुछ दिन पहले विक्रमजीत सिंह मजीठिया को पंजाब विजिलेंस विभाग ने गिरफ्तार किया। उन्होंने कहा कि इसी सिलसिले में आज पंजाब पुलिस और विजिलेंस विभाग देश के कई अलग-अलग राज्यों में छापेमारी का काम कर रही है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि बड़े ही अफसोस के साथ यह बात आप लोगों के साथ साझा कर रहा हूं, कि पंजाब पुलिस और विजिलेंस विभाग दिल्ली में भी इस बाबत सुबह से कई जगहों पर छापेमारी करना चाहती है। परंतु दिल्ली पुलिस जो की सीधे तौर पर केंद्र में बैठी भाजपा सरकार के अधीन आती है, वह दिल्ली पुलिस पंजाब पुलिस और विजिलेंस विभाग की छापेमारी में सहयोग नहीं कर रही है। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है, कि जानबूझकर पंजाब पुलिस और विजिलेंस विभाग की छापेमारी को दिल्ली में बाधित किया जा रहा है, ताकि इस मामले से जुड़े जो अन्य अपराधी हैं, वह लोग सबूतों को नष्ट कर सकें और पुलिस की गिरफ्त से बचकर निकल सकें। मीडिया के माध्यम से केंद्र सरकार से अपील करते हुए सौरभ भारद्वाज ने कहा, कि नशाखोरी एक ऐसा गंभीर मुद्दा है जो हमारी आने वाली नस्लों को, हमारी युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रहा है, ऐसे संवेदनशील मुद्दे पर केंद्र सरकार को राजनीति से ऊपर उठकर राज्य सरकारों का सहयोग करना चाहिए।

अंबेडकर नगर थाना पुलिस ने एक ड्रग तस्कर को भारी मात्रा में गांजे के साथ किया गिरफ्तार

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। दक्षिण जिला क्षेत्र में ड्रग पेडलर्स और आपूर्तिकर्ताओं के खिलाफ एक विशेष अभियान लगातार चलाया जा रहा है। इंस्पेक्टर मुनीश कुमार, एसएचओ/पीएस अंबेडकर नगर और इंस्पेक्टर नीरज कुमार एटीओ/पीएस अंबेडकर नगर के नेतृत्व में पीएस अंबेडकर नगर के कर्मचारियों को दिनेश शर्मा, एसीपी/सीआर पार्क के मार्गदर्शन में नारकोटिक्स ड्रग्स और प्रतिबंधित पदार्थों की आपूर्ति श्रृंखला को पकड़ने पर विशेष ध्यान देने के साथ अपराधियों की पहचान करने और उन्हें गिरफ्तार करने का काम सौंपा गया था। एएसआई पंकज राजोरा नंबर 2731/एसडी, एचसी योगेंद्र नंबर 1459/एसडी, एचसी संजीव 795/एसडी और सीटी से मिलकर बनी टीम। हरकेश नंबर 343/एसडी ने गुप्त मुखबिरों को सक्रिय किया और क्षेत्र में सक्रिय ड्रग आपूर्तिकर्ताओं के बारे में खुफिया जानकारी प्राप्त करने के लिए कर्मचारियों को क्षेत्र में तैनात किया गया। हरकेश नं. 343/एसडी थाना क्षेत्र में गश्त ड्यूटी पर थे। जब वे लक्ष्मी नारायण मंदिर, शमशान घाट रोड, मदनगीर गांव, अंबेडकर नगर, दिल्ली के पास पहुंचे, तो उन्होंने एक व्यक्ति को संदिग्ध हालत में देखा, जब पुलिस कर्मचारियों ने उसके पास जाकर देखा, तो उसने भागने की कोशिश की, लेकिन सतर्क कर्मचारियों ने उसे पकड़ने में कामयाबी हासिल की, जिसकी पहचान मनोज राम के रूप में हुई। वह एक बैग ले जा रहा था और बैग की जाँच करने पर, 11.386 किलोग्राम अवैध गांजा बरामद किया गया और उसे जब्त कर लिया गया। तदनुसार, एफआईआर संख्या 283/25 यू/एस 20 एनडीपीएस अधिनियम के तहत थाना अंबेडकर नगर में मामला दर्ज किया गया और आरोपी मनोज राम को पकड़ लिया गया। गिरफ्तार किए गए।

ग्लूकोमा की वजह से बचपन में होने वाले अंधेपन की रोकथाम के लिए प्रारंभिक आनुवंशिक जाँच की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : सैलफोर्ड यूनिवर्सिटी (यूके) ने सीएसआईआर-इंस्टीट्यूट ऑफ़ जीनोमिक्स और इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (सीएसआईआर-आईजीआईबी) और भारतीय दुर्लभ रोग संगठन (ओआरडीआई) के साथ मिलकर आज नई दिल्ली में "ग्लूकोमा के लिए उचित और प्रारंभिक आनुवंशिक देखभाल की ओर" शीर्षक से एक राष्ट्रीय वर्कशॉप की मेजबानी की। प्रेमास लाइफ़ साइंसेज और श्रॉफ आई हॉस्पिटल इस इवेंट के पार्टनर थे। इस इवेंट में प्रमुख चिकित्सक, वैज्ञानिक, आनुवांशिक परामर्शदाता, नीति अधिवक्ता, गैर-लाभकारी दानार्थ संस्थाएँ और मीडिया के प्रतिनिधि मिलकर एक साथ आए, और इसमें भारत में ग्लूकोमा के वंशानुगत रूपों के प्रबंधन में जल्द ही आनुवांशिक निदान की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

वर्कशॉप की शुरुआत सीएसआईआर-आईजीआईबी के निदेशक डॉ. सौविक मैती के स्वागत भाषण से हुई और इसमें प्रमुख विशेषज्ञों जिसमें प्रो. अरिजीत मुखोपाध्याय (सैलफोर्ड यूनिवर्सिटी), प्रो. बी.के. थेल्मा (दिल्ली विश्वविद्यालय) शामिल थे और साथ में पूरे भारत से आए हुए वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञों ने प्रेज़ेंटेशन दी।

इस इवेंट का मुख्य आकर्षण रिपल्स ऑफ़ लाइट का प्रीमियर था - जो 2023 में काफी तारीफ बटोर रही फ़िल्म विज़न ऑफ़ द ब्लाइंड लेडी का 12 मिनट का सीक्वल है। फ़िल्म में पहली स्क्रीनिंग के बाद से वास्तविक जीवन में होने वाली प्रगति को दिखाया गया है, जिसमें आनुवंशिक रूप से जोखिम वाले बच्चों में प्रारंभिक नैदानिक पहल शामिल है, जिनके अंधेपन को अब संभवतः टाला जा चुका है।

"डॉक्टर बीमारियों का इलाज करते हैं, मरीजों का नहीं, और मरीज़ों को यह चिंता रहती है कि क्या वे अंधे हो जाएँगे, या क्या उनके बच्चे बीमारी से सुरक्षित रहेंगे। हमें उनके दृष्टिकोण को समझने की आवश्यकता है" - डॉ. असीम सिल, चिकित्सा निदेशक, विवेकानंद मिशन आश्रम नेत्र निर्मया निकेतन, पश्चिम बंगाल।

ग्लूकोमा विश्व स्तर पर रिवर्स या ठीक न किए जा सकने वाले अंधेपन का प्रमुख कारण है और भारत की लगभग 1-2% आबादी इससे प्रभावित है। आनुवंशिक मामलों में, बच्चे जीवन के प्रारम्भिक चरण में ही अपनी दृष्टि खोना शुरू कर देते हैं, प्रायः बिना किसी प्रत्यक्ष लक्षण के। आनुवांशिक जाँच और सलाह की मदद से जल्द ही पता लगाने से रोग के प्रारंभिक चरण में ही समय पर पहल संभव हो सकती है, जिससे पूरी तरह से हो जाने वाले अंधेपन को रोका जा सकता है। हालाँकि, भारत में वर्तमान में नेत्र देखभाल में आनुवंशिक जाँच के लिए सुनियोजित नीति या बीमा सहायता का अभाव है।

"चाहे दुर्लभ हो या नहीं, हर बीमारी एक बोझ है। निवारक दवा से अनगिनत जीवन वर्ष बचाए जा सकते हैं। - प्रोफेसर बीके थेल्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय, साउथ कैंपस

दुर्लभ बीमारियों के मामले में, हर परिवार गरीब है। उन्हें रोकने का एकमात्र तरीका जागरूकता, वकालत और नीति परिवर्तन है। प्रसन्ना शिरोल, कार्यकारी निदेशक, ORDI

दिन का समापन इसकी नीति और समर्थन पर चर्चा के साथ हुआ, इसका उद्देश्य उचित, आनुवंशिकी-सूचित ग्लूकोमा देखभाल के लिए एक राष्ट्रीय कार्य योजना का ड्राफ्ट तैयार करना है। प्रतिभागियों ने सरकारी निकायों, चिकित्सा संस्थानों और नागरिक समाज को सहयोग करने का अनुरोध किया, ताकि आनुवांशिक जाँच को सभी के लिए सुलभ बनाया जा सके।

"सिर्फ एक ही उपाय है कि फिल्मों आदि के माध्यम से मरीजों में जागरूकता फैलाई जाए। उन्हें आनुवंशिक परीक्षण करवाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए ताकि ऐसी आनुवंशिक बीमारियों को रोका जा सके।" - डॉ. सुनीता दुबे, ग्लूकोमा सेवाओं की प्रमुख, श्रॉफ आई हॉस्पिटल, नई दिल्ली।

धूमधाम से सम्पन्न हुआ श्रीमहंत अच्युतानंद दास महाराज का वार्षिक तिरोभाव महोत्सव : डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

परिवहनविशेष न्यूज

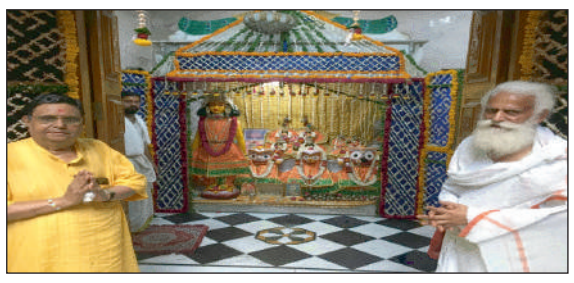

वृन्दावन। पत्थरपुरा स्थित श्रीगोपालजी मन्दिर (श्री माध्वगौड़ेश्वर आश्रम) में चल रहे अनन्तश्री विभूषित श्रीमहंत अच्युतानंद दास महाराज के 19वें त्रिदिवसीय वार्षिक तिरोभाव महोत्सव के तीसरे दिन पूज्य महाराजश्री की समाधि का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन किया गया। तत्पश्चात महामण्डलेश्वरों, श्रीमहंतों व महंतों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर समस्त भक्तों-श्रृद्धालुओं को अपने आशीर्वचन देते हुए श्रीगोपालजी मन्दिर (श्री माध्वगौड़ेश्वर आश्रम) के अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज ने कहा कि मानव जीवन में सत्संग की अपार महिमा है।प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन को धन्य और सार्थक बनाने के लिए इसका आश्रय लेता है।सत्संग के बिना जीवात्मा का परमात्मा से मिलन असंभव है।इसके लिए मनुष्य संतों की ही शरण लेता है।

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते और नदी अपना पानी स्वयं नहीं पीती, उसी प्रकार संत भी अपनी साधना का फल मानव कल्याण में ही लगाते हैं। पृथ्वी पर इनका प्रादुर्भाव केवल परोपकार के लिए ही होता है।

महोत्सव में श्रीहित बड़ा रासमण्डल के श्रीमहंत लाड़िली शरण महाराज, चतुः संप्रदाय के श्रीमहंत फूलडोल बिहारीदास महाराज, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. सत्यानंद सरस्वती महाराज (अधिकारी गुरूजी), श्रीराधा उपासना कुंज के महंत संतदास महाराज, कलाधारी आश्रम के महंत जयराम दास महाराज, महंत दंपति शरण महाराज (काकाजी), महंत श्याम सुन्दर दास महाराज, संत रसिक माधव दास महाराज, भागवताचार्य डॉ. हरे कृष्ण शरद, महंत सुंदरदास महाराज, आचार्य गोपाल भैया, मुनेश कुमार शर्मा (राम गुरु), महंत लाड़िली दास महाराज, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।महोत्सव का समापन संत ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें असंख्य व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

श्रीपरशुराम शोभायात्रा समिति ने किया डॉ. गोपाल चतुर्वेदी का सम्मान

परिवहन विशेष न्यूज

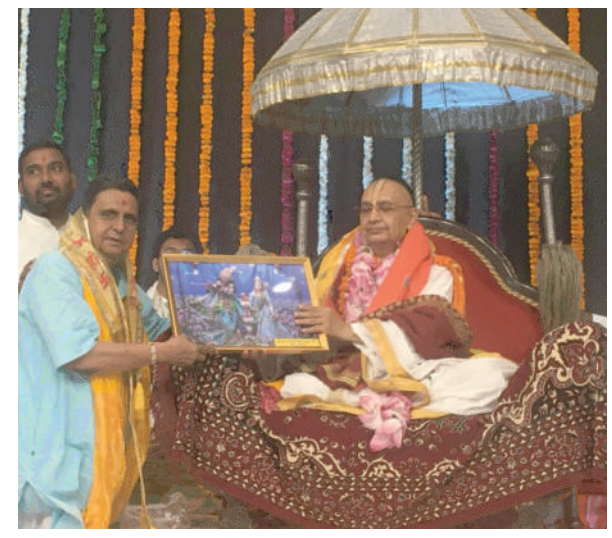

वृन्दावन। श्रीपरशुराम शोभायात्रा समिति के द्वारा नगर के प्रख्यात साहित्यकार, अध्यात्मविद, पत्रकार एवं समाजसेवी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी,एडवोकेट का उनके द्वारा की गई अविस्मरणीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।साथ ही उन्हें ₹विप्र गौरव सम्मान₹ से अलंकृत किया गया।उन्हें यह सम्मान श्रीपरशुराम शोभायात्रा समिति के मुख्य संयोजक पण्डित आशीष गौतम (चिंटू), एडवोकेट और समिति के अध्यक्ष पण्डित धर्मेंद्र गौतम (लीला) ने संयुक्त रूप से प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके प्रदान किया।साथ ही प्रभु से उनके स्वस्थ, उज्ज्वल व सुखद जीवन की मंगल कामना की।

इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा के जिलाध्यक्ष इंजीनियर राजकुमार शर्मा, सुभाष गौड़ (लाला पहलवान), पण्डित सत्यभान शर्मा, पण्डित चन्द्रलाल शर्मा (गुरूजी), पार्षद राधाकृष्ण पाठक, संत रामदास महाराज, प्रमुख समाजसेवी विष्णु शर्मा, डॉ. केशवाचार्य महाराज, पण्डित योगेश द्विवेदी, डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य आनंद बल्लभ गोस्वामी, दिनेश शर्मा फलाहारी, प्रमोद गौतम, ईश्वरचंद्र रावत, महेश भारद्वाज आदि के अलावा विप्र समाज के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

कानपुर की अदालत से भगोड़ा घोषित अनिल बाली की तलाश में जुटी गोविंद नगर पुलिस

सुनील बाजपेई

कानपुर। लगातार समन वारंट के बाद भी पेश नहीं होने पर अभियुक्त अनिल कुमार बाली को यहां के न्यायिक मजिस्ट्रेट, चतुर्थ की अदालत ने फरार घोषित कर दिया है।

यह मामला यहां के गोविंद नगर थाना क्षेत्र से संबंधित है ,जहां अनिल कुमार वाली पुत्र स्व. राजेन्द्र बाली निवासी-10/4, लेबर कालोनी, दादा नगर के खिलाफ 158/22, धारा-406/ 420/467 /468/471/120बी आईपीसी में दर्ज मुकदमा न्यायिक मजिस्ट्रेट, चतुर्थ की अदालत में विचाराधीन है।

इस मुकदमे की विवेचक दादा नगर चौकी प्रभारी गीता सिंह ने बताया कि लगातार सम्मन वारंट के बाद भी पेश नहीं होने की वजह से न्यायालय ने अभियुक्त अनिल कुमार वाली पुत्र स्व.राजेन्द्र बाली निवासी-10/4, लेबर कालोनी, दादा नगर को भगोड़ा यानी फरार घोषित किया है।

विवेचक चौकी प्रभारी गीता सिंह ने बताया कि गत 26 जून को अभियुक्त अनिल कुमार बाली के खिलाफ मु0अ0सं0-158/22, धारा-406/ 420/ .467/468/471/120 बी आई पी सी के मामले में धारा 82 की उद्घोषणा आदेश के 01 माह के भीतर न्यायालय के समक्ष हाजिर नहीं होने पर उसके खिलाफ अब धारा 209 बीएनएस के तहत अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही की जायेगी।फिलहाल इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार सिंह की अगुवाई वाली यहां की गोविंद नगर पुलिस भी अदालत द्वारा भगोड़ा घोषित किए गए अभियुक्त अनिल कुमार बाली की तलाश में लगातार जुटी हुई है।

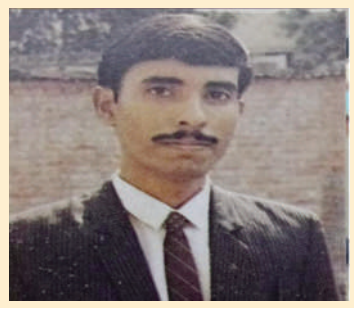

उजालों की बात करना कोई गुनाह नहीं , बल्कि ' सरल' सा 'हक़' बनता है।

साहित्य के क्षेत्र में लिखने के लिए शब्दों के कितने स्रोत मान सकते हैं। यह तय नहीं है क्योंकि , विचारों की कल्पना में गोता लगाकर किसी शब्द रूपी कुछ कीमती नगीने निकल कर लाना और एकाग्रता का तालमेल बिठाकर किसी विषय वस्तु की परिणीति के साथ जब रचना संसार में रचना का जन्म होता है तो उसकी अनुभूति की अनुभूति करना एक अलग ही अनुभूति करवाता है । यह इसलिए कह रहा हूं कि साहित्य सुधा के जिस बिंदु को संजय परसाई ₹ सरल ₹ ने जीस सहजता के साथ साहित्य के क्षेत्र में लिखने का अपना जो हक अदा किया है उसे हक की वजह से आज संजय परसाई सरल का काव्य संग्रह ₹ हक ₹ हमारे हाथों में है जिसको पढ़ना अत्यंत जरूरी है क्योंकि , विभिन्न विषयों को छुती हुई कविता को हम अपने समीक्षात्मक रूपी पारखी नजरों से इस कसौटी पर कसकर देखना चाहते हैं की , यह कितना कितना खरा उतर पाया है ।कुल जमा 58 कविताओं में रतलामी संस्कृति के साथ कुछ साहित्यीक परंपराओं की गति को किसी समाधान के रूप में 90 पेज में अपनी बात कही है ।

जब रचनाकार किसी विषय , विचारों के हक़ को लेकर किसी बिंदु तक अपनी तालमेल बनाएं रखता है तब तक रचना का सृजन होता रहता है । रचनाकार का साहित्यिक हक़ जब अपनी ईमानदारी से अदा करता है तो वह किसी संग्रह के रूप में हमारे सामने आता है इसीलिए संजय परसाई सरल का काव्य संग्रह जिस हक़ के अंदाज में लिखा गया उसको पढ़कर ईमानदारी से समीक्षात्मक टिप्पणी का हक़ निभाना पड़ेगा। रचनाकार का देश , समाज , व्यक्ति , परिवार के प्रति समर्पण का भाव हक़ काव्य संग्रह में दिखाई दे रहा है। हर प्रश्न पर सांसों की कीमत हम हर ज़वाब से चूका रहें हैं , तम की दीवार को हटाते हुए तोड़ते हुए उजालों की बात करना कोई गुनाह नहीं है । हमारे जीवन में अगर मां नहीं होती तो इसकी चिंता में हम नया सवेरा कैसे देख पाते । यें मां ही है जो रिश्तो के धागे बताती हुई समय के दौर को दिखाती हुई पूर्णतया निस्वार्थ समर्पण की भावना से कुछ सपने , कुछ प्रश्न , कुछ रिश्तो के जाल और साजिशों के पुल , कुछ प्रहार दीमक की तरह हमें दिखाती है और इस बात को इंगित करती है कि हमें सहजता के साथ , सावधानी के साथ हमें कब , कहां , किस वक्त , क्या करना है और इशारों के साथ अपनी इबादतों में होमवर्क की तरह जीवन का पाठ सुनाती है क्योंकि , बच्चे बड़े हो रहे हैं । बच्चे बड़े हो गए हैं उन्हें बताना है कि ,

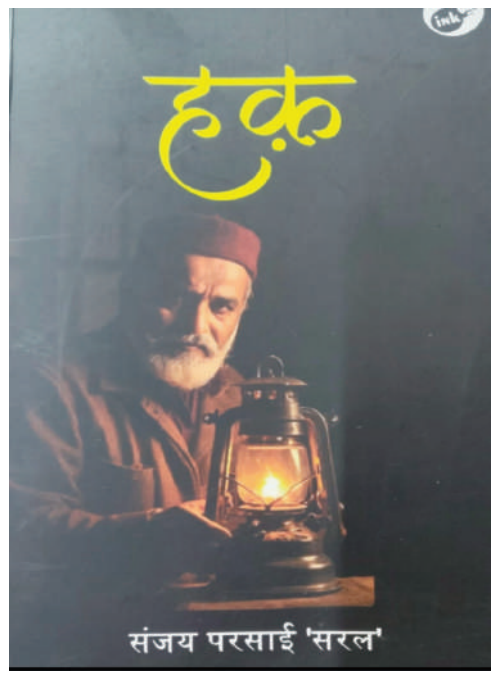

घड़ी की टिक टिक करती आवाज को संवाद बनाकर समर्पण के भाव से सरल व सहज होकर पत्नी , पुत्री , परिवार के लिए समय के साथ कैसे रहा जाता है । जब कोई रचनाकार किसी रचना का सृजन करता है तो वह आपका , हमारा या किसी नजदीक या फिर दिल से जुड़े उसे व्यक्ति का भी अनमोल समय चुराकर समर्पण भाव से रचनात्मक रचना का एक संसार 58 कविताओं में बसा कर वह खुद वक्त और परिस्थिति के साथ किसी पत्र में ढलकर , संवाद बनकर पाठकों की बीच पहुंचता है तो वहां संजय परसाई सरल सरल रूप में दिखाई देते हैं । सांसों की कीमत जैसी कविताओं के माध्यम से पाती बनकर कुछ संदेशों को उजागर करके कसौटी पर खरा उतरना कोई सरल काम नहीं लेकिन लेखक ने अपने लेखनी अंदाज में इसको सरल तरीके से सरल करके इस काव्य संग्रह को शब्दों के रूप में पाठकों तक पहुंचाना एक छोटा सा प्रयास है जो विभिन्न विषयों को छुती हुई कविता हमारे हृदय पर अंकित की गई है । इस हक़ काव्य संग्रह में संजय परसाई सरल की शब्दावली भी सरल है इसलिए यह किसी अनमोल उपहार से काम नहीं है । जिस तरह काव्य सृजन की यात्रा में कोई लेखक अपना हक अदा करता है ठीक उसी तरह अंधेरे में लेखक लालटेन लेकर आने जाने वाले को अंधेरी राहों में रोशनी दिखता है । ऐसे ही कई संदेशों को देने वाला काव्य संग्रह ₹ हक़ ₹ वाकई एक ₹ हक ₹ है जिसे लेखक ने पूर्ण ₹ हक़ ₹ के साथ लिखा है ।अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी पर यही कहना चाहता हूं कि हर चीज समय के साथ वह रिटायरमेंट होती है और उसका वह बदला हुआ स्वरूप हमारे सामने आता है तो हम एक समाधान के रूप में , इम्यूनिटी के रूप में प्राप्त करके सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहते हैं ।

मैं अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी पर विचारों का फैसला पाठकों की अदालत में छोड़ता हूं क्योंकि जब मैंने इस हक काव्य संग्रह को पड़ा तो मैं इस विषय में बहुत कुछ कह सकता हूं लेकिन , मैं अपनी बात बता दूंगा तो शायद रहस्य खत्म हो जाएगा अगर आप किसी शब्द का , किसी कविता का , किसी विचार का , किसी कल्पनाओं का , किसी संकेत का , किसी संवाद का , किसी उद्देश्य का रहस्य जानना है तो वह इन कविताओं को अपने साहित्यिक हक से पढ़कर प्रतिक्रिया स्वरूप पूर्ण हक से लेखक के पक्ष में अपनी बात कर सकते हैं और समझा सकते है क्योंकि आज के दौर में यह काव्य संग्रह हमारे साथ कितना कितना सफल होता है ? यह में आप सुधी पाठकों के बीच छोड़ता हूं ।

प्रकाश हेमावत

श्रीहरि कौशल सांवरिया चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के द्वारा अष्ट दिवसीय श्रीगुरु पूर्णिमा महोत्सव 03 जुलाई से

परिवहन विशेष न्यूज

महोत्सव में प्रख्यात भागवत प्रवक्ता श्रीहरि वर्षा कौशल श्रवण कराएंगी श्रीमद्भागवत कथा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रुक्मणी विहार-बसेरा बैकुंठ स्थित श्रीकृष्णाश्रय में श्रीहरि कौशल सांवरिया चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के द्वारा बैकुंठवासी हरि कौशल महाराज की पावन स्मृति में अष्ट दिवसीय श्रीगुरु पूर्णिमा महोत्सव 03 से 10 जुलाई 2025 पर्यन्त विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा।

जानकारी देते डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत 03 से 09 जुलाई 2025 पर्यन्त सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ का आयोजन होगा।जिसमें अपराह्न 03 बजे से हरि इच्छा तक प्रख्यात भागवत प्रवक्ता श्रीहरि वर्षा कौशल अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा समस्त भक्तों-श्रृद्धालुओं को श्रीमद्भागवत की अमृतमयी कथा श्रवण कराएंगी।

उन्होंने बताया कि 10 जुलाई को गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में प्रातः 10 बजे से वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य गुरु पूजन होगा।साथ ही सरस भजन संध्या का आयोजन होगा।जिसमें प्रख्यात भजन गायक उमेश सांवरा (आगरा) व श्याम सुन्दर ब्रजवासी ठाकुर श्रीराधा-कृष्ण की महिमा से ओतप्रोत भजनों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन करेंगे।तत्पश्चात हवन व संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आदि के कार्यक्रम भी संपन्न होंगे।

पर्यावरणनाशेन नश्यन्ति सर्वजन्तवः। पवनः दुष्टतां याति प्रकृतिविकृतायते।। जब पर्यावरण का नाश होता है, सभी जीव जंतु नष्ट ,प्रकृति विकृत हो जाती है

विश्व के हर मानवीय जीव को सिंगल यूज़ प्लास्टिक को त्यागने का संकल्प लेकर पृथ्वी पर सभी जीवों की रक्षा करने में सहयोग देना ज़रूरी-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर वर्तमान बदलते परिपेक्षमें हम अति तीव्र गति से विकास तो कर रहे हैं, परंतु ठीक उसी अंदाज में ही हमारे लिए पर्यावरण नुकसान के रूपमें परेशानियां, विभिशक्ता, नुकसान की खाई भी बढ़ती जा रही है इसीलिए बड़े बुजुर्गों वह बुद्धिजीवियों ने कहा है कि आधुनिक सुख सुविधाओं का उपयोग लेने से पहले उनके विपरीत परिणाम के बारे में भी ध्यान रखें, मैं एडवोकेट किशन सनमुख दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र, ऐसा मानता हूं कि अच्छे इरादों और ढेर सारे नियमों के बावजूद प्लास्टिक के खिलाफ भारत की जंग को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन कुछ उत्साहजनक संकेत मिल रहे हैं जो यह बताते हैं कि यह लड़ाई अभी हारी नहीं है। तथ्य यह है कि प्लास्टिक अपशिष्ट को नियंत्रित करने वाला नियामक ढांचा, यद्यपि व्यापक है, तथापि अस्पष्ट परिभाषाओं और छूटों को संबोधित करने के लिए सुधार की आवश्यकता है, जो वर्तमान में प्रवर्तन को कठिन बनाते हैं।संस्कृतिक श्लोकों में भी आया है पर्यावरणनाशेन नश्यन्ति सर्वजन्तवः।पवनः दुष्टतां याति प्रकृतिविकृतायते । हिंदी अर्थः- हमारे पर्यावरण के प्रदूषण (विनाश) के कारण सभी प्राणी नष्ट हो जाते हैं, हवाएं ख़राब हो जाती हैं और प्रकृति शत्रुतापूर्ण हो जाती है। आज विषय आज इस विषय पर हम चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 3 जुलाई 2025 को प्लास्टिक बैग मुक्ति दिवस है,इसलिए आज हम चिन्हित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं से पर्यावरण को होने वाले दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए इसके उपयोग को खुद भी रोकना है और पूरे विश्व को इसके लिए जनजागृत करने में प्रभावी जनभागीदारी पर इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम सिंगल यूज़ प्लास्टिक और प्लास्टिक बैग के दुष्प्रभावों के बारे में जानने की करें तो, प्लास्टिक बैग के बारे में 5 तथ्य (1)प्लास्टिक की थैलियों को विघटित होने में 100 से 500 वर्ष लगते हैं।(2) हम हर साल 5 ट्रिलियन प्लास्टिक बैग बनातेहैं।(3) औसत व्यक्ति एक प्लास्टिक बैग का उपयोग 25 मिनट तक करता है। (4) दुनिया भर में हर मिनट हम 10 लाख प्लास्टिक बैग का उपयोग करते हैं। (5) प्लास्टिक थैलियों के कारण हर वर्ष लगभग 1,00,000 समुद्री जीव मारे जाते हैंपर्यावरण के लिए हानिकारक होने के अलावा, प्लास्टिक बैग भी खराब तरीके से डिजाइन किए जाते हैं और शायद ही कभी उनका पुनर्चक्रण किया जाता है। प्लास्टिक बैग हमारे ग्रह के लिए एक बड़ी समस्या बने हुए हैं। हर साल, 8 मिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक समुद्र में जाकर मछलियों और वन्यजीवों को नुकसान पहुंचाता है। जब प्लास्टिक खाद्य श्रृंखला में प्रवेश करता है, तो यह मानव स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचा सकता है।

साथियों बात अगर हम कुछ देशों द्वारा सिंगल यूज़ प्लास्टिक व बैगों के दुष्प्रभाव पर स्वतंत्र संज्ञान लेकर सख्त कदम उठाने की करें तो,कुछ स्थानों पर किसी भी तरह के प्लास्टिक बैग के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा दिया गया है या नियम लागू किए गए हैं। ये उपाय करने वाले स्थानों में हवाई, उत्तरी कैरोलिना, इटली, चीन, अफ्रीका के कई देश और ऑस्ट्रेलिया और भारत शामिल हैं। कुल मिलाकर, लगभग 127 देश किसी न किसी तरह से प्लास्टिक बैग को नियंत्रित करते हैं। इन नियमों में प्लास्टिक बैग को चरणबद्ध तरीके से खत्म करना और दोबारा इस्तेमाल किए जा सकने वाले बैग के लिए प्रोत्साहन देना भी शामिल है। ज़्यादातर लोग प्लास्टिक बैग का इस्तेमाल सिर्फ़ एक बार करते हैं और फिर उसे फेंक देते हैं।सिंगल -यूज़ प्लास्टिक बैग ने कुछ शहरों को इन पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने के लिए प्रेरित किया है। जिन जगहों पर डिस्पोजेबल प्लास्टिक शॉपिंग बैग पर प्रतिबंध लगाया गया है।

साथियों बात अगर बिगड़ती पर्यावरण की स्थिति बिगड़ने की करें तो इससे होने वाले दुष्परिणामों पर वैश्विक स्तरपर रेखांकित किया जा रहा है और उनके अंतरराष्ट्रीय मंचों से पर्यावरण सुरक्षा संबंधी उपायों पर एकीकृत विचारों का संयोजन हो रहा है दुनिया के देशों से कार्बन उत्सर्जन की मात्रा शून्य करने के बारे में कहा जा रहा है जिसमें पेरिस समझौता महत्वपूर्ण उदाहरण है इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ही,पीआईबी के अनुसार ,चौथी संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा में, भारत ने एकल उपयोग वाले प्लास्टिक उत्पादों के प्रदूषण से निपटने के लिए एक प्रस्ताव रखा था, जिसमें वैश्विक समुदाय द्वारा इस बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने की तत्काल आवश्यकता को स्वीकार किया गया था। यूएनईए 4 में इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जाना एक महत्वपूर्ण कदम था। मार्च 2022 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा के हाल ही में संपन्न पांचवें सत्र में, भारत प्लास्टिक प्रदूषण के खिलाफ वैश्विक स्तरपर कार्रवाई शुरू करने के संकल्प पर आम सहमति विकसित करने के लिए सभी सदस्य देशों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ा।

साथियों बात अगर हम भारत की करें तो, पर्यावरण,वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 16फरवरी, 2022 को प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2022 के रूप में प्लास्टिक पैकेजिंग पर विस्तारित उत्पादकों की जिम्मेदारी पर दिशा-निर्देशों को भी अधिसूचित किया है। विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) दरअसल उत्पाद की शुरुआत से अंत तक उसके पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर प्रबंधन के लिए एक उत्पादक की जिम्मेदारी होती है। ये दिशा-निर्देश प्लास्टिक पैकेजिंग कचरे की चक्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, प्लास्टिक पैकेजिंग के नए विकल्पों के विकास को बढ़ावा देने और कारोबारी जगत द्वारा टिकाऊ प्लास्टिक पैकेजिंग के विकास की दिशा में कदम बढ़ाने से संबंधित रूपरेखा मुहैया कराएंगे।

साथियों बात अगर हम प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम 2021 की करे तो इसके अंतर्गत 75 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक कैरी बैग के निर्माण, आयात, संग्रहण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर 30 सितंबर 2021 से और 120 माइक्रोन से कम मोटाई वाले इस सामान पर 31 दिसंबर, 2022 से प्रतिबंध लगाया गया है। जिसमें हाल ही में संशोधन कर 150 माइक्रोन कर दिया गया है।

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम के आह्वान की करें तो, उन्होंने 2022 तक एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं को समाप्त करने के लिए दिए गए स्पष्ट आह्वान के अनुरूप, भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 12 अगस्त 2021 को प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2021 को अधिसूचित किया। आजादी का अमृत महोत्सव की भावना को आगे बढ़ाते हुए, देश द्वारा कूड़े एवं अप्रबंधित प्लास्टिक कचरे से होने वाले प्रदूषण को रोकने के उद्देश्य से एक निर्णायक कदम उठाया जा रहा है। भारत 1 जुलाई, 2022 से पूरे देशमें चिन्हित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं, जिनकी उपयोगिता कम और प्रदूषण क्षमता अधिक है, के निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाएगा।

साथियों बात अगर हम सिंगल यूज़ उपयोग वाली वस्तुओं के उपयोग पर प्रतिबंध की सूची की करें तो भारत सरकार ने, सिंगलयूज़ प्लास्टिकसे उत्पन्न कचरेसे होने वालेप्रदूषण को कम करने के लिए ठोस कदम उठाए हैं। प्रतिबंधित वस्तुओं की सूची में ये वस्तुएं शामिल हैं- प्लास्टिक स्टिक वाले ईयर बड, गुब्बारों के लिए प्लास्टिक स्टिक, प्लास्टिक के झंडे, कैंडी स्टिक, आइसक्रीम स्टिक,सजावट के लिए पॉलीस्टा इनिन (थर्मोकोल), प्लास्टिक की प्लेट, कप, गिलास, कटलरी, कांटे, चम्मच, चाकू, स्ट्रॉ, ट्रे, मिठाई के डिब्बों को रैप या पैक करने वाली फिल्म, निमंत्रण कार्ड, सिगरेट के पैकेट, 100 माइक्रोन से कम के प्लास्टिक या पीवीसी बैनर,स्टिरर।

साथियों बात अगर हम नियमों को ठोस कार्रवाई के माध्यम से लागू करने की करें तो, 1 जुलाई 2022 से चिन्हित एसयूपी वस्तुओं पर प्रतिबंध को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय नियंत्रण कक्ष स्थापित किये जायेंगे तथा प्रतिबंधित एकल उपयोग प्लास्टिक के अवैध निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री एवं उपयोग की निगरानी के लिए विशेष प्रवर्तन दल गठित किये जायेंगे। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को किसी भी प्रतिबंधित एकल उपयोग वाली प्लास्टिक की वस्तुओं के अंतर-राज्य परिवहन को रोकने के लिए सीमा जांच केंद्र स्थापित करने के लिए कहा गया है। सरकार एकल उपयोग वाली प्लास्टिक को समाप्त करने के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न उपाय कर रही है। जागरूकता अभियान में उद्यमियों और स्टार्ट अप्स, उद्योग, केंद्रीय, राज्य और स्थानीय सरकारों नियामक निकायों, विशेषज्ञों, नागरिक संगठनों, अनुसंधान एवं विकास और अकादमिक संस्थानों को एकजुट किया गया है।

साथियों सीपीसीबी शिकायत निवारण ऐप, नागरिकों को प्लास्टिक से जुड़ी समस्या से निपटने में मदद हेतु सशक्त बनाने के लिए शुरू किया गया है। समुद्री पर्यावरण सहित स्थलीय और जलीय इकोसिस्टम पर एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के प्रतिकूल प्रभावों को वैश्विक स्तर पर पहचाना गया है। एकल उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के कारण होने वाले प्रदूषण को दूर करना सभी देशों के लिए एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौती बन गया है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि जब पर्यावरण का नाश होता है, सभी जीव जंतु नष्ट, प्रकृति विकृत हो जाती है।अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्ति दिवस 3 जुलाई 2025- सिंगल यूज़ प्लास्टिक के भयंकर नकारात्मक परिणामों व पर्यावरण प्रदूषण को रेखांकित करना ज़रूरी,विश्व के हर मानवीय जीव को सिंगल यूज़ प्लास्टिक को त्यागने का संकल्प लेकर पृथ्वी पर सभी जीवों की रक्षा करने में सहयोग देना ज़रूरी हैं।

15 जुलाई को होगी लॉन्च किआ कैरेन क्लेविस ईवी; 490km देगी रेंज, टीजर में दिखी पहली झलक

परिवहन विशेष न्यूज

किआ ने अपनी नई इलेक्ट्रिक MPV Carens Clavis EV का टीजर जारी किया है जो 15 जुलाई को भारत में लॉन्च होगी। इसका डिजाइन पेट्रोल और डीजल वर्जन जैसा ही है लेकिन इसमें कई नए फीचर्स और 490 किमी तक की रेंज मिलेगी। इसमें डुअल 12.3-इंच स्क्रीन पैनोरमिक सनरूफ और लेवल-2 ADAS जैसे फीचर्स मिलेंगे। Carens Clavis EV की कीमत 16 लाख रुपये से शुरू हो सकती है।

नई दिल्ली। Kia ने हाल ही में अपनी MPV Carens Clavis को भारतीय बाजार में लॉन्च किया है। अब कंपनी इसका इलेक्ट्रिक वर्जन लेकर आने वाली है। कंपनी ने Carens Clavis EV का पहला टीजर भी जारी कर दिया है। इसे भारत में 15 जुलाई को भारत में लॉन्च किया जाएगा। आइए जानते हैं कि किआ कैरेंस क्लाविस ईवी में क्या कुछ देखने के लिए मिलेगा?

कैसा होगा डिजाइन?

Kia Carens Clavis EV इसका डिजाइन काफी हद तक पेट्रोल और डीजल वर्जन जैसा ही रखा गया है। इसके आगे की तरफ 3-पॉड हेडलैम्प्स, त्रिकोणीय शेप में LED DRLs, ब्लैंक ग्रिल दिया गया है। इसके आगे तरफ ही चार्जिंग फ्लैप दिया गया है। इसके बंपर पर पिक्सल-शेप फॉग लैम्प्स और मिनिमलिस्टिक स्टाइल दिया गया है। साइड प्रोफाइल भी पेट्रोल-डीजल वर्जन जैसा ही है। इसमें व्हील आर्च और लोअर डोर पर ब्लैक क्लैडिंग दी गई है। इसमें नए एरोडायनामिक अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। Carens Clavis EV के पीछे की तरफ कनेक्टेड LED टेल लाइट्स दी गई है और बम्पर को रग्ड लुक देने के लिए क्रोम एक्सेंट्स जोड़े गए हैं।

कितना अलग होगा इंटीरीयर?

Kia Carens Clavis EV का लेआउट और 7-सीटर अरेंजमेंट पेट्रोल-डीजल वर्जन जैसा ही है। इसका डैशबोर्ड का कलर स्कीम ब्लैक और व्हाइट है। सेंटर कंसोल को फिर से डिजाइन किया गया है। इसमें से गियर सिलेक्टर हटा दिया गया है, यहां पर स्लाइडिंग ट्रे दी गई है।

कितनी मिलेगी रेंज?

Kia Carens Clavis EV के टीजर में बताया गया है कि इसमें मिलने वाली बैटरी फुल चार्ज होने के बाद 490 किमी तक की ड्राइविंग रेंज देगी। अभी इसकी बैटरी पैक और इलेक्ट्रिक मोटर की डिटेल्स शेयर नहीं की गई है।

फीचर्स और सेफ्टी

इस इलेक्ट्रिक MPV में कई प्रीमियम फीचर्स मिल सकते हैं। इसमें डुअल 12.3-इंच स्क्रीन, पैनोरमिक सनरूफ, वायरलेस फोन चार्जर, ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल, वेंटिलेटेड और पावर्ड फ्रंट सीट्स, प्रीमियम साउंड सिस्टम जैसे फीचर्स मिलने की उम्मीद है।

इसमें पैसेंजर की सेफ्टी के लिए 6 एयरबैग्स स्टैंडर्ड, इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक विद ऑटो होल्ड, 360-डिग्री कैमरा, ब्लाइंड स्पॉट मॉनिटरिंग, फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर्स, चारों व्हील्स पर डिस्क ब्रेक्स और लेवल-2 ADAS जैसी सुविधाएं दी जा सकती है।

कितनी होगी कीमत?

Kia Carens Clavis EV की एक्स-शोरूम कीमत 16 लाख रुपये से शुरू हो सकती है। भले ही डायरेक्ट कोई MPV राइवल फिलहाल EV सेगमेंट में नहीं है, लेकिन इसक मुकाबला Hyundai Creta Electric, MG ZS EV, Tata Curvv EV और आने वाली Maruti e-Vitara जैसी कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs से देखने के लिए मिल सकता है।

Kia Carens Clavis EV की एक्स-शोरूम कीमत 16 लाख रुपये से शुरू हो सकती है। भले ही डायरेक्ट कोई MPV राइवल फिलहाल EV सेगमेंट में नहीं है, लेकिन इसक मुकाबला Hyundai Creta Electric, MG ZS EV, Tata Curvv EV और आने वाली Maruti e-Vitara जैसी कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs से देखने के लिए मिल सकता है।

विदा वीएक्स2 इलेक्ट्रिक स्कूटर भारत में लॉन्च; 142kms तक की देगा रेंज, कीमत पेट्रोल स्कूटर से भी कम

परिवहन विशेष न्यूज

हीरो के इलेक्ट्रिक ब्रांड VIDA ने भारतीय बाजार में VIDA VX2 लॉन्च किया है। यह दो वेरिएंट VX2 Go और VX2 Plus में उपलब्ध है। कंपनी ने इसे बैटरी-एज़-ए-सर्विस मॉडल के साथ पेश किया है जिसमें ग्राहक पे-पर-किलोमीटर प्लान के तहत इस्तेमाल कर सकते हैं। VX2 Plus में 4.3-इंच TFT और VX2 Go में LCD स्क्रीन है। बैटरी 60 मिनट में 80% तक चार्ज हो जाती है।

नई दिल्ली। हीरो की इलेक्ट्रिक ब्रांड VIDA ने भारतीय बाजार में VIDA VX2 को लॉन्च कर दिया है। इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है। वहीं, इसकी कीमत भी बाकी इलेक्ट्रिक स्कूटर ही नहीं, बल्कि पेट्रोल स्कूटर से भी कम है। इसे दो वेरिएंट VX2 Go और VX2 Plus में भारत में लॉन्च किया गया है। आइए इस इलेक्ट्रिक स्कूटर के बारे में विस्तार में जानते हैं।

VIDA VX2 की कीमत

कंपनी ने इसे बैटरी-एज़-ए-सर्विस (BaaS) मॉडल के साथ पेश किया गया है। इसकी वजह से आप 'पे-पर-किलोमीटर' प्लान के तहत इसे इस्तेमाल कर सकते हैं यानी आप सिर्फ इस्तेमाल किए गए किलोमीटर के हिसाब से भुगतान करेंगे, जिसकी शुरुआत केवल 0.96 रुपये प्रति किमी से होती है। इस मॉडल के तहत ग्राहक बिना बैटरी के स्कूटर खरीदें। इसमें ग्राहकों को काफी फायदा मिलेगा। कंपनी की तरफ से कहा गया है कि अगर बैटरी की परफॉर्मेंस 70% से नीचे जाने पर मुफ्त रिप्लेसमेंट और सब्सक्रिप्शन अवधि के दौरान VIDA के देशव्यापी फास्ट-चार्जिंग नेटवर्क का एक्सेस मिलेगा।

VIDA VX2 के फीचर्स

इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें रिमोट इमोबिलाइज़ेशन और क्लाउड कनेक्टिविटी सुरक्षा के लिए दिया गया है। इसके VX2 Plus में 4.3-इंच की TFT स्क्रीन और VX2 Go में 4.3-इंच की LCD स्क्रीन दी गई है। यह स्क्रीन टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन से लैस है। इसमें स्मार्टफोन इंटीग्रेशन से राइड डेटा और FOTA अपडेट्स मिलते हैं। इसकी बैटरी महज 60 मिनट में 80% तक चार्ज हो जाती है।

VIDA VX2 का डिजाइन

इसका डिजाइन काफी अट्रैक्टिव है। इसे सात नए कलर ऑप्शन में लेकर आया गया है। इसपर दो लोगों के आराम से बैठने के लिए इसमें एक लंबी और आरामदायक सीट दी गई है। इसके साथ ही सेगमेंट में सबसे चौड़े 12 इंच के पहिए दिए गए हैं। VX2 Go में 33.2 लीटर का बड़ा बूट स्पेस दिया गया है। वहीं, बैटरी हटाने पर एक एक फुल-फेस हेलमेट आसानी से आ सकता है। हीरो ने 5 साल या 50,000 किलोमीटर की कॉम्प्रेहेंसिव वारंटी और 3,600+ चार्जिंग पॉइंट्स के साथ एक मजबूत इकोसिस्टम का भी वादा किया है।

रूस में बर्फ हटाने का अनोखा तरीका, MiG-15 फाइटर जेट इंजन का किया जा रहा इस्तेमाल

रूस में बर्फ हटाने का एक अनोखा तरीका अपनाया जा रहा है। यहाँ पुराने मिग-15 फाइटर जेट के इंजनों को ट्रकों पर लगाकर सड़कों और एयरपोर्ट के रनवे से बर्फ हटाई जा रही है। इन शक्तिशाली इंजनों को संशोधित करके इस्तेमाल किया जा रहा है जिससे तेज हवा के प्रवाह से बर्फ को आसानी से हटाया जा सके। यह तकनीक समय और मेहनत दोनों बचाती है।

नई दिल्ली। रूस में एक अनोखी तकनीक से बर्फ हटाने का नया तरीका सामने आया है। यहां पर पुराने MiG-15 फाइटर जेट्स के इंजनों को ट्रकों पर लगाकर बर्फ को रास्तों से हटाया जा रहा है। यह तरीका उन जगहों पर इस्तेमाल किया जा रहा है, जहां पर भारी बर्फबारी होती है। इन पावरफुल इंजनों के बर्फ हटाने के काम में लगाने से पहले रिवाइज किया गया है, जो तेज हवा के प्रवाह से बड़ी मात्रा में बर्फ को आसानी से हटा सकें। इसकी खास बात यह है कि यह तकनीक एयरपोर्ट के रनवे से बर्फ को क्लीन करने में काफी फायदेमंद साबित हो रही है। आइए जानते हैं कि MiG-15 फाइटर जेट्स के पुराने इंजन का किस तरह से बर्फ हटाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है।

MiG-15 फाइटर जेट्स का बर्फ हटाने में इस्तेमाल

MiG-15 जैसे पुराने लड़ाकू विमानों के इंजन, जिनका इस्तेमाल अब नहीं किया जा रहा था। रूस ने इनका इस्तेमाल अब नए रूप में कर रही है। इन इंजनों को वहां पर ट्रकों पर फिट करके बर्फ हटाने के लिए किया जा रहा है। ट्रकों पर लगे इन जेट इंजनों को जब स्टार्ट किया जाता है, तो वह काफी तेज हवा जनरेट करते हैं। यह तेज वहा बर्फ को उड़ा देती हैं। इनका इस्तेमाल खासकरे एयरपोर्ट के रनवे पर पड़ी बर्फ को हटाने के लिए किया जा रहा है। यह तरीका समय और मेहनत दोनों को बचाता है।

क्या है इसका फायदा?

ट्रक के आगे पुराने लड़ाकू विमानों के इंजन लगाकर बर्फ हटाने की इस तकनीक का सबसे बड़ा फायदा इसकी स्पीड औ दक्षता है, खासकर हवाई अड्डों के लिए। इससे उड़ानें समय पर शुरू हो सकती हैं, जो यात्रियों और कार्गो सेवाओं के लिए जरूरी है। यह रूस जैसे ठंडे इलाकों के लिए एक क्रिएटिव और प्रभावी समाधान है।

कैसी है भारत की पहली गियरबॉक्स वाली इलेक्ट्रिक बाइक

मैटर ऐरा 5000+ गुजरात की मैटर कंपनी की इलेक्ट्रिक बाइक है। यह भारत की पहली इलेक्ट्रिक बाइक है जिसमें 4-स्पीड गियरबॉक्स और क्लच है जो राइडर्स को गियर बदलने का अनुभव कराती है। इसमें लिक्विड-कूलिंग टेक्नोलॉजी और इन-बिल्ट चार्जर भी है। यह इलेक्ट्रिक पावर के साथ गियर वाली बाइक का अनुभव प्रदान करती है जो पारंपरिक और इलेक्ट्रिक बाइक के बीच अंतर को कम करती है।

नई दिल्ली। पेश है गुजरात स्थित कंपनी मैटर की इलेक्ट्रिक बाइक, Matter Aera 5000+। पहली नज़र में इसका स्पोर्टी डिज़ाइन आपको आकर्षित करेगा, लेकिन इसकी असली खासियत इसके फीचर्स में छिपी है। यह भारत की पहली और अकेली ऐसी इलेक्ट्रिक बाइक है जिसमें आपको 4-स्पीड गियरबॉक्स और क्लच मिलता है। यह फीचर उन राइडर्स के लिए है जो पारंपरिक पेट्रोल बाइक से इलेक्ट्रिक पर शिफ्ट हो रहे हैं और गियर बदलने के अनुभव को मिस करते हैं। यह बाइक सिर्फ दिखने में ही स्पोर्टी नहीं है, बल्कि लिक्विड-कूलिंग टेक्नोलॉजी से भी लैस है जो मोटर और बैटरी को ठंडा रखती है। इसका एक और बड़ा प्लस पॉइंट है इसका इन-बिल्ट चार्जर, जिसे आप बाइक के स्टोरेज बॉक्स में ही लेकर चल सकते हैं। कुल मिलाकर, मैटर एरा उन लोगों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है जो इलेक्ट्रिक पावर के साथ गियर वाली बाइक का पूरा कंट्रोल और फील चाहते हैं, और यह पारंपरिक बाइक और इलेक्ट्रिक बाइक के बीच के अंतर को कम करती है।

एथर रिज़्टा एस का नया वेरिएंट 3.7 kWh हुआ लॉन्च, सिंगल चार्ज में मिलेगी 159 किलोमीटर की रेंज, कितनी है कीमत और फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

एथर रिज़्टा एस 3.7 kWh देश की प्रमुख इलेक्ट्रिक स्कूटर निर्माता Ather की ओर से इलेक्ट्रिक स्कूटर सेगमेंट में Rizta को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से इस स्कूटर के नए वेरिएंट को बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। स्कूटर के किस वेरिएंट को लॉन्च किया गया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। किस तरह के फीचर्स और रेंज मिलेगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जिस तरह से Electric Scooter की मांग बढ़ रही है। उसे देखते हुए दो पहिया निर्माताओं की ओर से कई विकल्प पेश और लॉन्च किए जा रहे हैं। इलेक्ट्रिक स्कूटर निर्माता Ather की ओर से भी Ather Rizta S 3.7 kWh के नए वेरिएंट को लॉन्च कर दिया गया है। किस तरह के फीचर्स और रेंज के साथ इसे लॉन्च किया गया है। किस कीमत पर इसे उपलब्ध करवाया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुआ Ather Rizta S 3.7 kWh वेरिएंट

एथर इलेक्ट्रिक की ओर से रिज्टा एस स्कूटर के नए वेरिएंट को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इस स्कूटर के नए वेरिएंट के तौर पर 3.7 kWh को शामिल किया गया है।

कितनी मिलेगी रेंज

निर्माता की ओर से इस स्कूटर के नए वेरिएंट को 3.7 किलोवाट आवर की बैटरी की क्षमता के साथ ऑफर किया गया है। इस बैटरी के साथ स्कूटर को सिंगल चार्ज में 159 किलोमीटर तक की रेंज मिल सकती है।

कैसे हैं फीचर्स

एथर रिज्टा के नए वेरिएंट में भी कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है। निर्माता इस स्कूटर में 34 लीटर का अंडरसीट स्टोरेज और फ्रंट स्टोरेज दे रही है। साथ में स्कूटर सेगमेंट में सबसे बड़ी सीट, सात इंच डिस्प्ले, टर्न बाय टर्न नेविगेशन, ऑटो होल्ड, फॉल सेफ, ईएसएस, टो और थेफ्ट अलर्ट, फाइंड माई स्कूटर, ओटीए अपडेट्स जैसे कई फीचर्स दे रही है।

कितनी है कीमत

Ather Rizta S 3.7 kWh की क्षमता वाले वेरिएंट की दिल्ली में एक्स शोरूम कीमत 137047 रुपये रखी गई है। इसके साथ ही स्कूटर पर आठ साल या 80 हजार किलोमीटर की वारंटी को भी दिया जा रहा है।

शुरू हुई बुकिंग

निर्माता की ओर से इस स्कूटर के लिए बुकिंग को शुरू कर दिया गया है। ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड में इस स्कूटर को बुक करवाया जा सकता है। बुकिंग के बाद इसकी डिलीवरी को जुलाई के आखिर तक शुरू किया जा सकता है।

किनसे है मुकाबला

एथर की ओर से रिज्टा एस स्कूटर को फैमिली इलेक्ट्रिक स्कूटर के तौर पर ऑफर किया जाता है। इस स्कूटर का बाजार में सीधा मुकाबला Ola, Bajaj, Hero Vida, TVS I Qube जैसे निर्माताओं के इलेक्ट्रिक स्कूटर के साथ होता है।

व्हाइट कोट के पीछे: अस्पताल के बाहर एक डॉक्टर का जीवन

विजय गर्ग

एक डॉक्टर की छवि अक्सर एक अस्पताल की बाँझ दीवारों तक सीमित होती है, एक सफेद कोट में पहने, हाथ में स्टेथोस्कोप, बीमारियों से जूझ रहा है और जीवन को बचा रहा है। हालांकि यह निर्विवाद रूप से उनके अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, यह एक समृद्ध, जटिल और अक्सर आश्चर्यजनक रूप से साधारण जीवन का केवल एक पहलू है जो एक बार स्क्रब बहाने और अस्पताल के दरवाजे बंद होने के बाद प्रकट होता है। सफेद कोट के पीछे जुनून, संघर्ष, परिवारों और संतुलन की आवश्यकता के साथ एक इंसान निहित है - किसी और की तरह।

जुगलबंदी अधिनियम: परिवार और व्यक्तिगत जीवन

कई डॉक्टरों के लिए, अस्पताल के बाहर जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण पहलू पेशेवर जिम्मेदारियों और उनके व्यक्तिगत जीवन की मांग के बीच सतत करतब दिखाने वाला कार्य है। लंबे समय तक, ऑन-कॉल कर्तव्यों और उनके काम के भावनात्मक टोल से प्रियजनों को पर्याप्त समय समर्पित करना मुश्किल हो सकता है। फिर भी, कई लोग पारिवारिक जीवन को पूरा करने, अपने रिश्तों में सांत्वना और ताकत पाने में कामयाब होते हैं।

पितृत्व: डॉक्टर-माता-पिता को अक्सर अद्वितीय बाधाओं का सामना करना पड़ता है। स्कूल की घटनाओं को याद करना, देर रात कॉल करना, और काम से संबंधित तनाव घर लाने का लगातार खतरा वास्तविकताएं हैं। हालांकि, कई लोग उपस्थित होने के लिए रचनात्मक तरीके ढूंढते हैं, चाहे वह समर्पित सप्ताहांत समय, प्रौद्योगिकी-सहायता प्राप्त संचार, या एक साथी के अटूट समर्थन के माध्यम से हो।

साझेदारी: पति-पत्नी और डॉक्टरों के साथी अक्सर अपने प्रियजन के पेशे की अप्रत्याशित प्रकृति को समझते हुए एक महत्वपूर्ण बोझ उठाते हैं। इन रिश्तों के पनपने के लिए मजबूत संचार, आपसी समझ और साझा जिम्मेदारियां महत्वपूर्ण हैं।

दोस्ती: अनियमित शेड्यूल के कारण दोस्ती बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। हालांकि, डॉक्टर अक्सर उन सहयोगियों के साथ गहरे बंधन बनाते हैं जो अपनी नौकरी के अनूठे दबावों को समझते हैं, साथ ही चिकित्सा दुनिया के बाहर से दोस्ती का पोषण करते हैं जो एक ताज़ा परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं।

चिकित्सा से परे: शौक और जुनून

जबकि दवा उनकी कॉलिंग हो सकती है, डॉक्टर अक्सर विविध हितों और शौक वाले व्यक्ति होते हैं जो बहुत आवश्यक राहत और एक रचनात्मक आउटलेट प्रदान करते हैं। ये उद्देश्य तीव्रता से भौतिक से लेकर निर्मल बौद्धिक तक हो सकते हैं:

खेल और फिटनेस: कई डॉक्टर शारीरिक गतिविधि को डी-स्ट्रेस के रूप में प्राथमिकता देते हैं और अपने स्वयं के स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं। मैराथन दौड़ना, साइकिल चलाना, लंबी पैदल यात्रा, योग या टीम के खेल आम आउटलेट हैं।

कला और संस्कृति: संगीत वाद्ययंत्र बजाने और पेंटिंग से लेकर लेखन, फोटोग्राफी या थिएटर में भाग लेने तक, कई डॉक्टर कलात्मक प्रयासों में सांत्वना और अभिव्यक्ति पाते हैं। ये गतिविधियाँ अपने काम की अक्सर विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक प्रकृति के लिए एक शक्तिशाली असंतुलन प्रदान कर सकती हैं।

यात्रा और अन्वेषण: यात्रा के माध्यम से दैनिक दिनचर्या से बचना डॉक्टरों को नई संस्कृतियों को डिस्कनेक्ट करने, अनुभव करने और उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने की अनुमति देता है।

सामुदायिक भागीदारी: कुछ डॉक्टर अपना सीमित खाली समय स्वेच्छा से समर्पित करते हैं, सामुदायिक परियोजनाओं में संलग्न होते हैं, या स्वास्थ्य संबंधी कारणों की वकालत करते हैं, अस्पताल की दीवारों से परे अपना प्रभाव बढ़ाते हैं।

आजीवन सीखना: आश्चर्यजनक रूप से, कई डॉक्टर शिक्षार्थी बने रहते हैं, चिकित्सा के बाहर विषयों में तल्लीन होते हैं, बड़े पैमाने पर पढ़ते हैं, या असंबंधित क्षेत्रों में आगे की शिक्षा प्राप्त करते हैं।

मानसिक और भावनात्मक परिदृश्य

जिम्मेदारी का वजन, मानव पीड़ा के संपर्क में, और प्रदर्शन करने के लिए निरंतर दबाव डॉक्टर की मानसिक और भावनात्मक भलाई पर एक महत्वपूर्ण टोल ले सकता है। अस्पताल के बाहर के जीवन में अक्सर शामिल होता है:

डी-स्ट्रेसिंग और अनवाइंडिंग: तनाव के लिए स्वस्थ मुकाबला तंत्र विकसित करना सर्वोपरि है। इसमें माइंडफुलनेस, मेडिटेशन, प्रकृति में समय बिताना, या बस प्रतिबिंब के शांत क्षणों का आनंद लेना शामिल हो सकता है।

प्रोसेसिंग ट्रॉमा: डॉक्टर अक्सर दर्दनाक घटनाओं के गवाह होते हैं। वे सहकर्मियों, चिकित्सकों से समर्थन प्राप्त कर सकते हैं, या उन गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं जो उन्हें इन अनुभवों को संसाधित करने और तुलना करने में मदद करती हैं।

उद्देश्य से परे काम ढूँढना: जबकि उनका पेशा अविश्वसनीय रूप से सार्थक है, कई डॉक्टर जानबूझकर एक अच्छी तरह से गोल पहचान बनाए रखने के लिए दवा के बाहर के क्षेत्रों में उद्देश्य और पूर्ति की तलाश करते हैं।

द अनसंग हीरोज: सपोर्ट सिस्टम

अस्पताल के बाहर एक पूरा जीवन जीने वाले हर डॉक्टर के पीछे अक्सर अनसंग नायक होते हैं - उनके साथी, परिवार और करीबी दोस्त जो अटूट समर्थन, समझ और प्यार प्रदान करते हैं। वे वही हैं जो सुस्त उठाते हैं, सुनने वाले कान की पेशकश करते हैं, और दुनिया के डॉक्टरों को उनके मांग वाले पेशे से परे याद दिलाते हैं।

अंत में, "व्हाइट कोट के पीछे" जीवन की एक जीवंत टेपेस्ट्री का पता चलता है जो जुनून, समर्पण और संतुलन के लिए निरंतर प्रयास के साथ रहता था। डॉक्टर केवल चिकित्सा पेशेवर नहीं हैं; वे माता-पिता, साथी, दोस्त, कलाकार, एथलीट और समुदाय के सदस्य हैं। इस मानव आयाम को समझना न केवल अधिक सहानुभूति को बढ़ावा देता है, बल्कि अपार व्यक्तिगत बलिदानों और उल्लेखनीय लचीलापन टी पर भी प्रकाश डालता है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

एक गाँव में शिक्षा और ग्रामीण विकास की नींव : विजय गर्ग

1 परिचय

शिक्षा सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण है। ग्रामीण गांवों में, यह व्यक्तियों को सशक्त बनाने, सतत विकास को बढ़ावा देने और गरीबी के चक्र को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. ।ग्रामीण विकास में शिक्षा का महत्व

सशक्तिकरण: शिक्षित व्यक्ति स्वास्थ्य, खेती, वित्त और सामाजिक मुद्दों के बारे में सूचित निर्णय ले सकते हैं।

आर्थिक विकास: शिक्षा कौशल को बढ़ाती है, जिससे बेहतर रोजगार के अवसर, उद्यमिता और उत्पादकता में वृद्धि होती है।

सामाजिक परिवर्तन: शिक्षा बाल विवाह, लिंग भेदभाव और अंधविश्वास जैसी सामाजिक बुराइयों को मिटाने में मदद करती है।

स्वास्थ्य जागरूकता: साक्षर समुदाय स्वास्थ्य और स्वच्छता का प्रबंधन करने, रोग के बोझ को कम करने के लिए बेहतर सुसज्जित हैं।

3 ।गांवों में शैक्षिक विकास के प्रमुख तत्व

प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय: स्थानीय स्कूलों की उपलब्धता और गुणवत्ता मौलिक है।

वयस्क शिक्षा: वयस्कों के लिए साक्षरता कार्यक्रम आजीविका और सामुदायिक भागीदारी में काफी सुधार कर सकते हैं।

व्यावसायिक प्रशिक्षण: स्थानीय आवश्यकताओं (जैसे, कृषि, शिल्प, प्रौद्योगिकी) के अनुरूप कौशल-आधारित शिक्षा।

शिक्षक प्रशिक्षण और सहायता: सक्षम और प्रेरित शिक्षक प्रभावी शिक्षा की रीढ़ हैं।

डिजिटल साक्षरता: मोबाइल और कंप्यूटर सीखने के माध्यम से प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना पहुंच और आधुनिक कौशल को बढ़ाता है।

4 ।गांवों में शिक्षा के लिए चुनौतियां

बुनियादी ढांचे की कमी (कक्षाओं, बिजली, इंटरनेट)

योग्य शिक्षकों की कमी

सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएं (लिंग पूर्वाग्रह, प्रारंभिक विवाह, जातिगत भेदभाव)

आर्थिक कठिनाइयाँ जो बच्चों को छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं 5. ।सरकार और गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन योजना, और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी सरकारी योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा देना है।

एनजीओ स्कूलों के निर्माण, शिक्षकों को प्रशिक्षित करने और जागरूकता फैलाने में योगदान देते हैं। 6। शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण विकास

कृषि नवाचार: शिक्षित किसान बेहतर तकनीक अपनाते हैं, पैदावार और स्थिरता में सुधार करते हैं।

महिला सशक्तिकरण: लड़कियों की शिक्षा से विलंबित विवाह, छोटे परिवार और स्वस्थ बच्चे होते हैं।

सामुदायिक नेतृत्व: स्थानीय ग्रामीण स्थानीय शासन और विकास गतिविधियों में अधिक प्रभावी ढंग से भाग लेते हैं।

7. ।निष्कर्ष

शिक्षा वह आधार है जिस पर ग्रामीण विकास टिका है। एक शिक्षित गाँव एक आत्मनिर्भर, स्वस्थ और समृद्ध गाँव है। ग्रामीण शिक्षा में निवेश करने का अर्थ है राष्ट्र के भविष्य में निवेश करना।

क्या मंगल वास्तव में लाल है? एक भौतिक विज्ञानी इसके रंग और अधिक के पीछे विज्ञान की व्याख्या करता है

विजय गर्ग

मंगल नग्न आंखों को लाल दिखता है, लेकिन दूरबीनें एक व्यापक, अधिक जटिल स्पेक्ट्रम दिखाती हैं मंगल सदियों से मानव कल्पना को प्रेरित कर रहा है, मुख्य रूप से क्योंकि इसमें एक लाल रंग है, जिसने इसे ₹लाल ग्रह₹ शीर्षक दिया। इसका रंग प्राचीन रोमियों द्वारा रक्त और युद्ध से जुड़ा था; इस प्रकार, उन्होंने इसे अपने युद्ध के देवता के नाम पर रखा। लालिमा, वैज्ञानिक रूप से, लोहे के ऑक्साइड का परिणाम है - जंग जो मंगल की सतह को कोट करती है। फिर भी रोबोट जांच द्वारा उत्पादित सतह की छवियों ने अधिक सूक्ष्म स्पेक्ट्रम दिखाया है। अधिकांश इलाके धूल भरे तन या जंग खाए भूरे रंग की तरह अधिक दिखाई देते हैं। यहां तक कि ध्रुव ग्रह के उपनाम को धता बताते हैं, पानी की बर्फ और जमे हुए कार्बन डाइऑक्साइड के कारण उज्ज्वल सफेद के रूप में पेश करते हैं जो मौसमी धूप के साथ विस्तार और अनुबंध करते हैं।

मार्स इज़ नॉट जस्ट रेड: टेलिस्कोप कलर्स, आइस कैप्स और हिडन फीचर्स के एक कॉम्प्लेक्स पैलेट को प्रकट करते हैं द कन्वर्सेशन द्वारा प्रकाशित और सपेश .काम पर पुनर्प्रकाशित एक हालिया लेख के अनुसार, मंगल के लौह-समृद्ध खनिजों ने जंग खा लिया है, यही वजह है कि यह जंग लग रहा है। जैसे लोहा और ऑक्सीजन रक्त को अपना रंग कैसे देते हैं, मार्टियन धूल भी स्वाभाविक रूप से जंग खाती है। ध्रुवीय टोपियां, जो जमे हुए पानी और कार्बन डाइऑक्साइड से बनी होती हैं और स्पष्ट रूप से अलग रंग की होती हैं, आम तौर पर सफेद होती हैं। धूप शुष्क बर्फ की परत को कम करने और फिर से तैयार करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे इन टोपियों का विस्तार होता है और मौसम के साथ अनुबंध होता है।

पिछले मिशनों और रोवर्स द्वारा ली गई छवियों से मंगल ग्रह के पैलेट का पता चलता है, लेकिन पराबैंगनी और अवरक्त कैमरों से लैस दूरबीनों और अंतरिक्ष यान झूठे रंग की छवियों को पकड़ते हैं, जिससे मंगल के असली रंग के बारे में कुछ भ्रम होता है।

फास्ट रेडियो बर्स्ट्स कॉस्मिक इंटरगैलेक्टिक फॉग में यूनिवर्स के मिसिंग मैटर को प्रकट करते हैं वर्णक्रमीय अवलोकन, अवरक्त और पराबैंगनी चित्र, और विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम की व्यापक सरणी मंगल की उपस्थिति, इतिहास, संरचना और संभावित अतीत की आदत की जांच में वैज्ञानिकों की सहायता कर रही है।

मंगल अभी भी आकाश में लाल दिख सकता है, लेकिन इसकी वास्तविक कथा अधिक जटिल है। विज्ञान और उच्च-रिज़ॉल्यूशन कैमरों के लिए धन्यवाद, इस पड़ोसी दुनिया के बारे में हमारी समझ अभी भी सामने आ रही है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कीट फ़ीड खेती उद्योग को बदल सकता है

विजय गर्ग

खेत जानवरों को कीड़े खिलाना पर्यावरण क्रांति हो सकती है जिसका पशुधन उद्योग इंतजार कर रहा है। कीड़े, प्रोटीन का एक समृद्ध स्रोत और सूअर, मुर्गी पालन और मछली के लिए प्राकृतिक आहार का हिस्सा, फ़ीड के लिए सोयाबीन बढ़ाने और कम कार्बन उत्सर्जन का उत्पादन करने के लिए आवश्यक भूमि और पानी के एक अंश का उपयोग करें।

हर साल एक मीट्रिक टन सोया का उत्पादन करने के लिए लगभग एक हेक्टेयर (2.5 एकड़) भूमि लगती है, लेकिन एक ही क्षेत्र में लगभग 140 मीट्रिक टन कीड़े उग सकते हैं। यौगिक पशु फ़ीड के लिए सोयाबीन या मकई पर वापस काटना भी वनों की कटाई को कम कर सकता है, विशेष रूप से ब्राजील और अमेज़ॅन वर्षावन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में, जहां फसलों का विस्तार करने के लिए पेड़ों को मार दिया जाता है।

2020 में, सूअर, मुर्गी पालन और मछली के लिए यौगिक फ़ीड पशु फ़ीड बाजार का 75 प्रतिशत से अधिक बना है। अमेरिका ने अकेले 1.2 बिलियन के वैश्विक कुल में से 216 मीट्रिक टन का उत्पादन किया। पशुधन वैश्विक अनाज उत्पादन का लगभग एक तिहाई खाता है, जिनमें से कुछ का उपयोग लोगों को खिलाने के लिए किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, भूमि के उपयोग को कम करना और

पशुधन को खिलाई गई फसलें वैश्विक खाद्य प्रणाली को बदल देती हैं और इसे अधिक टिकाऊ बनाती हैं।

कीटों को खाद्य अपशिष्ट, बूचड़खानों और खाद पर खिलाया जा सकता है, जिससे इसे उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन में बदलने में मदद मिलती है। और क्योंकि उन्हें ज्यादा जगह की जरूरत नहीं है, इसलिए उन्हें कार्गो कंटेनर जैसी छोटे पैमाने की इकाइयों में खेतों पर पाला जा सकता है। ब्रिटिश स्टार्टअप बेटर ओरिजिन अपने कंटेनरों को खाद्य अपशिष्ट और काले सैनिक फ्लाई लार्वा के साथ पैक करता है जो केवल दो सप्ताह में अपने प्रारंभिक शरीर के द्रव्यमान का 5,000 गुना तक बढ़ जाते हैं।

प्रत्येक X1 इकाई 32,000 मुर्गियां तक खिला सकती है, लार्वा काटा जाता है और बिना किसी प्रसंस्करण या योजक के जानवरों को दिया जाता है। बेहतर उत्पत्ति का कहना है कि सोया को बदलने और केवल एक इकाई में खाद्य कचरे को रीसाइक्लिंग करने का प्रभाव 150 मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को रोकता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात, यह कहता है, जिस तरह से खाद्य अपशिष्ट को पशु फ़ीड में परिवर्तित किया जाता है वह प्रक्रिया को गोलाकार बनाता है।

शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है कि कचरे में जाने वाले भोजन की मात्रा 2030 तक विश्व स्तर पर दो अरब मीट्रिक टन हो जाएगी। यदि इसे जानवरों के लिए कीट फ़ीड में परिवर्तित किया जा सकता है तो यह पशुधन उत्पादन को सस्ता और अधिक टिकाऊ बना देगा।

बेहतर उत्पत्ति जैसी स्टार्टअप कंपनियां उत्तरी अमेरिका और यूरोपीय संघ में फर्मों को दिए गए कीट फ़ीड के लिए अनुमोदन के साथ, एक उछाल बाजार में शामिल हो रही हैं। अमेरिकी खाद्य दिग्गज कारगिल ने काले सैनिक फ्लाई लार्वा के साथ मछली के खेतों की आपूर्ति करने के लिए इनोवाफीड के साथ साझेदारी करके स्थायी कीट फ़ीड बाजार में टैप किया है।

संयुक्त राष्ट्र से समर्थन बहुत आगे बढ़ता है। कीड़ों की कुछ प्रजातियों में लोगों को खाने के लिए पर्याप्त उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन, अमीनो एसिड और विटामिन होते हैं। भविष्य में बहुत कम से कम, पशु और पालतू कीट फ़ीड अधिक आम होंगे।

2014 में एक सम्मेलन में बोलते हुए, संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन के सहायक निदेशक-सामान्य एडुआर्डो रोजस-ब्रिएल्स ने कहा कि कीड़े जलवायु समाधान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उन्होंने कहा, ₹बढ़ती दुनिया की आबादी को देखते हुए भोजन के वैकल्पिक स्रोतों के बारे में सोचने का समय परिपक्व है.₹ ₹अकेले कीड़े दुनिया की खाद्य सुरक्षा चुनौतियों का समाधान नहीं करेंगे लेकिन भूख और कुपोषण के खिलाफ लड़ाई में अपनी पूरी क्षमता नहीं जुटा पाना बेतुका होगा

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

तीसरी आँख: सूचना आयु से 'इंटेलिजेंस की आयु' तक जाना

विजय गर्ग

सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति की सफलता ने औद्योगिक युग से सूचना के युग तक दुनिया के संक्रमण का कारण बना लेकिन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का आगमन एक और परिवर्तनकारी बदलाव को तेज कर रहा है- सूचना आयु से लेकर खुफिया के युग तक बुनियादी तथ्य से प्रेरित है कि 'सभी खुफिया जानकारी है लेकिन सभी जानकारी खुफिया नहीं है'।

यह बदलाव वास्तविकता से मजबूर है कि जानकारी होने से कोई प्रतिस्पर्धात्मक लाभ नहीं था जो हर किसी के पास भी था और यह कि यह इंटेलिजेंस नामक 'अनन्य ज्ञान' का स्वामित्व है जिसने दूसरों पर एक लाभ दिया।

एआई एप्लिकेशन डेटा एनालिटिक्स के माध्यम से इस तरह के ज्ञान को बड़े पैमाने पर उत्पन्न करने और एक्सेस करने का एक साधन बन रहे हैं। खुफिया मूल्य की कोई भी जानकारी 'विश्वसनीय' होनी चाहिए, लेकिन इस अर्थ में 'भविष्य' भी है कि यह आगे झूठ बोलने वाले 'अवसरों' और 'जोखिमों' को इंगित करता है और इस प्रकार लाभकारी कार्रवाई के लिए मार्ग खोलता है। डेटा के विश्लेषण के दौरान 'अंतर्दृष्टि' का उत्पादन करने के लिए एल्गोरिदम की एक प्रणाली को किस हद तक रखा जा सकता है, यह 'कृत्रिम' और 'मानव' बुद्धि के बीच की खाई को पाटने के करीब आया। हालांकि, मौलिक रूप से, एआई मानव बुद्धि के लिए 'सहायक' था और 'विकल्प' नहीं था।

किसी ने सही कहा कि बड़ी भाषा मॉडल (एलएलएम) द्वारा समर्थित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव ज्ञान का अंतिम भंडार बन सकता है, लेकिन यहां तक कि जब यह तय करने में सक्षम हो सकता है कि 'तथ्यात्मक रूप से सही या गलत' क्या था, तो यह निर्धारित करने का परिचारिका नहीं ले सकता है कि 'सही या गलत' क्या है। यह केवल मानव मन द्वारा किया जा सकता है जो विवेक, पवित्रता और भविष्य के लिए सोचने की क्षमता में निहित 'अंतर्ज्ञान' से लैस है।

मानव मन की तर्क-विलक्षण विलक्षण विशेषता की शक्ति- पिछले अनुभव के संयोजन से प्राप्त होती है, जानकारी का निरीक्षण करने और विश्लेषण करने की क्षमता और चीजों को 'कारण और प्रभाव' मोड में देखने की क्षमता। सीमित सीमा तक 'तर्क' को 'मशीन लर्निंग' में बनाया जा सकता है लेकिन केवल उधार तरीके से।

इसके अलावा, मानव आचरण को अक्सर 'नैतिक मूल्यों की प्रणाली' द्वारा वातानुकूलित किया जाता है, जिसके बाद व्यक्तिगत स्तर पर पूर्वाग्रह और इच्छाधारी सोच अक्सर नैतिकता की किसी भी प्रणाली में बनाई जाती है- और यह अभी तक एक और क्षेत्र है जहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव मन को प्रतिस्थापित करने में सक्षम नहीं होगा।

एआई अनिवार्य रूप से स्मृति में डेटा पर काम करता है और भाषा मॉडल जनसांख्यिकी और रीति-रिवाजों के लिए अपनी पहुंच को बढ़ाते हैं जो इसे मानव व्यवहार के कुछ करीब लाते हैं लेकिन इस सब में जो कुछ सामने आता है वह तथ्य यह है कि एआई को 'इनपुट-आउटपुट' सिद्धांत से मुक्त नहीं किया जा सकता है।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने प्रसिद्ध रूप से कहा कि 'कल्पना ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण थी'- वह बेतहाशा उन चीजों की कल्पना करने की विशेषता का जिक्र नहीं कर रहे थे जो कुछ लोगों के पास हो सकती हैं, लेकिन सामने डेटा से परे देखने की

मानवीय क्षमता को परिभाषित कर रहे थे और अनुभव कर रहे थे कि आगे क्या है। एक तरह से, वह मानव मन की क्षमता की ओर इशारा कर रहा था कि वह 'पेड़ के लिए लकड़ी को याद न करें'।

कल्पना और मानव प्रतिक्रिया व्यापार और व्यक्तिगत जीवन दोनों में महान संपत्ति हैं और वे मशीन के नेतृत्व वाले ऑपरेशन से मानव बुद्धि को चिह्नित करते हैं। वे दोनों ग्राहक संबंध प्रबंधन के क्षेत्रों में बहुत मदद कर रहे हैं- क्योंकि उन्होंने इस संबंध को निजीकृत करना संभव बनाया है-साथ ही जोखिम मूल्यांकन जो कोई सफल उद्यम नहीं कर सकता है।

मानव मन की पहुंच और 'मशीन लर्निंग' का परीक्षण करने वाले 'इंटेलिजेंस' के बीच के अंतर को जानना महत्वपूर्ण है जिसकी अपनी सीमाएं हैं।

परिभाषा के अनुसार बुद्धिमत्ता वह जानकारी है जो आपको 'आगे क्या झूठ' का संकेत देती है- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इसलिए 'भविष्य कहनेवाला' रीडिंग का उत्पादन करने की अपनी क्षमता से अपना महत्व खरीदने जा रहा है।

एआई के पास इसके द्वारा जांच किए गए डेटा में केवल 'पैटर्न' पढ़ने में सक्षम होने की सीमा है और यदि डेटा 'विरोधी' या 'प्रतियोगी' द्वारा सार्वजनिक डोमेन में पीछे छोड़ दिए गए पैरों के निशान के बारे में था, तो यह डेटा एनालिटिक्स को फेंकने में सक्षम कर सकता है प्रतिद्वंद्वी के कम से कम 'मोडस ऑपरेंडी' पर प्रकाश डालें और इंगित करें कि बाद वाला संभवतः आगे कैसे बढ़ेगा। यहाँ 'तर्क' का आंशिक अनुप्रयोग है, हालांकि 'कल्पना' का नहीं जो मानव मन का एक विशेष लक्षण था।

यदि एआई मानव बुद्धि का विकल्प नहीं हो सकता है, तो इसका सबसे अच्छा उपयोग इसे उत्तरार्द्ध के लिए एक 'सहायक' बनाने में है और यह ठीक वही है जो पेशेवर और व्यावसायिक क्षेत्रों में एआई की अभूतपूर्व उन्नति की व्याख्या करता है। दोनों के बीच एक 'सहजीवी संबंध' बड़े पैमाने पर मानवता के लिए एक उज्ज्वल भविष्य की गारंटी देता है। डेटा एनालिटिक्स व्यावसायिक वातावरण, प्रतियोगियों के अध्ययन और संगठन की आंतरिक स्थिति से संबंधित रुझानों को बाहर लाने का लक्ष्य रख सकता है। यह एक वैध प्रतिस्पर्धी लाभ लेने के लिए एक विशेष व्यवसाय, संगठनात्मक इकाई और पेशे की विशिष्ट आवश्यकताओं की परीक्षा पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

ऐआई नई सेवाओं और उत्पादों को विकसित करने में मदद करके, उपलब्ध कार्यबल के लागत-कटौती और इष्टतम उपयोग के माध्यम से चीजों को अधिक कुशल बनाकर और आम तौर पर नवाचार को प्रोत्साहित करके 'जीवन की गुणवत्ता' में सुधार करके 'ज्ञान अर्थव्यवस्था' को मजबूत कर रहा है। ज्ञान के स्थानांतरण प्रतिमानों के कारण व्यावसायिक दृश्य का निरंतर परिवर्तन, यह स्थापित करता है कि कोई भी एआई एप्लिकेशन एक बार की घटना नहीं होगी और अनुसंधान और विकास के कारण को आगे बढ़ाएगा। एक एआई ऑपरेशन के 'दिशा' का निर्धारण, हालांकि, मानव मन के साथ रहेगा और इसने एआई पर एक मौलिक सीमा रखी।

जैसे-जैसे अल का क्षेत्र बड़ा होता जाता है, दो चीजें प्रमुख चिंताओं के रूप में उभर रही हैं- उपयोग किए गए डेटा बैंकों की विश्वसनीयता और अनैतिक और आपराधिक उद्देश्यों के लिए एआई के संभावित उपयोग की चुनौती। सोशल मीडिया पर फर्जी खबरों और गलत सूचनाओं के युग में, एआई अनुप्रयोगों के लिए केवल सत्यापित जानकारी का उपयोग किया जाना चाहिए। डेटा की विश्वसनीयता की पुष्टि करना एआई के लिए एक कार्य है जो व्यवसाय के लिए मूल्य बनाएगा।

नीति के मामले के रूप में भारत सामान्य अच्छे की सुरक्षा के लिए पारदर्शिता के हित में एआई अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय निरीक्षण का पक्षधर है। अमेरिका एआई विकास के बारे में विशुद्ध रूप से एक आर्थिक साधन के रूप में सोचता है और अनुसंधान और नवाचार में स्वामित्व अधिकारों को संरक्षित करना चाहता है।

रणनीतिक स्तर पर, ऐआई में सुरक्षा और बुद्धिमत्ता के नए उपकरण प्रदान करने की क्षमता है और इस प्रक्रिया में, दुनिया की भू-राजनीतिक स्थिरता के लिए खतरे का स्रोत बन सकता है। भारत ने मानवता की भलाई के लिए एआई की नैतिक उन्नति की मांग करने के लिए सही नेतृत्व किया है और सार्वभौमिक कारणों के लिए अपनी प्रगति को बढ़ावा देते हुए एआई के 'खतरों' को कम करने के लिए एक सामूहिक दृष्टिकोण का आह्वान किया है।

यह ध्यान देने योग्य है कि भौतिकी के लिए नोबेल पुरस्कार के हालिया संयुक्त विजेता- प्रिंसटन विश्वविद्यालय के जॉन जे हॉपफील्ड और टोरंटो विश्वविद्यालय के जेफ्री ई हिंटन- आधुनिक 'मशीन लर्निंग' अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी हैं और उन्होंने दोनों को चेतावनी दी है कि एआई में मानवता के लिए 'सर्वनाश' का कारण बनने की क्षमता थी।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट

फन वे लर्निंग एनजीओ में मैडम सानिया का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया

मध्यप्रदेश के जल अभियान को राष्ट्रीय आंदोलन बनाने की जरुरत

डॉ. हरीशकुमार सिंह

दिसंबर 1992 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 22 मार्च को विश्व जल दिवस घोषित किया और वर्ष 1993 में पहला विश्व जल दिवस मनाया गया। विश्व भर में जल को लेकर कई चिंताएं हैं जिनमें मुख्य रूप से जल संकट , प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन सम्मिलित हैं। जल संकट का आशय दुनिया भर में कई लोगों को स्वच्छ और सुरक्षित पानी उपलब्ध नहीं है जिससे स्वास्थ्य ,खाद्य सुरक्षा और आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वैश्विक जल संकट के अंतर्गत दुनिया की लगभग पच्चीस प्रतिशत आबादी पानी की कमी और तनाव का सामना कर रही है और आने वाले दिनों में ये संकट और भी बढ़ने वाला है। भारत और अन्य तीन देशों में हुए एक अध्ययन के अनुसार वर्ष 2040 तक पूरी दुनिया को पीने के पानी की किल्लत का सामना कर पड़ सकता है क्योंकि भूगर्भीय जल का स्तर तेजी से कम हो रहा है। जल की कमी कई कारणों से हो रही है जिनमें जल की मांग , आपूर्ति से अधिक होना ,जल संबंधी बुनियादी ढांचा का अपर्याप्त होना भी है। जल की कमी विश्व में हर कहीं महसूस की जा रही है जिसका सबसे बुरा असर गरीब और निचले समुदायों पर पड़ता है । जैसे जैसे वैश्विक जनसँख्या बढ़ रही है उपलब्ध जल संसाधनों का सरंक्षण और नए जल प्रबन्धन की अत्यंत आवश्यकता है।

केंद्र सरकार ने भी जल संसाधनों की योजना और विकास और उनके इष्टतम उपयोग को नियंत्रित करने के लिए जल संसाधन मंत्रालय द्वारा वर्ष 1987 में पहली राष्ट्रीय जल नीति बनाई गई है और समय समय पर इसे अद्यतन भी किया गया है। राष्ट्रीय जल नीति जल प्रबन्धन के लिए क़ानून विकसित करने और राज्यों की क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप राज्य स्तरीय जल नीतियों पर कार्य करना है । राष्ट्रीय जल नीति में पानी को सार्वजनिक संपत्ति और राष्ट्रीय संपत्ति के रूप में मान्यता दी गई है और पानी के उपयोग के लिए एक पारिस्थितिक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

जाहिर है कि मध्यप्रदेश में भी जल के उचित प्रबन्धन , जल संसाधनों के सरंक्षण और जल के लिए नवीन कार्य योजनाओं की आवश्यकता महसूस कीं जाती रही है । भूजल स्तर में कमी , अंतर्राजीय नदी जल विवाद , जलाशयों का मरना , जल प्रदूषण , जल भराव , वर्षा जल संचयन जैसी समस्यायें मध्यप्रदेश में भी रहीं है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश का कार्यभार संभालते ही सबसे पहले अंतर्राजीय नदी जल विवाद का समाधान किया और दिसम्बर 2024 में पार्वती – कालीसिंध – चम्बल लिंक परियोजना के लिए केंद्र , राजस्थान और मध्यप्रदेश के बीच बहत्तर हजार करोड़ रूपये की एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किये जिससे दोनों राज्यों को सिंचाई सुविधा और जल की उपलब्धता हो सके । ताप्ति बेसिन मेगा रिचार्ज प्रोजेक्ट के तहत महाराष्ट्र से

समझौता किया गया। इसके बाद जरुरी था कि राष्ट्रीय जल नीति के अनुरूप प्रदेश में पानी का सरंक्षण , जल संसाधनों का विकास , पानी का वितरण , जल प्रदूषण नियंत्रण , जल के लिए सतत कार्य और सार्वजनिक भागीदारी से जल के लिए जन जागृति लाइ जाए। वैसे भी भारतीय दर्शन में पृथ्वी ,जल ,अग्नि ,वायु और आकाश पंचतत्व माने गये हैं जिनमें जल महत्वपूर्ण घटक है और पर्यावरण के अंतर्गत तीन महत्वपूर्ण घटक आते हैं जिनमें जल ,जंगल और जमीन सम्मिलित हैं और इनके सरंक्षण से प्रकृति और मानव सभ्यता के बीच संतुलन बना रहता है।

बेहतर और प्रभावी जल प्रबंधन के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश में 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान का आयोजन किया और इस अभियान से पूरे प्रदेश को जोड़ा। पहले की राज्य सरकारों की कागजी योजनाओं की बजाय इस जल गंगा संवर्धन अभियान को जमीन पर उतारा और अभियान की गति और सफलता पर पूरी नजर रखी। अभियान का आयोजन 30 जून तक था जिससे प्रदेश में वर्षा से पहले , जल को रोकने के समस्त उपाय किये जा सकें और भूजल का स्तर बढ़ाया जा सके। प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान को मुख्यमंत्री जी ने जनआंदोलन बना दिया और जिले के कलेक्टर , वन विभाग , पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग , प्रदेश के जलदूत , जनप्रतिनिधियों ने मिलकर खेत - तालाबों से लेकर ऐतिहासिक बावड़ियों तक जल संरक्षण के लिए व्यापक कार्य ऐतिहासिक बावडियों के जीर्णोद्धार के लिए किये गये। प्रदेशव्यापी जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के लिए प्रभावी कार्य किए गए जिनमें कुँओं का रिचार्ज , झिरियाँ , स्टॉप डेम , वन्य जीव सरंक्षण आदि सम्मिलित हैं । प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के जनजातीय परिवारों को भी इस अभियान से जोड़ा जाकर जल और जंगल के बचाव और समृद्धि के प्रयास किये गये हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान में प्रदेश की नदियों का गौरव और अस्मिता को लौटाना है जिससे नदियाँ फिर से और प्रवाहमान और सिंचाई के लिए तैयार हो सकें। राजधानी भोपाल में जनजागरण और चेतना के लिए सदानीरा जैसे सांस्कृतिक आयोजन भी राज्य सरकार ने करवाए जिससे ये अभियान , आन्दोलन बन सके।

ईश्वर का कोड, डीएनए अब इंसान के हाथः वरदान या विनाश?

मानव प्रयोगशाला में रचना डीएनए 2.0ः नई दुनिया की नींव या नई विपदा?

कभी-कभी, इतिहास के पन्नों पर कुछ ऐसे स्वर्णिम क्षण अंकित होते हैं, जो समय की धारा को नया मोड़ दे देते हैं, बल्कि मानवता के भाग्य को नए सिरे से परिभाषित करते हैं। आज, हम एक ऐसे युगांतरकारी शिखर पर खड़े हैं, जहां वैज्ञानिकों ने इंसानी डीएनए को प्रयोगशाला में सृजित करने की दिशा में पहला साहसिक कदम उठाया है। यह एक ऐसी अद्भुत छलांग है, जो जीवन के गूढ़ रहस्यों को उजागर करने, लाइलाज रोगों पर विजय पाने और मानव जीवन को अभूतपूर्व समृद्धि व श्रेष्ठता की ऊंचाइयों तक ले जाने का प्रबल संकल्प रखती है। फिर भी, इस चमकते स्वप्न के पीछे छिपा है एक गंभीर नैतिक और सामाजिक प्रश्न—क्या हम इस अपार शक्ति को संयम और विवेक के साथ संभालने को तैयार हैं? क्या यह मानवता के लिए एक क्रांतिकारी वरदान सिद्ध होगा, या एक ऐसी अनियंत्रित ज्वाला, जो हमें अपनी ही राख में समेट लेगी?

डीएनए—महज चार अक्षरों (ए, जी, सी, टी) का वह अलौकिक संयोजन, जो हर इंसान की अनूठी पहचान, उसके अतीत और भविष्य की गाथा को रचता है। यह वह रहस्यमयी कोड है, जो हमारी हर कोशिका में जीवन की अमर कहानी बुनता है। पच्चीस वर्ष पहले, ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट ने इस गूढ़ कोड को पढ़ने का द्वार खोला था। अब, सिंथेटिक ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट इसे शून्य से सृजित करने की साहसिक राह पर अग्रसर है। 'वेलकम ट्रस्ट' जैसे विश्वप्रसिद्ध संस्थान ने इस महात्वाकांक्षी अभियान को एक करोड़ पाउंड की प्रारंभिक राशि प्रदान कर न केवल इसे गति दी है, बल्कि एक गहन प्रश्न भी उभारा है—क्या हम इस क्रांतिकारी तकनीक के दूरगामी परिणामों को समझने और उनके साथ सामंजस्य बिठाने के लिए तैयार हैं?

ब्रिटेन के कैमब्रिज में एमआरसी लेबोरेटरी ऑफ मॉलिक्यूलर बायोलॉजी के प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. जूलियन सेल इसे जीव विज्ञान में एक ऐतिहासिक क्रांति के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार, यह तकनीक हमें ऐसी चमत्कारी कोशिकाएं सृजित करने की अनुपम शक्ति प्रदान करती है, जो क्षतिग्रस्त अंगों—जैसे यकृत, हृदय, या प्रतिरक्षा तंत्र—को पुनर्जनन की राह दिखा सकती हैं। कैंसर, अल्जाइमर, और उम्र बढ़ने से जुड़ी दुर्बल बीमारियों का उपचार अब केवल सपना नहीं, बल्कि शीघ्र साकार होने वाली वास्तविकता है। यह एक ऐसा स्वर्णिम भविष्य है, जहां मानव न केवल दीर्घायु, बल्कि स्वस्थ, सशक्त और जीवंत जीवन जीने का स्वप्न साकार करेगा। यह तकनीक चिकित्सा के क्षितिज को पुनर्परिभाषित करने के साथ-साथ मानवता को एक ऐसी दिशा में ले जा रही है, जहां रोग और कमजोरी इतिहास के धुंधलके में विलीन हो जाएंगे।

हर क्रांति की भांति, इस तकनीक का भी एक गहन, अंधकारमय पहलू है, जहां इसकी संभावनाओं के समान ही इसके जोखिम भी असीम और भयावह

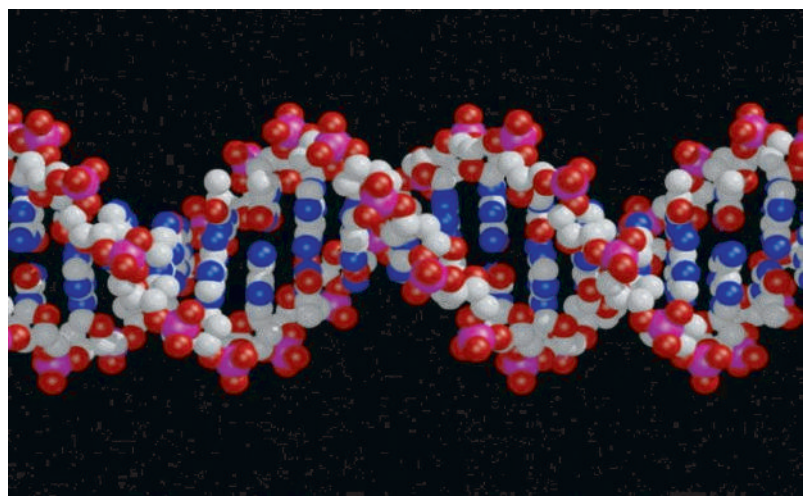

हैं। आलोचक सशंकित स्वर में चेतावनी देते हैं कि यह तकनीक गलत इरादों के अधीन पड़कर मानव नस्ल को कृत्रिम रूप से परिवर्तित करने, 'डिज़ाइनर बेबीज़' के सृजन, या यहां तक कि जैविक हथियारों के विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। एडिनबरा यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर बिल अर्नशॉ का कथन गूंजता है, "जिन्न अब बोतल से मुक्त हो चुका है।" यदि कोई संगठन इस शक्ति का दुरुपयोग करता है—चाहे वह 'उन्नत' मानवों की रचना के लिए हो या अप्राकृतिक प्राणियों के सृजन के लिए—तो उसे थामना सर्वथा असंभव हो सकता है। इतिहास साक्षी है कि विज्ञान की क्रांतिकारी खोजें, चाहे वह परमाणु ऊर्जा हो या जैव प्रौद्योगिकी, सदा ही एक दोधारी तलवार रही हैं, जो मानवता को उन्नति और विनाश के बीच झूलने को विवश करती हैं।

इसके अतिरिक्त, व्यावसायिक दुरुपयोग का खतरा भी उतना ही प्रबल और चिंताजनक है। यदि कृत्रिम डीएनए से निर्मित अंगों या प्राणियों का स्वामित्व निजी कंपनियों के हाथों में सौंपा गया, तो क्या यह स्वास्थ्य सेवाओं में पहले से मौजूद असमानता को और गहरा नहीं कर देगा? क्या यह अमीर और गरीब के बीच की खाई को और अधिक विस्तृत और अभेद्य नहीं बना देगा? प्रोफेसर मैथ्यू हर्ल्स, जिन्होंने ह्यूमन जीनोम की सिक्वेंसिंग में अमूल्य योगदान दिया है, मानते हैं कि डीएनए को शून्य से रचने की यह प्रक्रिया इसके रहस्यमयी कार्यप्रणाली को उजागर करने में अभूतपूर्व सहायता प्रदान करेगी। किंतु एक गहन प्रश्न अब भी अनुत्तरित लटक रहा है—इस अपार शक्ति का स्वामित्व और नियंत्रण आखिर किसके पास होगा?

'वेलकम ट्रस्ट' के डॉ. टॉम कॉलिन्स दृढ़ता से तर्क देते हैं कि यह तकनीक देर-सवेर अवश्य साकार होगी, अतः इसे अनदेखा करने के बजाय विवेकपूर्ण और जिम्मेदारी के साथ विकसित करना, साथ ही इसके नैतिक आयामों पर गहन चिंतन करना कहीं अधिक बुद्धिमानी होगी। इस दिशा में एक प्रेरणादायी कदम के रूप में, केंट यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जॉय ज़ाग के नेतृत्व में एक सामाजिक विज्ञान पहल ने जन्म लिया है, जिसका लक्ष्य आमजन, समाजशास्त्रियों और विशेषज्ञों के विचारों को संकलित कर इस तकनीक के सामाजिक प्रभावों का सूक्ष्म आकलन करना है। यह पहल निस्संदेह प्रशंसनीय है, क्योंकि कोई भी तकनीक तभी सार्थक हो सकती है, जब समाज उसे हृदय से अंगीकार करे और उस पर अटूट विश्वास स्थापित करे। किंतु क्या यह प्रयास पर्याप्त है? जनमानस में इस तकनीक को लेकर उमड़ता उत्साह एक गहरे, अंतर्निहित भय के साथ साये की तरह जुड़ा है। प्रश्न यह है—क्या यह तकनीक मानवता को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक ले जाएगी, या हमें अनदेखे, अनजाने खतरों के गहन अंधकार में धकेल देगी?

जैसे ही हम इस अभूतपूर्व वैज्ञानिक सागर की दहलीज पर कदम रखते हैं, यह स्पष्ट हो चला है कि यह महज एक तकनीकी विजय नहीं, अपितु मानवता के समक्ष एक गहन दार्शनिक और नैतिक पहेली है। यह हमें हमारे अस्तित्व, हमारी जिम्मेदारियों और हमारे भविष्य के प्रति गंभीर आत्ममंथन के लिए विवश करती है। यदि हम इस अपार शक्ति का उपयोग विवेक, संयम और जिम्मेदारी के साथ करते हैं, तो यह मानवता के लिए एक स्वर्णिम युग का प्रारंभ हो सकता है—एक ऐसा युग, जहां रोग, पीड़ा और सीमाएं इतिहास के धुंधलके में विलीन हो जाएं। किंतु यदि हम असफल हुए, यदि हमने इस शक्ति को अनियंत्रित होकर अंधकार की ओर बढ़ने दिया, तो यह एक ऐसी भयावह भूल होगी, जिसका दंश आने वाली पीढ़ियां अनंतकाल तक भुगतेंगी। यह वह निर्णायक क्षण है, जहां विज्ञान और नैतिकता के बीच एक सूक्ष्म, नाजुक संतुलन की रचना अनिवार्य है। यह वह ऐतिहासिक पल है, जब हमें यह निर्धारित करना होगा कि हम अपने भविष्य को किस क्षितिज की ओर ले जाना चाहते हैं। क्या हम एक ऐसी दुनिया का सृजन करेंगे, जहां प्रत्येक मानव स्वस्थ, सशक्त और समृद्ध हो, अपने पूर्ण सामर्थ्य को छू सके? या हम अनजाने में एक ऐसे गहन अंधकार को जन्म देंगे, जिसके बंधन से मुक्ति असंभव हो? यह विकल्प हमारा है, और यही विकल्प मानवता के भाग्य का मार्ग प्रशस्त करेगा। आइए, इस अपार शक्ति को संयम और विवेक से संभालें, इसे सही दिशा प्रदान करें, और एक ऐसी दुनिया रचें, जो न केवल संभव हो, बल्कि अनुपम, प्रेरणादायक और चिरस्मरणीय हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

मैदान की हर धड़कन को शब्दों में ढालने वाले नायक

[खिलाड़ियों के संघर्ष से समाज की प्रेरणा तकः पत्रकारिता का योगदान]

खेल केवल मैदान पर जीत-हार का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि यह मानवता के जुनून, संकल्प और एकता का प्रतीक है। खिलाड़ी अपने पसीने और मेहनत से इतिहास रचते हैं, लेकिन इस इतिहास को शब्दों में ढालकर दुनिया तक पहुँचाने का काम खेल पत्रकार करते हैं। चाहे वह क्रिकेट के मैदान पर आखिरी ओवर का रोमांच हो, किसी धावक का ओलंपिक पदक जीतने का गर्व हो, या किसी खिलाड़ी का चोट के बाद वापसी का साहस—ये पल पत्रकारों की लेखनी से ही जन-जन तक पहुँचते हैं। विश्व खेल पत्रकार दिवस, जो हर साल 2 जुलाई को मनाया जाता है, उन पत्रकारों को सम्मानित करता है, जिनकी कलम खेल की हर धड़कन को जीवंत करती है। यह दिन खेल पत्रकारिता के गौरव, चुनौतियों और सामाजिक प्रभाव पर विचार करने का अवसर है।

यह दिवस 1924 में पेरिस में स्थापित अंतरराष्ट्रीय खेल प्रेस संघ (एआईपीएस) की स्मृति में मनाया जाता है। एआईपीएस का उद्देश्य खेल पत्रकारों को वैश्विक मंच प्रदान करना, उनके अधिकारों की रक्षा करना और पत्रकारिता के उच्चतम मानकों को कायम रखना है। एआईपीएस की 2024 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, यह संगठन अब 160 से अधिक देशों में सक्रिय है और 9,800 से ज्यादा पत्रकार इसके सदस्य हैं, जो खेल पत्रकारिता की व्यापक पहुंच और प्रभाव को रेखांकित करता है। यह दिन न केवल पत्रकारों के अमूल्य योगदान को सम्मानित करता है, बल्कि डिजिटल युग और बदलते मीडिया परिदृश्य में उनके सामने उभरती चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है।

आज खेल पत्रकारिता केवल स्कोर बताने या मैच के परिणामों की रिपोर्टिंग तक सीमित नहीं है; यह खेलों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कहानियों को जीवंत रूप से बुनने का एक शक्तिशाली मंच है। एक खेल पत्रकार खिलाड़ियों के संघर्ष, उनकी मानसिक दृढ़ता और खेल के गहरे सामाजिक प्रभाव को उजागर करता है। मिसाल के तौर पर, 2024 पैरालंपिक में भारत की अवनि लेखरा ने पैरा-शूटिंग में स्वर्ण पदक हासिल कर न केवल एक खेल उपलब्धि दर्ज की, बल्कि एक ऐसी प्रेरक कहानी रची, जिसने लाखों दिलों को झकझोरा। खेल पत्रकारों ने उनकी इस यात्रा को महज समाचार नहीं, बल्कि साहस, समावेशिता और मानवीय जज्बे की एक प्रेरणादायी मिसाल के रूप में दुनिया के सामने पेश किया।

डिजिटल युग ने खेल पत्रकारिता को अभूतपूर्व गति और वैश्विक पहुँच प्रदान की है, लेकिन इसके साथ जिम्मेदारियों का बोझ भी बढ़ा है। सोशल मीडिया, न्यूज़ एप्स और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स ने सूचनाओं को क्षणभर में दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने का रास्ता खोला है, मगर तथ्यों की सत्यता और निष्पक्षता को बनाए रखना अब पहले से कहीं अधिक जटिल चुनौती है। एआईपीएस के 2024 के सर्वेक्षण में 72% खेल पत्रकारों ने स्वीकार किया कि सोशल मीडिया पर वायरल खबरों की दौड़ ने पत्रकारिता की गुणवत्ता पर असर डाला है। फिर भी, जो पत्रकार सत्य, संवेदनशीलता और नैतिकता को सर्वोपरि रखते हैं, वे खेल पत्रकारिता को नई ऊँचाइयों तक ले जा रहे हैं, प्रेरणा और विश्वसनीयता का नया मानदंड स्थापित करते हुए।

भारत में खेल पत्रकारिता ने हाल के वर्षों में अभूतपूर्व प्रगति हासिल की है। जहाँ पहले क्रिकेट का एकछत्र राज था, वहीं अब बैडमिंटन, कुश्ती, मुक्केबाजी और पैरा-खेल जैसे क्षेत्र भी सुर्खियों में चमक रहे हैं। 2024 पेरिस ओलंपिक में

नीरज चोपड़ा ने भाला फेंक में रजत पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया, और पत्रकारों ने उनकी कहानी को एक ग्रामीण पृष्ठभूमि से वैश्विक मंच तक की प्रेरक गाथा के रूप में बखूबी उकेरा। इसी तरह, सितंबर 2024 में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में चीन को 1-0 से हराकर रिकॉर्ड पांचवां खिताब जीता, जिसे पत्रकारों ने केवल एक खेल उपलब्धि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता और सामूहिक गौरव का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया। साथ ही, अन्नू रानी ने 2024 में भाला फेंक में रजत पदक जीतकर इतिहास रचा, और उनकी कहानी को पत्रकारों की संवेदनशील लेखनी ने ग्रामीण भारत से वैश्विक मंच तक पहुँचाकर लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनाया।

हालाँकि, खेल पत्रकारिता का यह सफर आसान नहीं है। सीमित संसाधनों, समय की तंगी और कॉर्पोरेट या राजनीतिक दबावों की छाया पत्रकारों के लिए सतत चुनौतियाँ खड़ी करती हैं। महिला खेल पत्रकारों को लैंगिक भेदभाव और सुरक्षा जैसे गंभीर मुद्दों का सामना करना पड़ता है। एआईपीएस की 2024 की रिपोर्ट बताती है कि वैश्विक स्तर पर केवल 12% खेल पत्रकार महिलाएँ हैं, जो इस क्षेत्र में गहरी लैंगिक असमानता को उजागर करता है। इसके बावजूद, भारत में सुप्रिया नायर जैसी प्रेरक पत्रकारों ने खेल पत्रकारिता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। उनकी तीक्ष्ण लेखनी न केवल खेलों को जीवंत करती है, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर गहन चिंतन भी जगाती है।

खेल पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को प्रेरित करने वाली एक शक्तिशाली ताकत है। 2024 में जब भारतीय पैरा-बैडमिंटन खिलाड़ी मनोज सरकार ने विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता, तो पत्रकारों ने उनकी कहानी को एक प्रेरणादायक गाथा के रूप में प्रस्तुत किया, जिसने दिव्यांगजनों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को सकारात्मक दिशा में बदला। इसी तरह, 2025 में पत्रकारों ने क्रिकेट में डोपिंग और भ्रष्टाचार के गंभीर मुद्दों पर निडर खुलासे किए, जिससे खेल की शुद्धता और निष्पक्षता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान मिला। विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी (डब्ल्यूएडीए) की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, पत्रकारों की सतर्कता ने डोपिंग के 15% मामलों को उजागर करने में निर्णायक भूमिका निभाई। उनकी यह सजगता न केवल खेलों की विश्वसनीयता को बढ़ाती है, बल्कि समाज में नैतिकता और पारदर्शिता के मूल्यों को भी मजबूत करती है।

विश्व खेल पत्रकार दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि पत्रकारिता एक पवित्र मिशन है, जो सत्य, निष्पक्षता और संवेदनशीलता की नींव पर खड़ा है। यह वह सेतु है, जो खिलाड़ियों की अथक मेहनत और जुनून को दर्शकों के हृदय तक पहुँचाता है। आज, जब खेल एक वैश्विक उद्योग और कूटनीति का प्रभावशाली माध्यम बन चुके हैं, पत्रकारों की भूमिका पहले से कहीं अधिक गहन और अपरिहार्य हो गई है। वे न केवल खेलों की जीवंत कहानियाँ बुनते हैं, बल्कि समाज को प्रेरित करते हुए खेलों को चरित्र निर्माण और नैतिकता का प्रतीक बनाते हैं। उनकी लेखनी खेल के मैदान से परे जाकर सामाजिक मूल्यों को सशक्त करती है।

विश्व खेल पत्रकार दिवस पर हमें उन समर्पित खेल पत्रकारों को हृदय से नमन करना चाहिए, जो रात-दिन मैदानों, प्रेस कॉन्फ्रेंस और अपनी तीक्ष्ण लेखनी के माध्यम से खेल की आत्मा को जीवंत रखते हैं। उनकी कलम ने 2024 और 2025 में लक्ष्य सेन, अवनि लेखरा और अन्नू रानी जैसे खिलाड़ियों को न केवल नायकों के रूप में स्थापित किया, बल्कि लाखों युवाओं के दिलों में सपनों का बीज बोया और उन्हें हासिल करने की प्रेरणा दी। यह पत्रकारिता का वह अमर गौरव है, जो समय की सीमाओं को लांघकर खेल के हर रंग, हर भावना और हर संघर्ष को चिरस्थायी बनाता है—एक ऐसी शक्ति, जो खेल की धड़कनों को अनंत काल तक जीवित रखती है।

ज़ीरो डोज़ बच्चे: टीकाकरण में छूटे हुए भारत की तस्वीर

भारत में 2023 में 1.44 मिलियन बच्चे 'ज़ीरो डोज़' श्रेणी में थे, जिनमें अधिकांश गरीब, अशिक्षित, जनजातीय, मुस्लिम और प्रवासी समुदायों से आते हैं। भूगोलिक अवरोध, सामाजिक हिचकिचाहट, शहरी झुग्गियों में अव्यवस्थित शासन और निगरानी की कमी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। मिशन इंद्रधनुष जैसी योजनाएँ सीमित प्रभावी रही हैं। समाधान के लिए समुदाय-आधारित सहभागिता, तकनीक आधारित ट्रैकिंग, प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी और सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार आवश्यक है। जब तक हम नीति को अंतिम व्यक्ति के अधिकार से नहीं जोड़ते, सार्वभौमिक टीकाकरण केवल एक सपना बना रहेगा। न्यायपूर्ण स्वास्थ्य नीति ही भविष्य की नींव रख सकती है।

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में सार्वभौमिक टीकाकरण केवल एक स्वास्थ्य अभियान नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। लेकिन जब हम यह देखते हैं कि लाखों बच्चे अब भी 'ज़ीरो डोज़' की स्थिति में हैं, यानी उन्हें जन्म के बाद एक भी टीका नहीं मिला, तो यह सवाल उठना लाजिमी है कि हम कहां चूक रहे हैं? क्या हमारी स्वास्थ्य नीति केवल आंकड़ों की बुनियाद पर खड़ी है या फिर वास्तव में समाज के सबसे वंचित तबकों तक इसका लाभ पहुंच रहा है?

लैंसेट (2024) की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2023 में भारत में 1.44 मिलियन बच्चे ऐसे थे जिन्हें कोई भी टीका नहीं मिला था। यह संख्या केवल एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि उन परिवारों की अनकही पीड़ा है, जिनके बच्चों को स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित कर दिया गया। ज़ीरो डोज़ बच्चों की सबसे अधिक संख्या उन राज्यों में देखने को मिलती है जहां गरीबी, अशिक्षा, जातीय या धार्मिक हाशियाकरण और प्रशासनिक उदासीनता का मजबूत मेल है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्य इसकी प्रमुख मिसाल हैं, जहां सामाजिक-आर्थिक विषमताएं टीकाकरण की पहुंच को सीमित कर देती हैं।

गरीबी और मातृ शिक्षा का स्तर टीकाकरण में बाधा डालने वाले सबसे बड़े कारकों में से हैं। एक दिहाड़ी मजदूर, जो रोज़ी-रोटी की लड़ाई में सुबह से शाम तक खटता है, उसके लिए बच्चे को लेकर सरकारी अस्पताल जाना एक 'नुकसानदेह' निर्णय बन जाता है। यदि उस दिन मजदूरी नहीं हुई, तो पेट नहीं भरता। ऐसे में स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच एक विलासिता बन जाती है। इसके साथ-साथ यदि मां अशिक्षित है, तो उसे टीकाकरण की जरूरत, प्रक्रिया और लाभ की पूरी जानकारी नहीं होती। यह जानकारी का अभाव ही बच्चों को स्वास्थ्य अधिकार से वंचित कर देता है।

अन्य महत्वपूर्ण पहलू है जनजातीय, मुस्लिम और प्रवासी समुदायों की स्थिति। इन समुदायों के भीतर टीकाकरण दर बेहद कम है, और इनमें अविश्वास, सांस्कृतिक आशंकाएं, और सरकार के प्रति संदेह गहरे हैं। विशेष रूप से मुस्लिम बहुल इलाकों में धार्मिक भ्रांतियां और अफवाहें टीकाकरण को 'हराम' या शरीर पर साजिश मानने तक की धारणा बना देती हैं। कोविड-19 के दौरान फैली झूठी सूचनाएं भी इस अविश्वास को और पुख्ता कर गईं। लोगों ने देखा कि टीकाकरण शिविरों में कोई स्पष्ट संवाद नहीं है, केवल सरकारी दबाव है। इससे उनके बीच डर और बढ़ गया।

शहरी झुग्गियों और दूरस्थ क्षेत्रों की बात करें तो वहां स्वास्थ्य सेवाओं का हाल और भी दयनीय है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों जैसे नागालैंड, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में दुर्गम भूगोल, सीमित स्वास्थ्यकर्मी और आधारभूत ढांचे की कमी, टीकाकरण कार्यक्रम की सफलता में सबसे बड़ी रुकावट हैं। इन इलाकों में न तो वैक्सीन समय पर पहुंचती है, न ही प्रशिक्षित कर्मी, और न ही माताओं को जानकारी देने वाली फ्रंटलाइन वर्कर।

अब बात करें शासन और कार्यक्रम संबंधी विफलताओं की। मिशन इंद्रधनुष एक महत्वाकांक्षी योजना थी, जिसका उद्देश्य 90% पूर्ण टीकाकरण कवरेज पाना था। लेकिन राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (2019–21) के अनुसार यह आंकड़ा केवल 76% तक ही पहुंच सका। कई जिलों में तो यह और भी कम है। इसके पीछे कारण हैं – प्रशासनिक उदासीनता, स्वास्थ्य कर्मचारियों की कमी, और ज़मीनी स्तर पर अनुश्रवण की असफलता। शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य जिम्मेदारियों का बंटवारा राज्य सरकार, नगर निगम और अन्य संस्थानों के बीच इतना उलझा हुआ है कि जवाबदेही कहीं दिखती ही नहीं। एक झुग्गी बस्ती में टीकाकरण की जिम्मेदारी कौन लेगा, इसका कोई स्पष्ट निर्धारण नहीं है।

> शहरी झुग्गियों और दूरस्थ क्षेत्रों की बात करें तो वहां स्वास्थ्य सेवाओं का हाल और भी दयनीय है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों जैसे नागालैंड, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में दुर्गम भूगोल, सीमित स्वास्थ्यकर्मी और आधारभूत ढांचे की कमी, टीकाकरण कार्यक्रम की सफलता में सबसे बड़ी रुकावट हैं। इन इलाकों में न तो वैक्सीन समय पर पहुंचती है, न ही प्रशिक्षित कर्मी, और न ही माताओं को जानकारी देने वाली फ्रंटलाइन वर्कर।

साथ ही, निगरानी तंत्र की कमी भी एक बड़ी समस्या है। हमारे पास इलेक्ट्रॉनिक वैक्सीन इंटेलिजेंस नेटवर्क (eVIN) जैसी प्रणाली जरूर है, जो वैक्सीन की लॉजिस्टिक ट्रैकिंग करती है, लेकिन यह प्रणाली बच्चे के स्तर तक अनुगमन सुनिश्चित नहीं करती। इससे पता नहीं चल पाता कि किस बच्चे ने कौन सा टीका लिया और कौन छूट गया। कोविड-19 महामारी ने इस पूरे तंत्र को हिला कर रख दिया। जब सारे संसाधन कोविड टीकाकरण में झोंक दिए गए, तब नियमित टीकाकरण जैसे कार्यक्रम पृष्ठभूमि में चले गए, जिससे लाखों बच्चों का टीकाकरण रुक गया।

इन समस्याओं का समाधान केवल घोषणाओं या तकनीकी सुधारों से नहीं हो सकता। इसके लिए नीतिगत बदलावों की आवश्यकता है जो सामाजिक न्याय के मूल्यों पर आधारित हों। सबसे पहले, टीकाकरण योजनाओं को समुदाय-विशेष और क्षेत्र-विशेष रणनीति के तहत चलाना होगा। मिशन इंद्रधनुष 5.0 के तहत उच्च बोझ वाले जिलों में सूक्ष्म नियोजन और सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार (SBCC) को प्रमुखता देनी होगी। सिर्फ वैक्सीन पहुंचा देना काफी नहीं है, लोगों में विश्वास और भागीदारी पैदा करनी होगी।

इसके लिए हमारी जमीनी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं — जैसे आशा, एएनएम और आंगनवाड़ी वर्कर — को सशक्त बनाना होगा। उन्हें न केवल प्रशिक्षण और मोबिलिटी की सुविधा दी जाए, बल्कि सम्मानजनक प्रोत्साहन भी दिया जाए। स्वास्थ्यकर्मी जब अपने क्षेत्र में भरोसे से काम करेंगे, तभी परिवार उन पर विश्वास करेगा। इसके साथ-साथ, राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन को मजबूती से लागू करना होगा, ताकि झुग्गियों में रहने वाले लाखों बच्चों को भी नियमित टीकाकरण की सुविधा मिले।

तकनीक का प्रयोग तभी सार्थक है जब वह जनहित में हो और अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। आधार से जुड़े टीकाकरण रिकॉर्ड, मोबाइल आधारित टीकाकरण वैन, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित डैशबोर्ड इन सबको लागू करना होगा ताकि हर बच्चे का डिजिटल रिकॉर्ड हो और छूटे हुए बच्चों की पहचान तुरंत हो सके। लेकिन तकनीक के साथ मानवीय स्पर्श जरूरी है। टीकाकरण केवल एक इंजेक्शन नहीं, विश्वास का रिश्ता है — यह समझना होगा।

सामुदायिक सहभागिता का महत्व आज और अधिक बढ़ गया है। स्वयं सहायता समूह, धार्मिक नेताओं, शिक्षक-गुरुजनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को अभियान में जोड़ना होगा ताकि यह संदेश हर घर तक पहुंचे कि टीकाकरण बच्चों का अधिकार है, कोई अनावश्यक खतरा नहीं।

बांग्लादेश जैसे देश ने यह सिद्ध किया है कि घर-घर जाकर टीकाकरण किया जाए तो पहुंच और स्वीकार्यता दोनों बढ़ती हैं। रवांडा जैसे अफ्रीकी देश में मोबाइल हेल्थ क्लिनिक ने दुर्गम क्षेत्रों में चमत्कारी परिणाम दिए हैं। भारत को इन्हीं से प्रेरणा लेकर अपना मॉडल बनाना होगा।

सरकार को केवल लक्ष्यपूर्ति पर ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि उसे यह देखना होगा कि कौन छूट रहा है, और क्यों। सामाजिक रूप से बहिष्कृत वर्गों को केंद्र में रखकर नीतियां बनानी होंगी। वरना हम हर साल नई योजनाएं लाते रहेंगे, आंकड़ों में बढ़ोतरी दिखाते रहेंगे, और देश के लाखों बच्चों का बचपन बिना सुरक्षा के, जोखिम में पला करता रहेगा।

भारत का सार्वभौमिक टीकाकरण लक्ष्य तभी साकार होगा जब नीति, नीयत और निष्पादन तीनों स्तरों पर ईमानदारी हो। किसी भी समाज की प्रगति का सबसे बड़ा पैमाना उसका स्वास्थ्य स्तर होता है, और उसमें भी बच्चों का स्वास्थ्य सर्वोपरि है। यदि हम यह सुनिश्चित नहीं कर पा रहे हैं कि हर बच्चे को उसका पहला टीका समय पर मिले, तो हमें खुद से यह पूछना चाहिए — क्या हम सचमुच एक समान और समावेशी राष्ट्र बना रहे हैं?

सार रूप में, भारत को ज़ीरो डोज़ बच्चों की समस्या को केवल स्वास्थ्य मंत्रालय की चिंता मानकर नहीं छोड़ना चाहिए। यह एक राष्ट्रीय चुनौती है, जिसमें सभी विभागों, समुदायों और नागरिकों की भूमिका है। यह न केवल बच्चों के स्वास्थ्य का मामला है, बल्कि देश की भावी पीढ़ी के भविष्य का प्रश्न भी है। यदि हम सब मिलकर टीकाकरण को केवल सरकारी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सामाजिक आंदोलन बना सकें — तो शायद आने वाले वर्षों में 'ज़ीरो डोज़' की जगह 'ज़ीरो वंचना' का सपना साकार हो सकेगा। यही सपना एक सच्चे लोकतंत्र और सामाजिक न्याय की बुनियाद है।

डॉ. सत्यवान सौरभ, स्वतंत्र लेखक व स्तंभकार

(यह लेख भारत में टीकाकरण नीति पर केंद्रित सामाजिक और शासनगत विफलताओं की आलोचना करता है तथा सुधार की संभावनाओं को रेखांकित करता है।)

(साहित्य का मंच या शिकार की मंडी?) नई लेखिका आई है — और मंडी के गिद्ध जाग उठे हैं

नई लेखिकाओं के उभार के साथ-साथ जिस तरह साहित्यिक मंडियों में उनकी रचनात्मकता की बजाय उनकी देह, उम्र और मुस्कान का सौदा होता है — यह एक गहरी और शर्मनाक सच्चाई है। मंच, आलोचना, भूमिका, सम्मान – सब कुछ एक जाल बन जाता है। यह संपादकीय स्त्री लेखन के नाम पर चल रही पाखंडी व्यवस्था को आईना दिखाता है, जहाँ लेखिका की कलम से ज़्यादा उसकी 'उपस्थिति' बिकती है। अब समय आ गया है कि साहित्य की दुनिया इस अंदरूनी शोषण को पहचाने और बदलने का साहस करे।

प्रियंका सौरभ

नई लेखिका जैसे ही साहित्य के आंगन में प्रवेश करती है, एक उत्सव-सा माहौल बनता है। वह कलम लेकर आई है — शब्दों को जीवन देने, अनुभवों को साझा करने और संवेदनाओं को स्वर देने के लिए। पर क्या केवल शब्दों की शक्ति ही काफी है इस जगत में टिके रहने के लिए?

नहीं। इस मंडी में उसकी लेखनी से पहले उसका चेहरा देखा जाता है। किताब से पहले उसकी उम्र पूछी जाती है। विचारों से पहले उसकी वाणी और मुस्कान पर चर्चा होती है। और दुर्भाग्यवश, यही वह बिंदु है जहाँ साहित्यिक क्षेत्र का स्याह सच उभरता है।

आज भी देश के तमाम साहित्यिक मंचों, गोष्ठियों और पत्रिकाओं में एक नारी लेखिका को 'रचनाकार' कम और 'सौंदर्य' अधिक समझा जाता है। वरिष्ठों की प्रशंसा के शब्दों में सराहना से अधिक 'संकेत' होते हैं। मंच पर बुलावा केवल कविता पाठ के लिए नहीं होता, बल्कि उस 'नवयौवना' ऊर्जा को भुनाने की एक शातिर कोशिश होती है।

"आप बहुत अच्छा लिखती हैं" कहने वाले बहुत होते हैं। लेकिन उनमें से कई की नज़रों में लफ्ज़ नहीं, लार होती है। गोष्ठी के बाद की पार्टियों में कविता का नहीं, शरीर का मूल्यांकन होता है। और जो लेखिका इन सबके लिए 'ना' कहती है, उसे 'घमंडी', 'असहयोगी', और 'बदतमीज़' कहा जाता है।

साहित्य की यह मंडी उस बौद्धिक आज़ादी की कब्रगाह बन चुकी है, जिसका स्वप्न लेकर कई स्त्रियाँ अपनी कलम उठाती हैं। नई लेखिका को मंच नहीं, मौन मिलते हैं। समर्थन नहीं, संशय मिलते हैं। उसके हर शब्द के पीछे मंशा तलाशने की कोशिश होती है — "किसके लिए लिखा?", "किसके कहने पर?", "किस इरादे से?"

यह वही समाज है जो एक ओर 'मी टू' आंदोलनों पर अख़बारों में कॉलम लिखता है, और दूसरी ओर साहित्यिक सम्मेलनों में युवा लेखिकाओं को एकांत में बुलाकर "व्यक्तिगत मार्गदर्शन" देने को तैयार हो जाता है।

इस मानसिकता ने न केवल नई प्रतिभाओं को कुचला है, बल्कि साहित्य के प्रति महिलाओं के विश्वास को भी तोड़ा है। लेखन की दुनिया को जिनका घर बनना था, वहां दरवाज़े बंद मिलते हैं — अगर वे 'समझौता' नहीं करतीं।

इतिहास गवाह है — अमृता प्रीतम, महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, मृणाल पांडे, वंदना राग जैसी लेखिकाओं ने न केवल कलम चलाई, बल्कि उस पितृसत्ता के खिलाफ भी लिखीं जो साहित्य की गली में भी घर बनाए बैठी थी। उन्होंने यह रास्ता संघर्षों से सींचा, और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक चेतना छोड़ी।

लेकिन फिर भी सवाल खड़ा होता है — क्यों आज भी नई लेखिका को अपनी गरिमा की रक्षा के लिए चुप रहना पड़ता है या लड़ना पड़ता है? क्यों अब भी वरिष्ठ पुरुष लेखकों के लिए 'नारी-लेखन' एक 'आसान निशाना' बना हुआ है?

कई बार तो लेखिका की लेखनी को ही पुरुष संरचना में ढालने की कोशिश की जाती है। "थोड़ा कम उग्र लिखो, ज्यादा संवेदनशील बनो, रोमांटिक कविताएं ज्यादा सराही जाती हैं" — ये सब नए नामों को सिखाने वाले 'गुरुजन' के परामर्श होते हैं। लेकिन सच तो ये है कि यह 'अनुरूपता' नहीं, बल्कि 'अनुनय' की मांग होती है।

एक अन्य पक्ष यह भी है कि जब कोई लेखिका सफल हो जाती है — तो उसकी सफलता का श्रेय उसके किसी 'पुरुष मार्गदर्शक' को दे दिया जाता है। जैसे उसकी प्रतिभा खुद उसकी नहीं थी, बल्कि किसी के 'संपर्क' और 'संरक्षण' से मिली हुई थी।

और जब वह इन चीज़ों से इनकार करती है — तो उसकी कविताओं की समीक्षा नहीं होती, बल्कि उसके चरित्र की। यही दोहरा मापदंड इस मंडी की रीढ़ बन गया है।

अब ज़रूरत है — इस व्यवस्था को सवालों के कटघरे में खड़ा करने की।

अब ज़रूरत है — कि हर नई लेखिका अपनी कविता में यह लिखे कि ₹मैं कोई गुलाब नहीं, जो सिर्फ़ सजने के लिए खिला हूँ — मैं वो काँटा हूँ जो तुम्हारे इरादों को चीर देगा।"

लेखिकाओं को एक-दूसरे की आवाज़ बनना होगा। उन्हें मंच साझा करने से अधिक, स्पेस साझा करना होगा — जहां वे एक-दूसरे को सुनें, समर्थन दें, और किसी को भी अकेले न छोड़ें।

प्रकाशक, संपादक, आयोजक — अब तुम्हारे लिए भी चेतावनी है। अगर तुम अपनी नीतियों को साफ़ नहीं करोगे, तो ये कलमें तुम्हारे नाम को स्याही से नहीं, आग से लिखेंगी।

यह मंडी, जो कभी विचारों की थी, आज बाजार बन गई है — जहां 'स्त्री उपस्थिति' बिकती है, 'लेखनी' नहीं।

पर यह बाज़ार भी एक दिन ढहेगा — जब हर लेखिका अपने भीतर के डर को मिटाकर मंच पर सिर्फ़ कविता नहीं, हक़ मांगेगी।

> "मेरे शब्द मेरे होंठों से नहीं, मेरी आत्मा से निकले हैं — और तुमने मेरी आत्मा को रौंदा है, तो अब यह कलम चुप नहीं बैठेगी।"

देश और सीए दोनों को चाहिए करोड़ों प्रशिक्षित अकाउंटेंट

पंकज जायसवाल

जुलाई का पहला दिन 'सीए डे' के रूप में मनाया जाता है. इस अवसर पर मैं एक ऐसे विषय पर विमर्श करना चाहता हूं जिसकी आवश्यकता भारत को एकविकसित राष्ट्र बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है.

आज भले ही मैं मुंबई में हूं लेकिन मेरी जड़ें आज भी मेरे गांव और कस्बे से जुड़ी हैं. मैंने वहां की आर्थिक व्यवस्था को करीब से देखा और समझा है.

सनातन अर्थशास्त्र पर मेरे अध्ययन और एक सीए होने के नाते और अपने कार्य के सिलसिले में लगभग पूरे भारत का भ्रमण करने का अवसर मिला है. इस पूरे सफर में मैंने एक महत्वपूर्ण और
गम्भीर बात नोट की कि भारत में एक बहुत बड़ी आबादी व्यापार करती है लेकिन वह उचित
अकाउंटिंग नहीं करती, या बोलें तो लगभग नहीं ही करती है क्यूंकि जो करती है वह कतबैठी हिसाब होता है एकाउंटिंग नहीं.

अगर विशेषकर MSME की बात करें, तो मेरा अनुभव कहता है कि करीब 95% MSMEs प्रोपर एकाउंटिंग नहीं करते हैं. वे अधिकांशत: डायरी या रजिस्टर में ही हिसाब रखते हैं. व्यापार का जो हेल्थ कार्ड होता है उसका आर्थिक चिट्ठा वह इनके पास होता ही नहीं क्योंकि न तो टैली होता है, न बैलेंस शीट, न किसी अकाउंटेंट की सलाह. भारत के व्यापार का बड़ा हिस्सा आज भी 'डायरी एकाउंटिंग' के भरोसे चल रहा है.

इसका परिणाम यह होता है कि व्यापारी को यह तक पता नहीं चलता कि उसका व्यापार डाउनट्रेंड में जा रहा है. यह केवल अनुमान नहीं है, इसके पीछे मेरे प्रत्यक्ष अनुभव हैं: आज मैं आपसे अपने तीन अनुभव साझा कर रहा हूं. पहला अनुभव, एक बार एक बड़े व्यापारी से मुलाकात हुई, जिनके यहां इनकम टैक्स की रेड पड़ी थी और उन पर करोड़ों की डिमांड खड़ी कर दी गई थी. जांच करने पर पता चला कि यह डिमांड किसी नकदी जब्ती, ब्लैक मनी या बेनामी संपत्ति के कारण नहीं थी. व्यापारी तो बड़ा था लेकिन उसका सारा
हिसाब डायरी में था. अकाउंटिंग होती नहीं थी तो अकाउंटेंट भी नहीं था. आयकर विभाग ने डायरी की नोटिंग को ही आधिकारिक रिकॉर्ड मानकर पूरी इनकम मान ली और नगद सौदों पर पेनाल्टी जोड़ दी. करोड़ों की डिमांड बन गई.

दूसरा अनुभव, एक बार यात्रा के दौरान एक व्यक्ति मिले जिनकी ट्रेडिंग की
दुकानें थीं, पूरे पांच. उन्होंने कहा, "सीए साहब, समझ नहीं आता कि बिजनेस में घाटा क्यों चल रहा है, बैंक में और हाथ में दोनों जगह पैसे टिक नहीं रहे." मैंने बैलेंस शीट मांगी, बोले "वह तो नहीं बनी है." टैली के बारे में पूछा तो बोले "नहीं है." अकाउंटेंट? "नहीं है." हिसाब-किताब कैसे देखते हो? "डायरी में देख लेते हैं और बैंक बैलेंस चेक करते रहते हैं." जीएसटी कैसे भरते हो? "वकील साहब को GST सहित खरीद वाला बिलवा भेज देते हैं." मेरा सिर चकरा गया. कुछ वर्षों बाद उनका बिजनेस इतना गिर गया कि पाँच दुकानें घटकर दो रह गईं.

तीसरा अनुभव, एक छोटे शहर के उद्योगपति ने प्लांट शुरू किया. लेकिन अकाउंटेंट की सैलरी बचाते रहे. आज हालत यह है कि उनके बिजनेस में करोड़ों का घाटा है, बैंक का एनपीए खाता है. सीए को फुल टाइम रखने के लिए बिजनेस का आकार नहीं है. साल के अंत में जब वह सीए के पास ऑडिट के लिए पहुँचते हैं तो उस सीए के पास भी उनके सहायता कर पाने के लिए ज्यादा स्कोप नहीं बचा होता है, मर्ज या तो बहुत बढ़ चुका होता है या लाइलाज और उन्हें अभी तक नहीं मालूम कि ये सब अकाउंटिंग न करने के कारण हुआ

उपरोक्त तीन उदाहरण से तो समझ में आ गया होगा. किसी भी मर्ज का इलाज तभी सटीक हो पाता है जब डॉ को सारी हेल्थ रिपोर्ट मिलती रहे. एकाउंटिंग करने से कम से कम यह तो तय हो जाता है कि व्यापार का लाभ-हानि स्पष्ट हो, आर्थिक चिट्ठा मिल जाता है, जो उसका हेल्थ कार्ड होता है, डाउनट्रेंड समय रहते पकड़ में आ जाता है, बैंक लोन लेने में सुविधा होती है, क्रेडिट स्कोर बेहतर रहता है, स्टॉक, लेनदारी-देयता, टैक्स और पेनाल्टी पर नियंत्रण बना रहता है, व्यापार का विस्तार कर सकते हैं.

दरअसल भारत की मूल जरुरत करोड़ों अकाउंटेंट की है, ये रहे तो लाखों सीए से भी काम चल जायेगा. देश में सीए तो सीमित संख्या में हैं लेकिन कम से कम 2 से 3 करोड़ अकाउंटेंट की भारी कमी है, जो इस बड़ी खाई को भर सकते हैं. इसका सबसे बड़ा लाभ सीए को ही होगा क्योंकि तब व्यापारी और सीए के बीच एक प्रशिक्षित व्यक्ति होगा, जो लेखांकन और अनुपालन की समझ रखता होगा.

जिस तरह मेडिकल प्रोफेशन बिना कम्पाउंडर और नर्स के नहीं चलता, वैसे ही व्यापारिक प्रणाली और सीए का काम बिना प्रशिक्षित अकाउंटेंट के नहीं चल
सकता. व्यापार बिना सीए के चल सकता है लेकिन बिना अकाउंटेंट के नहीं.

अब सवाल है कि समाधान क्या हो सकता है? तो समाधान है. एकाउंटिंग में डिप्लोमा और डिग्री के लिए नेशनल फ्रेमवर्क और नीति तैयार करे जैसे फार्मेसी और नर्सिंग का बना हुआ है. B.Com पाठ्यक्रम में बदलाव अंतिम वर्ष में अनिवार्य प्रैक्टिकल ट्रेनिंग, सॉफ्टवेयर स्किल्स (जैसे टैली, ज़ोहो, क्विकबुक्स), टैक्सेशन, और क्लाउड अकाउंटिंग शामिल हों. इंटर्नशिप आधारित लर्निंग इकोसिस्टम जिससे छात्र पढ़ाई के साथ-साथ अनुभव भी प्राप्त करें और रोजगार-योग्य बनें.

सरकार चाहें तो केवल बीकॉम के इस इंफ्रास्ट्रक्चर से करोड़ों रोजगार पैदा कर सकती है. मुंबई जैसे शहरों में मैंने देखा है कि जो बीकॉम छात्र साथ में प्रैक्टिकल ट्रेनिंग ले लेते हैं, वे कभी बेरोजगार नहीं रहते. कई ऐसे उदाहरण हैं जहां सिर्फ बीकॉम करने वाले छात्र आज चीफ अकाउंटेंट बनकर लाखों का पैकेज कमा रहे हैं.

इन करोड़ों अकाउंटेंट्स के आने से सरकार को सटीक और पारदर्शी और कहीं ज्यादा बढ़ा हुआ राजस्व संग्रह होगा, व्यापारियों को रियल टाइम सलाह मिलेगी, कारोबार में लाभ और विस्तार संभव होगा, पैरलल इकोनॉमी का मैपिंग और औपचारिकीकरण होगा, देश को केवल तीसरी नहीं, दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में ठोस कदम होगा और बिना कोई बड़ा खर्चा किये करोड़ों को रोजगार मिलेगा.

सीए डे पर एक सीए होने के नाते, मैं देश में एक 'सहायक और पूरक' अकाउंटिंग प्रणाली की भारी कमी को महसूस करता हूं. मेरी अपील है कि सरकार इस पर गंभीर दृष्टि डाले क्योंकि यही अकाउंटिंग व्यवस्था भारत के व्यापार और अर्थव्यवस्था का आधार बन सकती है. सरकार की सिर्फ एक नीति "प्रशिक्षित अकाउंटेंट्स का इकोसिस्टम" देश का रोजगार, राजस्व और नियमन तीनों बदल सकती है. देश में जितनी ज़रूरत सीए की है, उससे कई गुना ज़्यादा ज़रूरत अकाउंटेंट्स की है।

बीएमसी कार्यालय में आतंक: अतिरिक्त आयुक्त की पिटाई

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: वे दफ़्तर में घुसे। उन्होंने उसका कॉलर पकड़ा और कुर्सी से घसीटा। उन्होंने उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया। उन्होंने उसे चप्पलों से पीटा। उन्होंने उसके चेहरे, छाती और पेट पर बहुत ही अमानवीय तरीके से मारा। बीएमसी दफ़्तर के अंदर बीएमसी के अतिरिक्त आयुक्त रत्नाकर साहू की इस तरह की पिटाई और दुर्व्यवहार ने आज ओडिशा में काफ़ी विवाद खड़ा कर दिया है।इस घटना को लेकर बीजद पार्षदों और वरिष्ठ नेताओं ने असली अपराधी की गिरफ्तारी की मांग को लेकर बीएमसी कार्यालय के सामने करीब 2 घंटे तक मार्च निकाला। वहीं, खारवेलनगर थाने में दर्ज मामले के आधार पर वार्ड क्रमांक 29 के भाजपा पार्षद जीवन राउत, रश्मि महापात्रा और देबाशीष प्रधान को गिरफ्तार किया गया है। अतिरिक्त आयुक्त रत्नाकर साहू के अनुसार, आयुक्त की अनुपस्थिति में वे शिकायत सुन रहे थे। सुबह करीब 11:30 बजे पार्षद जीवन राउत और 5 से 6 लोग शिकायत कक्ष में घुसे। उन्होंने पूछा कि जगा भाई के साथ दुर्व्यवहार क्यों किया गया। उसी समय उन्होंने अचानक उन पर जानलेवा हमला कर दिया। उन्होंने उन्हें कुर्सी से घसीटा, नीचे गिराया और पीटा। उन्होंने बीएमसी कर्मचारियों और आम जनता के सामने उन्हें अपने वाहन में ले जाने की कोशिश की। कुछ पार्षदों ने उन्हें मौके पर रोकने की कोशिश की, लेकिन वे असफल रहे। बीएमसी मेयर सुलोचना दास ने हमलावरों को रोकने की कोशिश की। तभी हमलावरों ने कहा, तुमने जगन्नाथ प्रधान से क्यों पूछा कि वह कौन है, कुछ नहीं सुना जाएगा, सिर्फ मारपीट की जाएगी। मारपीट के बाद हमलावर मौके से भाग गए।बिजेडी अध्यक्ष और विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने घटना की निंदा की है और मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप की मांग की है। श्री पटनायक ने कहा कि यह चौंकाने वाली बात है कि अतिरिक्त सचिव स्तर के एक वरिष्ठ ओएएस अधिकारी को उनके कार्यालय में पीटा गया और पीटा गया। एक पराजित भाजपा विधायक उम्मीदवार के उकसावे पर, एक भाजपा पार्षद और उसके गुर्गों ने इस तरह का अपराध किया है। राजधानी में लोगों की शिकायतें सुनने के लिए जिम्मेदार एक अधिकारी की दिनदहाड़े पिटाई की घटना चिंताजनक है। राज्य में कानून-व्यवस्था बिगड़ गई है। राजधानी में सरकारी अधिकारी असुरक्षित महसूस कर रहे हैं।एएनसी ने 'एक्स' के माध्यम से कहा है कि भुवनेश्वर में मेट्रोपोलिटन कॉरपोरेशन के एडिशनल कमिश्नर को भाजपा नेता अपरूप राउत और उसके गुंडे साथियों द्वारा पीटने का वीडियो वायरल हो रहा है। उनका अपहरण करने की भी कोशिश की गई। किसी तरह एडिशनल कमिश्नर ने अपनी जान बचाई। यह भाजपा का जंगलराज है। जहां अपराधी खुलेआम गुंडागर्दी कर रहे हैं। भुवनेश्वर की सांसद अपराजिता सारंगी ने कहा, न तो भाजपा और न ही सरकार किसी भी तरह से इस तरह की हरकतों और विचारधारा से जुड़ी है। न ही इसे प्रोत्साहित करती है। कार्यरत अधिकारी पर हमला करना बेहद निंदनीय और घृणित कृत्य है। इसमें शामिल अपराधियों के खिलाफ आवश्यक कानूनी और पार्टी कार्रवाई जरूरी है।भाजपा नेता जगन्नाथ प्रधान ने मीडिया से कहा, यह घटना निंदनीय है। मैं उनमें से एक-दो को जानता हूं। मैंने उन्हें फोन किया है और घटना के बारे में बात की है। भाजपा हमारा परिवार है। इस तरह की सरकार, हमारे परिवार की सरकार चल रही है। मैंने घटना के बारे में पुलिस से बात की है। कार्रवाई की जाएगी। जब उनसे पूछा गया कि ऐसी घटना किस वजह से हुई, तो उन्होंने कहा कि खा भुंज गिली के सिलसिले में ऐसा हुआ। भविष्य में क्या होगा, यह कहना संभव नहीं है। कुछ भी गारंटी नहीं दी जा सकती। हर चीज का जवाब नहीं दिया जा सकता। बीजद का इतिहास सभी जानते हैं, उन्होंने कहा, अब वे एक नया तमाशा बना रहे हैं। भुवनेश्वर के विधायक अनंत नारायण जेना ने कहा कि भाजपा सरकार ने ब्रिटिश शासन को पीछे छोड़ दिया है।

रथ यात्रा के बाद मोहन सरकार का मंत्रिमंडल विस्तार

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : रथ यात्रा के बाद मोहन मंत्रिमंडल का विस्तार होगा। मुख्यमंत्री विवादित मंत्रियों के विभागों में फेरबदल करेंगे और खाली पड़े छह मंत्री पदों को भरेंगे। इसे लेकर सत्ताधारी दल में चर्चा शुरू हो गई है। मंत्रिमंडल विस्तार में मोहन की टीम में कौन शामिल होगा और कौन बाहर रहेगा, इसे लेकर पवार गलियारे में माथापच्ची शुरू हो गई है।भाजपा के मंत्रियों और विधायकों ने कहा है कि मुख्यमंत्री सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद मंत्रिमंडल का विस्तार करेंगे। इससे भाजपा के अंदरूनी हलकों में काफी उत्साह है। एक साल बाद मुख्यमंत्री मोहन माझी मंत्रिमंडल का विस्तार करेंगे। मोहन के मंत्रिमंडल में 15 मंत्री शामिल किए गए हैं। अधूरे मंत्रिमंडल के कारण भाजपा सरकार एक साल से दबाव में है। भाजपा सरकार अपने कुछ मंत्रियों के कामकाज को लेकर बदनाम हो रही है। अपने विभागों की जिम्मेदारियों का ठीक से निर्वहन न कर पाने को लेकर सरकार के खिलाफ विवाद खड़ा हो गया है। विपक्ष इन सभी मुद्दों को मुख्य मुद्दा बनाकर सरकार पर निशाना साध रहा है और सीधे तौर पर मुख्यमंत्री पर निशाना साध रहा है। इससे तीसरा तल चिंता में है। चल रही रथ यात्रा में भारी व्यवधान से राज्य में हड़कंप की स्थिति है। आरोप है कि रथ यात्रा के प्रभारी मंत्रियों द्वारा अपनी जिम्मेदारियों का ठीक से निर्वहन न करने के कारण ऐसी घटना घटी है। इसलिए रथ यात्रा के बाद मोहन के अधूरे मंत्रिमंडल को पूरा किया जाएगा और विवादित मंत्री को दूसरे विभाग में स्थानांतरित किया जाएगा। मंत्रिमंडल विस्तार पर भाजपा विधायकों और मंत्रियों ने मौन बयान दिया है। मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर सत्ता पक्ष में सुगबुगाहट शुरू होने के बाद भाजपा के अंदरूनी खेमे में इस बात को लेकर चर्चा जोरों पर है कि मुख्यमंत्री अपनी टीम में किसे रखेंगे और किसे हटाएंगे। डायरिया, रथयात्रा में व्यवधान, आलू संकट और महिला उत्पीड़न के मुद्दे पर विपक्ष ने सरकार की कड़ी आलोचना की है। चूंकि कई मंत्रियों के पास कई विभाग हैं, इसलिए उनसे कुछ विभाग हटाए जाएंगे। चूंकि 17 जिले खाली हैं, इसलिए मोहन इन जिलों के प्रतिभाशाली विधायकों को अपनी टीम में शामिल करने की चर्चा है। चर्चा में चल रहे कई युवा विधायकों को विस्तार में मौका मिल सकता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023